सुचिता

सुचिता

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

SUCHITA (सुचिता)
A Maithili Novel by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88811-56-9
दाम: 250/- (भा.रु.)

तेसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2020)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती अपूर्वा सरकार, नोएडा, दिल्ली एनसीआर, 201301
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण भाव

अपना-ले सभ जीबै-मरै छी
अपने-ले जीबैक लूरि सीखू
अपने-आन आनमे अपने
सम समदाउन गाएब सीखू।
अपना-ले सभ...।

सम-समदाउनिक गति सीखिते
दिन, दिन-चरिया बनाएब सीखू।
दिने चरिया चरिये दिनक
दिन-चरिया चलाएब सीखू।
दिन-चरिया...।

सभ चाहैए आगू दौड़ी
दौड़-दौड़ीक रूप बनाएब सीखू।
दौड़ा-दौड़ी करैत-करैत
कुदि समुद्रक टपान सीखू।
कुदि समुद्रक टपान...।

अनुक्रमः

पहिल पड़ाव

दस बजे राधारमण गामसँ भुवनेश्वरक लेल विदा हेता। चारि बजे भोरे राधारमण पत्नीकेँ उठा माएकेँ उठबैत बजला-

“माए, दस बजे घरसँ विदा भऽ जाएब।”

ओछाइनपर सँ उठैत सुनयना बजली-

“पान-छअ घन्टा अखन समय अछि, तैबीच हमहूँ सभ ओरियान कऽ दइ छिअ। पुतोहुजनीकेँ सेहो उठा दहुन जे अपन सभ वस्तु-जातकेँ सेरियौती। हम भानस सम्हारि लइ छी।”

माइयो आ पत्नियोकेँ उठबैत राधारमण नित्यकर्ममे जुटि गेला। मनमे अनेको रंगक विचार उठए लगलैन मुदा तइ सभ विचारकेँ मनेमे समेटि अपन जेबाक तैयारीकेँ क्रमश: शुरू केलैन।

चारि मास पूर्व राधारमणक रिजल्ट निकलला पछाइत–माने आई.ए.एस.क रिजल्टसँ–गाममे अनेको रंगक विचार दोरस-तेरस हवा जकाँ बहए लगल। किछु गोरेक मनमे बेहद खुशी भेलैन जे अपनो गाममे, माने कमलपुरोमे, एकटा आई.ए.एस. भेला..! किछु गोरेक मनमे जलन सेहो भेलैन आ अधिकांश लोक ओहन छैथ जे आई.ए.एस.क महत्व बुझिते ने छैथ।

अखन तक कमलपुर गाममे, जे हजार परिवारक वस्ती अछि, मात्र एकटा अर्थशास्त्रक प्रोफेसर, तीनटा हाइस्कूलक शिक्षक, एकटा एम.बी.बी.एस. डॉक्टर आ एकटा हाइ कोर्टक वकील मात्र भेला हेन। माने अधिक पढ़ल-लिखल लोकमे मात्र छबे गोटे गाममे भेला अछि। लोअर प्राइमरी स्कूलसँ लऽ मिड्ल स्कूल तक पनरह-बीस गोरे शिक्षक छैथ आ ब्लॉकसँ लऽ कऽ सचिवालय तक सेहो दस-बारह गोरे किरानीक नोकरी करिते छैथ। ओना, गामक आधासँ बेसी नोकरिहारा परिवार अछि मुदा ओ

सभ, सभरंगक नोकरी करै छैथ। माने कल-कारखानासँ लऽ कऽ बेवसायी ऐठाम धरि। गामक खेतियो-पथारी नीक अछि, किए तँ गाममे एकोटा धार-धूर नइ अछि जइसँ दाही हएत आ ने उस्सर-खासर आकि बलुआह माटि अछि जे उपजबे ने करत। रौदीक प्रकोप जरूर होइए किए तँ डेढ़ हजार बीघाक गाममे मात्र पाँचटा वोरिंग अछि। तहूमे दूटा नहियेँ जकाँ चलैए, मात्र तीनटा सँ पटौनीक काज होइए।

पत्नी आ माएकेँ उठा राधारमण अपन जेबाक तैयारीमे जुटि गेला मुदा ने पिता–विलासदेव–केँ उठौलैन आ ने हुनकर नीने टुटलैन। माने विलासदेव सुतले रहला। पिताक प्रति राधारमणक मन छेलैन जे अपना समयपर उठबे करता, हम तँ दस बजेमे घरसँ निकलब। जेबाकाल प्रणाम कऽ आसीरवाद लऽ लेब। ओना, दुनू बापूतक बीच–माने राधारमण आ विलासदेवक बीच–ऊपरे-ऊपर तँ पिता-पुत्रक सम्बन्ध छेलैन्हे मुदा भीतरे-भीतर जे सम्बन्ध पिता-पुत्रक बीच हेबा चाही से नहि छेलैन। तेकर अनेको कारण अछि। अनेको कारणमे प्रमुख अछि जे तीन भाँइक भैयारीमे जेठ राधारमण तँ आई.ए.एस. कऽ लेलैन मुदा छोट दुनू भाँइ– सुखदेव आ वामदेव–मैट्रिको पास नहि कऽ सकल। जइसँ तीनू भाँइक बीच शिक्षाक दूरी बनि गेल। ई विचार विलासदेवोक मनकेँ कचोटिये रहल छैन। दोसर कारण माने पिता-पुत्रक बीचक दूरीक, ईहो छैन जे वैचारिक रूपसँ पाँच-छह बर्खसँ दुनूक बीच गपो-सप्प आ कोनो काज-उदममे पुछो-आछ नहियेँ जकाँ छैन। तेसर जे दुनूक बीच दूरीक प्रमुख कारण छैन राधारमणकेँ अपना विचारसँ विवाह करब। राधारमणकेँ अपना मनसँ विवाह करैक पाछू पिताक जे मतान्तर छेलैन ओ दहेज लऽ कऽ छेलैन। मैट्रिक पास केलाक पछातिये राधारमणक मनमे किछु एहेन मानवीय विचारक उदय भऽ गेल छल जे विलासदेवक विचारसँ ठीक विपरीत अछि।

कौलेजक पढ़ाइक क्रममे राधारमण अपन मुँहकेँ चुप रखने छला, किए तँ ने अखन पढ़ाइ छोड़ि आगूक किछु करैक अछि माने पारिवारिक विचार आ ने अपना निमित्ते कोनो काजे रहैन। राधारमण सोचि विचारि लेलैन जे अखन मात्र पढ़ब अपन काज भेल आ पिताक जे अपन काज जीवनानुकूल छैन, जइ अनुकूल चलि रहला अछि तइसँ ने हमरा कोनो

तेहेन अवघाते अछि जइसँ कोनो विवाद दुनू गोरेक बीच स्पष्ट रूपेँ उभरत। परिवार होउ कि समाज, सभकेँ अपन-अपन जीवन आ जीवन-क्रिया अछि। सुभ्यस्त परिवार रहने राधारमणकेँ पढ़ाइक खर्चमे कहियो कोनो कोताही नहियेँ भेलैन। तइ पाछू ईहो कारण छल जे विलासदेवक मनमे रहैन जे जे सम्पैत अछि तेकर अधिकारी राधारमण सेहो अछिए। जँ कोनो तरहक बाधा उपस्थित करब तँ समाजो आ सरो-सम्बन्धी दुसबे करता। दुसबेटा किए करता जे जँ कहीं बँटबरे करा देलैन तैयो राधारमणकेँ पढ़ैमे असोकर्ज तँ नहियेँ हएत मुदा अपने नाँहकमे दोखी बनबे करब...।

कौलेजक जीवनमे राधारमणक विचारमे बहुत किछु मजगूती एलैन। ओना, अध्ययनक प्रति लगन सेहो नीक छेलैन जइसँ नीक रिजल्ट सेहो होइते रहलैन। अध्ययनक क्रममे राधारमणक चिन्तनशीलता सेहो दिनो-दिन तेना बढ़ए लगलैन जे अपन जीवनक भविसकेँ नीक जकाँ आँकि लेलाह। जइसँ स्वतंत्र जीवनक विचारो आ क्रियो-कलाप सभ अपन नजैरिक आगूमे झलकए लगलैन। जइसँ परिवारक बीचक–माने पिताक प्रति–जे मतभेद छेलैन ओ राधारमणकेँ महत्वहीन बुझि पड़ए लगलैन। स्पष्ट बुझए लगला जे भैयारी हुअए कि पिता-पुत्र हुअए आकि समाजे किए ने हुअए, सभ अपन-अपन जीवनक कर्तो-धर्तो आ जीवन संचालनक मालिक सेहो अपने होइत अछि। बाहरी जे सम्बन्ध अछि माने भाए-भैयारीक वा पिता-पुत्रक वा परिवार-समाजक ओ ऊपरी होइए, माने बाहरी होइए। जइसँ लोक सम्बन्धित सेहो होइए आ मतभेद भेलापर सम्बन्ध-विहीन सेहो होइते अछि। ओकरो अपन एक सीमा होइ छइ। जइ सीमाक बीच लोक अपन-अपन सीमा निर्धारित करैए।

राधारमणकेँ नोकरीपर जाइक समाचार गाममे सेहो पसैर गेल छल। जइसँ गामक जे शुभचिन्तक सभ छैथ ओ मने-मन बेहद खुशी होइत राधारमणकेँ अन्तिम विदाइक संग भेँट-घाँट करैक समय सेहो बना लेलैन। मुदा जिनका सबहक मनमे जलन माने राधारमणकेँ आई.ए.एस. करैक जलन छेलैन ओ यत्र-तत्र अन्ट-सन्ट बात सेहो तरे-तर–परोछा-परोछी–कइये रहल छल। गामक अधिकांश लोक ओहन छैथ जे ने डिग्री-डिप्लोमाक अरथे बुझै छैथ आ ने ओकर गुण-धर्म आकि पदे-प्रतिष्ठा बुझै

छैथ, तँए ने हुनका कोनो हरखे छेलैन आ ने विषादे।

सीतानाथ आ गीतानाथ सेहो बी.ए.मे पढ़ैए। दुनू गोरेकेँ जानकारी छल जे आइ राधारमण भैया गामसँ नोकरीपर जेता तँए भेँट करब आवश्यक बुझि दुनू गोरे संगे राधारमण ऐठाम पहुँचल। पहुँचते दरबज्जापर सँ राधारमणकेँ शोर पाड़ैत सीतानाथ बाजल-

"भायजी, यौ राधारमण भायजी?"

राधारमण अपन कोठरीमे, माने जइ कोठरीमे रहै छैथ, अपन कपड़ा-लत्ता, चीज-वौस सहिआरि रहल छला। सीतानाथक आवाज सुनि कोठरीए-सँ राधारमण बजला-

"के सीतानाथ.! बैसह अबै छी।"

कहि अपन चीज-वौस सहिआरब छोड़ि दरबज्जापर एला। राधारमणकेँ देखिते दुनू गोरे–सीतोनाथ आ गीतोनाथ–एक्केबेर बाजल-

"गोड़ लगै छी, भैया..!"

जहिना दुनू गोरे दुनू हाथ जोड़ि मुहसँ बाजल छल तहिना राधारमण सेहो दुनू हाथ जोड़ि मुहसँ बजला-

"नीक रहअ बौआ। की हाल-चाल छह?"

सीतानाथ बाजल- "सभ बढ़ियाँ अछि।"

कहि तीनू गोरे तीनू कुरसीपर बैसला। बैसते गीतानाथ बाजल-

"घरपर सँ कखन निकलब?"

घड़ी देखि राधारमण बजला-

"अखन सात बजैए। दस बजे निकलैक विचार अछि।"

ओना, सीतानाथ गपो-सप्प कऽ रहल छल आ मने-मन राधारमणक चेहराकेँ सेहो निहारि रहल छल जे मनमे केहेन खुशी छैन। राधारमणक चेहरासँ स्पष्ट दुनू रूप झलैक रहल छेलैन। पहिल, नव जीवनमे पदार्पणक खुशीक रूप आ दोसर अखन तक माने चौबीस बर्खक जे सामाजिक जीवन रहलैन ओइसँ अलग होइक कारणेँ मलिनता सेहो छेलैन। मुदा दुनूकेँ सामंजस करैत राधारमण बीचक सीमापर अपनाकेँ असथिर रखने

छला। सीतानाथ बाजल- "भैया, अपने तँ कमलपुरक ओहन सहस्र दल कमल जकाँ बनि गामसँ निकैल रहल छी जेकर महमही देश भरिमे पसरत..!"

सीतानाथक बात सुनि राधारमणक मनकेँ जेना कोनो भारी वस्तु दाबि देने होनि तहिना भेलैन। मनमे उठलैन जे सीतानाथ कोनो अधला बात तँ नहियेँ बाजल। किए तँ देशक कोनो कोण आकि भागमे एक जवाबदेहक रूपमे काज करैक भार पड़बे करत। भारक माने एतबे नहि ने जे नियम-कायदा माने अधिकारक जे कानून-कायदा अछि, तइ अनुकूल अपनाकेँ स्थापित करैत समय बीता ओइठामसँ बदैल दोसरठाम चलि जाइ। एकर तँ दोसरो पक्ष अछि किने। ओ अछि जे ओइठामक जन-मानसक बीच अपन की छवि अछि, तेकरा प्रदर्शित करैक अवसरो तँ अछिए। नीक छवि केना बना पएब ई तँ अपने केने हएत। यएह ने अपन कार्य-शैलीक प्रमुख अंग भेल। अपन देश सभ तरहेँ विशाल अछिए। जहिना लम्बाई-चौड़ाइ अछि तहिना जनसंख्या सेहो अछि। जइमे रंग-रंगक जीवन माने मनुक्खक जीवन सेहो अछिए। तैसंग अनेको जाति, अनेको भाषा आ अनेको सम्प्रदाय सेहो अछि। जहिना भाषाक बीच, तहिना जाति-सम्प्रदायक बीच किछु-ने-किछु विवाद होइते रहैए। एहेन परिस्थितिमे केना सामंजस करैत अपने-आपकेँ सुरक्षित राखि सकब, नान्हिटा बात थोड़े अछि। तहूमे समाजक बीच एहेन मनोवृत्ति बनि गेल अछि जे जे शक्तिशाली आ बहुसंख्यक अछि ओ शक्तिहीन आ अल्पसंख्यककेँ सेहो सदिकाल निच्चाँ देखबए चाहैए। मनमे उठल घनघोर विचारकेँ सामंजस करैत राधारमण बजला-

"बौआ सीतानाथ, कमलोक महमही तखने छिटकैए माने पसरैए, जखन ओकरा पवित्र स्थान भेटै छै। जँ से नहि भेटि दुर्गन्धित स्थान भेटि जाइ छै तखन ओकर महमही थोड़े हवामे पसैर पबैए। मुदा तूँ जे बजलह ओकरो महत तँ अछिए।"

गीतानाथ बाजल-

"भैया, अपने तँ ओहन डिग्री प्राप्त कऽ लेलिऐ जे सामान्य विद्यार्थीक लेल असंभव अछि।"

गीतानाथक विचार सुनि राधारमणक मन थोड़ेक ठमकलैन, मुदा अपने मन जेना भीतरसँ धक्का देलकैन जे जे विचार गीतानाथक मनमे अछि ओ केते सही अछि? राधारमण बजला-

"बौआ, जखन आई.ए. पास केलौं आ बी.ए.मे प्रवेश केलौं तखने मनमे उठल जे आई.ए.एस. करब, मुदा जखन देश भरिक प्रतियोगी परीक्षापर नजैर गेल तखन मन आगू-पाछू करए लगल।"

आगू-पाछू सुनि सीतानाथ बाजल-

"की आगू पाछू करए लगल, भैया?"

गीतानाथपर सँ नजैर हटा सीतानाथपर नजैर दैत राधारमण बजला-

"बौआ, दू तरहक विचार मनमे उठए लगल। पहिल, ई जे देश भरिक प्रतियोगी परीक्षा छी, जइमे हजारो-हजार विद्यार्थी शामिल होइए आ सामान्य रिजल्ट जकाँ रिजल्टो नहि होइए। जे पास मार्क आनत ओ पास करबे करत आ दोसर ई उठल जे एहनो तँ नहियेँ अछि जे कियो पास करबे ने करैए। अही, दुनू विचारक बीच अपनो मनमे विचार उठि रहल छल।"

गीतानाथ बाजल- "तखन, निर्णय केना केलिऐ?"

राधारमण बजला- "बौआ, पिताजीक जे कुदृष्टि छेलैन तइसँ मनमे ठना गेल छल जे केतौ-ने-केतौ नोकरी करैक अछि। किएक तँ जँ अपन जीवन माने अपन परिवारक भार अपना कन्हापर उठा नहि चलब तँ सदिकाल परिवारक बीच किछु-ने-किछु विवाद होइते रहत आ अनेरे ओइमे ओझराएल रहब। जखन नोकरी मनमे रोपा गेल तखन विचार उठल जे नोकरियो तँ केते रंगक अछिए। तइमे नीक नोकरी केना पेब सकब तइ ले तँ अपनो ओहन साधना करए पड़त।"

गीतानाथ बाजल- "की साधना?"

राधारमण बजला- "हाइ स्कूल तक, ओना हाइये स्कूल नहि, कौलेजक आई.ए. तक रिजल्टोक हिसाबसँ आ विद्यार्थियोक बीच हमहूँ सामन्ये कोटिक छेलौं, मुदा बी.ए.मे प्रवेश केलाक पछाइत जेना विचारक

नव चेतनक उदय मनमे भेल जइसँ जीवनक क्रियामे बदलाव आबए लगल।"

सीतानाथ बाजल-

"की बदलाव आबए लगल?"

राधारमण बजला-

"बदलाव अबैसँ पहिने संकल्प उठल जे या तँ आई.ए.एस. करब वा जँ से नहि भऽ सकत तँ प्रोफेसर बनब। अही दुनू उद्देश्यकेँ अपन प्रणपनसँ पूर्ति करैक पाछू अपन दृढ़ शक्तिकेँ जगेलौं आ दुनियाँक सभ किछुसँ विरक्त होइत अपनाकेँ पढ़ाइक पाछू एकाग्र केलौं।"

सीतानाथ-

"की एकाग्र?"

राधारमण-

"अखन जे जीवनक दिनानुदिनक क्रिया अछि ओ तँ सभकेँ पूर्ति करए पड़ै छै, ओ पूर्ति करैत अतिरिक्त क्रियाक रूपमे मात्र अध्ययनपर अपनाकेँ एकाग्र केलौं। ओना, अखन तक जे अध्ययनक रूप छल तइमे सेहो सुधार भेल।"

सीतानाथ बाजल-

"की सुधार भेल?"

राधारमण बजला-

"आई.ए. तक जे अध्ययन करै छेलौं ओ सामान्य दृष्टिएँ, परीक्षामे पास करैक खियालसँ करै छेलौं, विषय-वस्तुक तहमे प्रवेश नहि करै छेलौं मुदा संकल्पित भेला पछाइत विषय-वस्तुक मूल तत्वकेँ पकड़ैक प्रयास करए लगलौं। ओना, शुरूमे किछु दिक्कत जरूर होइ छल किए तँ नीक जकाँ विषय-वस्तुक मूल तत्वकेँ नहि पकैड़ पबै छेलौं, मुदा तइसँ घबड़ेलौं नहि, बल्कि ओकरा पकड़ैक परियास सदैत जारी रखलौं।"

सीतानाथ बाजल-

"तखन की भेल?"

राधारमण बजला-

"किछु दिनक पछाइत विषयक मूलतत्वकेँ बुझए लगलौं। जखन मूल तत्व बुझए लगलौं तखन जे पाछू उनैट तकलौं तँ बुझि पड़ल जे अध्ययनक बहुत किछु छुटि गेल अछि। तखन ओकरा पूर्ति करैले अध्ययनक समयमे बढ़ोत्तरी केलौं। बी.ए. फाइनल परीक्षामे बहुत नीक रिजल्ट भेल।"

सीतानाथ बाजल-

"नीक रिजल्ट की भेल?"

राधारमण बजला-

"जेकर आशा अखन तक मनमे नहि छल, तइ आशाक पूर्ति भेल। माने प्रथम श्रेणीमे ऑनर्सक रिजल्ट भेल। बी.ए. ऑनर्समे प्रथम श्रेणी भेने मनमे एते तँ बिसवास जागिये गेल जे जँ अहिना मेहनत करब तँ एम.ए.मे सेहो एहने रिजल्ट हएत। जखन प्रथम श्रेणीक रिजल्ट एम.ए.मे हएत तखन जरूर केतौ-ने-केतौ, कोनो-ने-कोनो कौलेजमे प्रोफेसरीक नोकरी हेबे करत। जइसँ जे संकल्प मनमे केने छेलौं तइमे आधाक आशा जागि गेल। जखन मनमे आशा जागि गेल तखन बिसवासो जगल।"

विचार बदलैत सीतानाथ बाजल-

"भैया, ई की कहलिऐ जे पिताजीक कुदृष्टि?"

पिताजीक नाओं सुनि राधारमण थोड़े धकमकेला, मुदा ओइ धकमकीकेँ नजैरसँ हटबैत सीतानाथकेँ कहलखिन-

"बौआ, पिताजीक कुदृष्टि शुरूमे नहि छेलैन, मुदा जहिया बी.ए. फाइनलमे एलौं तहियासँ शुरू भेल।"

सीतानाथ बिच्चेमे बाजल-

"कुदृष्टिक तँ किछु कारण ने रहल हएत?"

राधारमण बजला-

"हँ! कुदृष्टिक कारण ई भेल जे जइ कौलेजमे पढ़ै छेलौं, ओइ कौलेजमे गोविन्द बाबू नामक शिक्षक छेला। सात्विक लोक। डेरासँ तीन

किलोमीटरपर कौलेज छेलैन। प्रतिदिन पएरे अबै-जाइ छेला। गोविन्द बाबू जेहने विचारक सात्विक छेला तेहने पढ़बैमे सेहो छेला। एक दिन कौलेजसँ डेरा जाइ छेला कि पाछूसँ गाड़ी धक्का मारि देलकैन।”

‘धक्का’ सुनि बिच्चेमे सीतानाथ बाजल-

“बाप रे..! पछाइत की भेलैन?”

राधारमण बजला-

“डाँड़क हड्डी तेना थौआ-थाकर भऽ गेलैन जे दू मासक पछाइत मरि गेला। मृत्युक समाचार सुनि हमहूँ गेलौं। अपना लगा चारि गोरेक परिवार छेलैन, माने दुनू परानी आ दूटा बेटा-बेटी। बेटी जेठ जे आई.ए.मे पढ़ै छेलैन आ बेटा छोट जे हाइ स्कूलमे पढ़ै छेलैन।”

सीतानाथ बाजल-

“बाप रे..! तखन तँ परिवारे..?”

राधारमण बजला-

“जखन ओइठाम–माने गोविन्द बाबूक ऐठाम–गेलौं आ तीनू गोरे–पत्नी, बेटी आ बेटा–केँ ओंघरा-ओंघरा कानैत देखलौं कि मन पघिल गेल। ओना, हमहींटा देखनिहार नहि रही, आरो विद्यार्थियो आ शिक्षको सभ छेला, जे जाइ छेला दस-पनरह मिनट रूकि बोल-भरोस दए घुमि जाइत छेला। मुदा हमरा मनमे ई उठि गेल जे एक तँ परिवारक जीवनो-यापन भारी (कठिन) भऽ गेलैन आ तैपर विवाह करै-जोकर बेटी सेहो भऽ गेल छैन...।”

सीतानाथ बाजल-

“एहने-एहने परिस्थितिमे नीक-सँ-नीक परिवार नष्ट होइए!”

राधारमण बजला-

“हँ! सेहो तँ होइते अछि। मुदा विकट परिस्थितिमे माने एहेन-एहेन परिस्थितिमे जँ दोसराकेँ समुचित सहयोग भेट जाइ तँ ओ परिवार बँचियो सकैए किने।”

सीतानाथ बाजल- “हँ, से तँ बँचि सकैए मुदा समाजक जेहेन

किरदानी बनि गेल अछि तइमे केकरा के सहयोग करैए। गामो आ आनो-आनो गाममे देखै छी जे बाप-बेटाक बीच मारियो-पीट होइए आ केसो-मोकदमा होइए। भाय-भाय तँ सहजे दियादे भेल। कहलो जाइए जे दियाद आ दालि जेतेक गलए तेते नीक होइए।"

सीतानाथक बात सुनि राधारमण मुस्कुराइत बजला-

"बौआ, सभ दुनियेँ दिस माने अनके दिस तकैए जइसँ अपन पएर तरक जमीन देखिते ने अछि। जँ से देखए लगत तँ अनेरे ने विचारो आ जीवनक गति सेहो सुधरए लगत। जखन गति-मति सुधरए लगत तखने ने जीवनो आ जीवनक क्रियो सुधैर जाएत।"

स्वीकार करैत सीतानाथ बाजल-

"हँ, से तँ हएत।"

राधारमण बजला-

"ओइ समय माने जखन ई घटना भेल तखन हमहूँ पूर्ण आश्रित परिवारेपर छेलौं। ओना, जखन बी.ए.मे पढ़ैत रही। पिताजी हमर विवाहक चर्चा उठा देने छेला। जइसँ केतेको कन्यागत सूर-पता लगबए लागल छेला, मुदा पिताजीक जे मांग (दहेज) रहैन तइसँ काज (विवाह) रूकल छल, जे बात अपनो बुझै छेलौं। ओना, सामाजिक परिवेश सेहो ओहने माने अधिक-सँ-अधिक लेन-देनक बनियेँ गेल अछि। तहूमे अपना जमीनो-जत्था अछि, परिवारक सेहो मान-प्रतिष्ठा अछि आ कौलेजमे सेहो पढ़िते छेलौं।"

राधारमणक परिवार कमलपुर गाममे सभसँ बीस जमीन-जत्थामे छेलैन। पचास बीघासँ ऊपर जमीन विलासदेवकेँ छेलैन। ओना, जमीन्दारी तँ नहि रहैन मुदा राजक गुमस्ता विलासदेवक पिता हरिहरदेव छेलखिन, जइसँ सम्पैत बटोरैक रस्ता छेलैन्हे। अपना अमलदारीमे हरिहरदेवक दरबज्जापर हाथियो छेलैन। शुरूमे हरिहरदेवकेँ ओतेक अजगज नहि छेलैन, साधारण किसान परिवार रहैन। जे राज्यक सम्पर्कमे एला पछाइत भेलैन। बापक एकलौता बेटा विलासदेव, जे पढ़ि-लिखि तँ नहि सकला, मुदा रईसीक जे जीवन होइ छै से जरूर भोगै छला। ओना, सामान्य

लोककेँ पढ़ैयो-लिखैक सुविधा नहियेँ छल, पिताक परोछ भेने माने पिताक मृत्यु भेलाक पछाइतियो विलासदेवक ओहने रईसीक जीवन रहल, मुदा बाहरी आमदनी कमने खेत-पथार बिकब शुरू भऽ गेल छेलैन। गोटि-पंगरा परिवारक उठाइन समाजमे सभ दिनसँ रहबे कएल अछि, तहूमे जइ परिवारक सम्बन्ध राज-काजसँ होइत गेल ओ तँ उठबे कएल। ओहने परिवार हरिहरदेवक सेहो रहलैन।

सीतानाथ बजला-

"पछाइत की भेल?"

राधारमण बजला-

"गोविन्द बाबूक परिवारक दशा देखि मने-मन विचार केलौं जे सोल्होअना परिवारक भार उठबैक शक्ति तँ अपना नहि अछि मुदा आंशिक भार उठबैक शक्ति तँ अछिए। जहाँधरि बनि सकत तहाँधरि मदैत करबैन।"

सीतानाथ बाजल-

"वाह! तखन तँ किछु सहारा ओइ परिवारकेँ माने गोविन्द बाबूक परिवारकेँ भइये गेल हेतैन?"

राधारमण बजला-

"हम कइये केतेक सकै छेलौं, तखन एते जरूर केलिऐन जे अनुशंसाक नोकरी पत्नीकेँ दियबैमे सहयोग केलिऐन। ओना, तेहेन पढ़ल-लिखल पत्नी नहियेँ छथिन जे शिक्षण कार्य करितैथ आकि ऑफिसेमे लिखा-पढ़ी करितैथ। मुदा कौलेजक पुस्तकालयमे चपरासीक काज भेट गेलैन।"

सीतानाथ बाजल-

"खाएर, जीबैक किछु आशा तँ परिवारकेँ भइये गेलैन।"

राधारमण बजला-

"ओतबे मदत नहि केलिऐन। बेटीसँ विवाह करैक भार सेहो गछि लेलिऐन। मुदा ओ गछलयैन एक शर्तपर।"

सीतानाथ बाजल- "की शर्त्त?"

राधारमण बजला- "जखने पिताजीक कानमे समाचार पहुँचलैन जे राधारमण अपन विवाह अपने ठीक कऽ लेलक तखनेसँ आगि-बबूला भऽ गेला। विवाहक भीतर जे समस्या छल, जइसँ प्रभावित भेल छेलौं, माने एकटा नष्ट होइत परिवारकेँ सहारा बनि बँचबैक परियास केलौं, तेकर चर्च छोड़ि पिताजी लेनो-देन आ कुलो-खनदानकेँ अगुआ विरोधमे वातावरण तैयार कऽ लेलैन।"

सीतानाथ बाजल-

"तखन तँ विचित्र संकटमे पड़ि गेल हएब?"

मुस्कुराइत राधारमण बजला-

"से तँ संकट सोझामे आबिये गेल मुदा मड़ुओ भरि ओइसँ विचलित नहि भेलौं। मने-मन विचारि लेलौं जे अखन पढ़ब हमर मुख्य काज अछि, रहल खर्च-बर्चक, से तँ सम्पैतमे अपनो अछिए। जँ खर्च दइमे बाधा उपस्थित करता तँ कोर्टक शरण लेब आ जहिना विरोधमे पिताजी वातावरण बनौलैन तहिना हुनको सिखा देबैन। मनमे दृढ़ संकल्प रोपि लेलौं।"

मुड़ी डोलबैत सीतानाथ बाजल- "पछाइत की भेल?"

हँसैत राधारमण बजला-

"जहिना साँप धरतीपर टेँढ़-टुढ़ होइत चलैए मुदा बिलमे जेबाकाल सोझ भऽ जाइए तहिना सोझ भऽ गेला। खर्चमे कोनो कोताही नहि केलैन मुदा वैचारिक रूपमे मतभेद बढ़िते गेल। ओना, मतभेदसँ एते लाभ जरूर भेल जे अपन दृढ़ शक्ति आरो बढ़ि गेल। जइसँ जी-जानसँ पढ़ैक पाछू लागि गेलौं। जहिना बी.ए.मे नीक रिजल्ट भेल तहिना एम.ए.मे सेहो भेल। जइसँ एतेक आशा तँ बनियेँ गेल जे नइ कौलेजमे तँ हाइयो स्कूलमे शिक्षक बनबे करब।"

राधारमण आगाँ बजला- "पढ़ैक जिज्ञासा आरो उग्र भऽ गेल आ आई.ए.एस. केलौं। सावित्रीकेँ माने गोविन्द बाबूक पत्नीकेँ, कहलयैन जे सुवासिनी संग विवाह कऽ लेब मुदा हमर परिवारक जे स्थिति अखन बनि

गेल अछि तइमे विदागरी नहि कराएब। जखन अपना पैरपर ठाढ़ भऽ जाएब तखन विदागरी कराएब।”

सीतानाथ बाजल-

“भाय साहैब, इच्छा अछि जे अपनेकेँ विदा केलाक पछाइत जाइ, मुदा अहूँकेँ ओरियान-बात करैक अछि। ता अहूँ अपन तैयारी करू, सम्भव हएत तँ दस बजेमे पुन: आबि जाएब।”

राधारमण बजला-

“बड़बढ़ियाँ।”

सीतोनाथ आ गीतोनाथ विदा भऽ गेल आ राधारमण सेहो अपन तैयारीक पाछू लगि गेला।

आई.ए.एस.क रिजल्ट भेला पछाइत राधारमण सुवासिनीकेँ सासुरसँ विदागरी करा अपना ऐठाम लऽ एला। दू बर्खक बेटी सुचिता सेहो भऽ गेल छेलैन। परिवारमे सुवासिनीकेँ अबिते पिता–विलासदेव–क मनमे जलन सेहो दिनो-दिन बढ़िये रहल छेलैन मुदा माइ–सुनयना–क मनमे कोनो तरहक मलिनता नहि छेलैन। जहिना राधारमणकेँ अपन जेठ बेटा बुझि बेवहार करैत रहली तहिना सुवासिनीकेँ सेहो अपन पुतोहु जकाँ बेवहार करए लगली। पतिक संग माने विलासदेवक संग सुनयनाकेँ कहियो-कहियो कहा-कही सेहो भऽ जाइत रहैन मुदा तइ सभ बातपर कहियो, तेना भऽ कऽ धियान नहि देली। जहिना सभ परिवारमे छोट-मोट काजे वा विचारे-ले कहा-कही होइए आ किछुए समैयक पछाइत मेटा जाइए तहिना होइत रहलैन।

जखन विलासदेव भिनसरूपहरमे चाह पीबैत रहैथ, सुनयना लगमे आबि कहलकैन-

“बौआ–राधारमण–आइ काजपर जाएत।”

ओना, विलासदेवकेँ सेहो बुझल रहबे करैन। किए तँ तीन मासक ट्रेनिंग केलाक पछाइत, पाँच दिन पहिने राधारमण गाम आबि बाजल छला जे पाँचम दिन ड्यूटी ज्वाइन करए भुवनेश्वर जाएब। उड़ीसाक राजधानी भुवनेश्वर, जैठामसँ थोड़बे दूरपर जगरनाथ धाम सेहो अछि। समुद्रकातक

राज्य उड़ीसा छीहे। दरभंगासँ डायरेक्ट गाड़ी सेहो अछिए।

पत्नीक बात सुनि विलासदेव 'हँ-हूँ' किछु ने बजला। पतिकेँ चुप देखि सुनयना अपन काजमे पुन: लगि गेली। तैबीच माझिल बेटा–सुखदेव–आएल। सुखदेवकेँ देखिते विलासदेव पुछलखिन-

"बौआ, भोरसँ अखन धरि केतए निपत्ता छेलह?"

पिताक लगमे बैसैत सुखदेव बाजल-

"बाबू, निपत्ता कहाँ छेलौं। चौक दिस गेल रही। गामक हाल-चाल सुनैमे कनी देरी भऽ गेल।"

विलासदेव पुछलखिन-

"गामक की हाल-चाल अछि?"

तैपर सुखेदव कहलकैन-

"गामक की हाल-चाल रहत। यएह हो-हल्ला भऽ रहल छल जे जखन गाममे केकरो आम नहि फड़ल आ जेकरा फड़बो कएल ओहो झाँट-पानि-पाथरसँ सभटा नष्ट भऽ गेल। तेकरे क्षति-पूर्तिक हेतु सरकार दिससँ सहायता भेटत मुदा ओ तँ सभकेँ ने भेटक चाही, माने जेकरा-जेकरा गाछी-कलम छै। से नहि भेटि किछु गोरेकेँ भेटल आ अधिकांश लोक माने गाछी-कलमबला किसानकेँ नइ भेटल..!"

विलासदेव बजला-

"किए ने भेटल?"

सुखदेव बाजल-

"जे सभ कृषि मित्रकेँ चौथाइ माने सहायताक चौथाइ रुपैआ कमीशन देलक तेकरा सभकेँ आठे दिनमे भेट गेलइ। मुदा जे ओकरा अनुदान बुझि कमीशन नहि देलक तिनका सभकेँ एको पाइ नहि भेटलैन। तेकरे हो-हल्ला होइत रहइ।"

विलासदेव-

"फेर भेल की?"

सुखदेव बाजल- "की हएत, जहिना सभ अनुदानमे होइत आबि

रहल अछि तहिना हएत।"

विलासदेव बजला-

"की माने?"

सुखदेव बाजल-

"माने यएह जे गाममे किछु किसान एहेन छैथ जे सरकारी किसान छैथ, हुनका सभकेँ बुझले छैन माने कोनो सरकारी सहायता अबैए तँ कृषि मित्र हुनका सभकेँ जानकारियो दऽ दइए आ अपन कमीशन लऽ कऽ अनुदानो दियाबैए। जइसँ गामक किसान बँटा गेल छैथ।"

विलासदेव बजला-

"की बँटा गेल छैथ?"

सुखदेव बाजल-

"किछु किसान सरकारी बनि गेल छैथ। आ बाँकी सभ गैर-सरकारी छैथ।"

तही बीच वामदेव सेहो पहुँचल। वामदेवकेँ देखिते विलासदेव पुछलखिन-

"बौआ, भोरसँ नहि देखने छेलियह?"

वामदेव बाजल-

"बाबू, भोरूपहरकेँ जहिना सभ दिन टहलए जाइ छी तहिना गेलौं। दछिनवरिया सड़क धेने जखन करीब दू किलोमीटर बढ़लौं तँ पनरह-बीस गोरेकेँ अबैत देखलयैन। सबहक पीठपर परदेशिया बैग लटकल छेलैन। ओना, अपना गामक एको गोरे नहि छेला। पुछलयैन जे अहाँ सभ केतए रहै छी तँ एक गोरे बजला जे भगवतीपुर रहै छी।"

बिच्चेमे विलासदेव बजला-

"भोरे-भोर केतएसँ अबै छेला?"

वामदेव बाजल- "पुछलयैन जे अहाँ सभ केतएसँ अबै छी, तँ एक गोरे बजला मुम्बइसँ। फेर पुछलयैन जे सभ कियो मुम्बइयेसँ अबै छी तँ सभ कहलक 'हँ', सबहक मुँह-कान सुखाएल बुझि पड़ल।"

विलासदेव बजला-

“किए सुखाएल छेलैन, किछु भेल रहैन?”

वामदेव बाजल-

“पुछलिऐ तँ कहै गेला जे जैठाम छेलौं तैठाम करोना बीमारी तेते भेल छै जे सभ कारखाना-कारोबार बन्न भऽ गेल तँए गाम आबि रहल छी। अपनो बुझल छेलाए-हे जे जहिना हैजा, चेचक, स्वाइन फ्लू इत्यादि महामारी लसेरियाह होइए माने एक-सँ-दोसरमे लसैर लगने होइए तहिना करोना सेहो छी, तँए सभ मुम्बइसँ पड़ा कऽ गाम आबि रहल छैथ।”

विलासदेव बजला-

“बीमारी तँ बीमारी छी, तइ ले भागैक कोन काज छै। ओकर तँ इलाज हेबा चाही किने। तहूमे की कोनो आइये एहेन बीमारी आएल अछि, समय-समयपर एहेन लसेरिया बीमारी तँ सभ दिनसँ होइते आबि रहल अछि।”

वामदेव बाजल-

“सएह तँ हमहूँ कहलयैन जे गाम-घरमे केकरो कोनो बीमारी होइए तँ शहरक अस्पतालमे जाइए आ अहाँ सभ शहरसँ गाम आबि रहल छी, जैठाम ने डॉक्टर अछि आ ने अस्पताल। तखन एक गोरे बजला जे जखन कारखाने बन्न भऽ गेल तखन ओइठाम खेबो-पीबो की करितौं। तहूमे घरसँ माने डेरासँ निकलैपर सेहो रोक लगि गेल।”

विलासदेव बजला-

“अच्छा छोड़ह ऐ सभकेँ।”

पिताक बात सुनि सुखदेव बाजल-

“बाबू, भैया तँ आइ कामपर जेताह?”

ओना, विलासदेवकेँ बुझल छेलैन, मुदा अनठबैत बजला-

“हमरा कहाँ बुझल अछि। तोरा के कहलखुन?”

सुखदेव बाजल-

“भैया अपने तँ नहि कहलैन, मुदा पाँच दिन पहिने सुनने छेलौं जे

पाँचम दिन राधारमण भुवनेश्वर जेता। ओतइ नोकरी भेलैन अछि।"

सभ वस्तुजातकेँ सेरिया राधारमण माएकेँ कहलैन- "माए, समय भऽ गेल। भानस तँ भऽ गेल हएत किने?"

सुनयना बजली- "हँ।"

माइक बात सुनि राधारमण पत्नीकेँ कहलैन-

"बेरा-बेरी जँ खाए लगब तखन देरी भऽ जाएत। तँए हमहूँ खाइले बैसै छी आ अहूँ खा लिअ। समयसँ किछु पहिनहि तैयार भऽ विदा भऽ जाएब। ओना, टेम्पूबलाकेँ सेहो कहि देने छिऐ जे पौने दसे बजे आबि जइहह। साढ़े नअ बजैए, ओहो जइ-घड़ी ने पहुँचल...।"

पतिक बात सुनि सुवासिनी 'हँ-हूँ' किछु नहि बाजि भनसा घर दिस विदा भेली। अपना समयपर टेम्पूबला पहुँच हॉर्न बजौलक। हार्नक आवाज सुनि राधारमण कोठरीसँ बाहर निकैल टेम्पूबलाकेँ कहलखिन- "बस, हमहूँ तैयारे छी।"

टेम्पूबला गाड़ियेक सीटपर ओङ्गैठ आराम करए लगल। सुवासिनी सासुक कोरामे सुचिताकेँ दैत अपने बैग-एटैची कोठरीसँ निकालि टेम्पूक आगूमे लऽ जा कऽ रखलैन। तैबीच राधारमण माएकेँ गोड़ लागि दरबज्जा दिस बढ़ला। पिताकेँ दरबज्जापर नहि देखि खरिहाँन दिस नजैर उठा-उठा ताकए लगला। ने पिते नजैरपर पड़लैन आ ने दुनू भाँइ–सुखदेवे-वामदेवे–नजैरपर पड़लैन। एक दिस राधारमणकेँ अपन समय, घरसँ निकलैक समय मनकेँ खिंचैत रहैन तँ दोसर दिस तीनू गोरे माने दुनू भाँइयो आ पितोकेँ नहि देखि मन दोसर दिस सेहो औनाए लगलैन। मुदा उपाइये की। तहीकाल सीतानाथक संग गीतानाथ सेहो पहुँच गेल। ओना, तीनू गोरेकेँ माने दुनू भाँइयो आ पितोकेँ नहि देखि राधारमणक मनमे अनेको विचार उठए लगलैन मुदा तइ सभ विचारकेँ मनेमे दाबि सीतानाथकेँ कहला-

"बौआ, घरसँ निकलैक समय भऽ गेल। आब तँ मोबाइलिक जुग आबि गेल तँए गप-सप्प करैत रहिहह।"

अपन बढ़ैत सम्बन्धकेँ देखि सीतानाथ बाजल-

"भाय साहैब, अहाँसँ बहुत किछु सिखैक अछि तँए सभ दिन तँ

नहि मुदा समय-समयपर रस्ता देखबैत रहब। हमरा समैयक तँ ओते महत्व नइ अछि, जेते अहाँक समैयक अछि। तँए नीक हएत जे जखन अपने निचेन रहब तँ कहियो-काल अपनहि फोन करब। आब तँ सहजे महीनवारी मोबाइलिक चार्य भऽ गेल अछि, तँए समैयक पैबन्द सेहो नहियेँ अछि।”

सीतानाथक विचार सुनि राधारमण बजला-

“बौआ, जखन जे पुछैक जरूरत हुअ, निधोख पुछि लिहह। नोकरी आकि पद अपना जगहपर अछि मुदा अपन जे सामाजिक सम्बन्ध अछि ओकर महत्व अपन अछि। तहूमे अपन इच्छा ई छल जे जँ कोनो कौलेजमे प्रोफेसर बनितौं तँ अपन जे विद्यार्थी जीवनक अनुभव अछि ओ सभ बात विद्यार्थी सभकेँ बुझा कऽ कहितौं, मुदा से तँ भेल नहि।”

राधारमणक विचार सुनि गीतानाथ बाजल-

“भाय साहैब, एकटा साधारण विद्यार्थी केना नीक विद्यार्थी बनि उच्च कोटिक स्थान पेब सकैए ई अनुभव तँ अपनेकेँ बेवहारिक रूपमे भइये गेल अछि तँए अपनेसँ...।”

गीतानाथक विचार सुनि राधारमण मुस्कुराइत बजला-

“बौआ, बहुत बात कहबो केलियह आ आगूओ कहैत रहबह। अखन तँ विदा भऽ गेल छी, तँए बहुत बात करैक समय नहि अछि मुदा चलैत-चलैत एकटा बात जरूर कहि दिअ चाहै छिअ जे जाधैर अध्ययन करै छह ताधैर दुनियाँक सभ किछु बिसैर एतबे धियानमे राखह जे जखन पढ़बेटा काज अछि तखन नीक-सँ-नीक किए ने कऽ सकै छी। जखने मन एकाग्र भऽ काजकेँ पकैड़ लेतह तखने दिनानुदिन अपन उन्नैत होइत देखबह। परीक्षा कोनो किए ने होइ वा केतबो विद्यार्थी किए ने हुअए, मुदा प्रश्न पत्रमे जे प्रश्न रहत ओतबेकेँ तोरा जवाब दइके छह। ओ केना समुचित ढंगसँ समुचित उत्तर लिख पेबह, बस एतबेपर धियान केन्द्रीत करैक छह।”

राधारमणक विचार सुनि जहिना सीतानाथक तहिना गीतानाथक हृदय खुशीसँ भरि गेल। आगू बढ़ि राधारमण माएकेँ कहलकैन-

“माए, जहिना अखन तक बेटा बनि मनमे रहलियौ तहिना सभ

दिन...।”

बेटाक बात सुनि सुनयनाक मन दल-दल, थल-थल हुअ लगलैन। दुनू आँखिमे नोर आबि गेलैन। राधारमणक मनमे नाचए लगलैन। पितो आ दुनू भाँइयोक बेवहार देखि माने तीनू गोरेकेँ नहि रहने सुनयनाक मनमे मर्माहत तँ भेबे केलैन मुदा तेकरा मनेमे दाबि बजली-

“बौआ, बुड़हा[1]क मन केतबो बगैद किए ने जाइन मुदा पिता तँ वएह छथुन। मनमे कोनो तरहक मान-रोख नहि रखिहह। सभ अपने छथुन आ अपने रहथुन। बेटा धन छह, दुनियाँमे केतौ रहह मुदा अपन परिवार अपने छिअ आ अपने रहतह।”

माइक बात सुनि राधारमण सामंजस करैत बजला-

“माए, सालमे एकबेर मास दिनक छुट्टी हेबे करत, ओ मासो दिनक छुट्टी गामेमे बिताएब।”

अपन कोरासँ सुचिताकेँ सुवासिनीक कोरामे दैत सुनयना बजली-

“कनियाँ, दुनियाँमे की अहींटा परदेश बास करब। जेते कमासुत बेटा अछि, जे परदेश नोकरी करए जाइए, सबहक बालो-बच्चा आ पत्नियोँ तँ जाइते अछि। दुनू गोरे प्रेमसँ रहब।”

सासुक बात सुनि सुवासिनी अपन दू बर्खक बेटी–सुचिता–केँ कोरासँ उतारि बजली-

“बुच्ची, दादीमाँ केँ दुनू हाथ जोड़ि, गोड़ लगहुन।”

ओना, दुइये बर्खक सुचिता अछि, मुदा आन परिवारक माने गरीब-पछुआएल परिवारक बच्चासँ चफलगर अछिए। आन परिवारक माने पिछड़ल-पछुआएल-गरीब परिवारक बच्चा जे कुपोषणसँ सभ तरहेँ कुपोषित रहैए, से तँ सुचिताकेँ नहियेँ छल। जहिना खेबा-पीबाक अभाव नहि छल तहिना सुशिक्षित माता-पिताक आश्रय सेहो छेलैहे।

माइक बात सुनि सुचिता दुनू हाथ जोड़ि सुनयनाक दुनू पएरमे गोर लगलक। सुचिताकेँ गोड़ लगिते सुनयनाक मन एकाएक कलैश उठलैन।

---

[1] पतिक

कलैशते बजली-

"बुच्ची, भगवान नीक करथुन।"

तैबीच टेम्पूक ड्राइवर हॉर्न बजौलक। राधारमण अपन समानक गिनती कए, टेम्पूमे बैस चुकल छला, सुचिताकेँ नेने सुवासिनी सेहो आबि बैसली। गाड़ी आगू बढ़ल।



शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020

दोसर पड़ाव

दिनक तीन बजे। विलासदेव सुति उठि कऽ हाथ-मुँह धोइ दरबज्जापर बैसबे कएल छला कि सुखदेव लोटामे पानि, कटोरीमे पीसल भाँग नेने पहुँचलैन। कटोरीमे राखल भाँगकेँ विलासदेव अपन हाथक आँगुरक चुटकीसँ देखए लगला जे भाँगक पीसान नीक अछि कि नहि। किए तँ विलासदेवकेँ ई बुझल छैन जे भाँगक नीक पीसान तखन मानल जाइए जखन ओ पानिमे अलैग जाइए। माने ई जे भाँगक जेहेन पीसान होइए तेहेन ओइमे नशाक मात्रा ओते बेसी होइए। चुटकीसँ देखला पछाइत विलासदेव बुझि गेला जे भाँगक पीसान नीक अछि। तहीकाल विलासदेवक लंगोटिया संगी निशाकान्त सेहो पहुँचला।

निशाकान्त आ विलासदेव संगे-संग गामक स्कूलमे पढ़ने छैथ। दुनूक जन्म सुभ्यस्त परिवारमे भेने नोकरी-चाकरीक खगता नहियेँ छेलैन, तँए आगू पढ़बकेँ ओते जरूरी दुनूक पिता नहि बुझलैन। तँए आगू नहियेँ पढ़लैन। अपन जमीन-जत्थाक कागज-पत्तर देखब, महाजनीक बही-खाताक हिसाब-बारी करब, बस एतबे खगता छेलैन।

पिताक अमलदारीमे जहिना विलासदेवक तहिना निशाकान्तक परिवारमे महाजनीक कारोबार चलैत रहैन। माने रुपैओ-पैसा आ अन्नो-पानिक सूदि-सबाइ दुनू परिवारक खानदानी पेशा छल। ओना, भैयारीमे विलासदेव असगरे छैथ मुदा निशाकान्त तीन भाँइक भैयारीमे छैथ। पिताकेँ मुइला पछाइत निशाकान्तक परिवारमे सम्पैतिक बँटवारा लऽ कऽ तेहेन विवाद उठल जे महाजनीक संग-संग आधासँ बेसी जमीनो मुकदमेवाजीमे चलि गेलैन। मुदा विलासदेवकेँ से नहि भेलैन। असगर भैयारी रहने दियादी विवाद नहि उठलैन। निशाकान्तकेँ देखिते विलासदेव बजला- “आउ-आउ भयार..!”

निशाकान्त बजला- “भयार, की हाल-चाल अछि?”

विलासदेव बजला-

“हाल-चाल की रहत..! समये तेहेन दुरकाल भऽ गेल अछि जे सदिखन मनमे अबैए- एहेन जिनगीसँ मरबे नीक। की समय छल आ अखन की भऽ गेल से बुझिये ने पेब रहल छी..!”

तैबीच सुखदेवकेँ आगूमे ठाढ़ देखि विलासदेव मुँह घुमाकऽ बजला-

“बौआ, एतबे भाँगसँ काज नहि चलतह। जेते अनलह तेते आरो नेने आबह। तैबीच हम दुनू भयार गप-सप्प करै छी।”

पिताक बात सुनि सुखदेव मने-मन विचारलक जे अपना-ले जे रखने छी माने आधा पिता-ले अनने छल आ आधा अपना-ले जे रखने छल, ताबे सएह आनिकऽ दऽ दइ छिऐन आ ताबत पत्तीकेँ पानिमे भीजैले दऽ देबइ। बिनु भीजल पत्तीकेँ पीसलासँ ओ रस थोड़े औत जे भीजलमे अबैए। सएह केलक।

भाँगक गोला देखि विलासदेव सुखदेवकेँ कहलखिन-

“बौआ, अपने ने ओहिना भाँग खा लइ छी, मुदा जखन दरबज्जापर भयार चलि एला तखन ओहिना खाएब उचित हएत। कनेक दूधो आ चीनियोँ नेने आबह। पाकल केरा तँ घरमे नहियेँ हेतह। तइ ले अनेरे चौकपर कथीले जेबह। चीनियेँ-दूधसँ काज चला लएह।”

पिताक बात सुनि सुखदेव आँगनसँ दोसर लोटामे दूध आ चीनीक डिब्बा आनि भाँग घोड़लक। दुनू लोटा भाँग, दुनू भयार माने विलासोदेव आ निशोकान्त पीब लेलैन। भाँग पीब ढकार करैत विलासदेव बजला-

“बौआ सुखदेव, दू कप चाह नेने आबह।”

ओना, चाहक नाओं सुनि निशाकान्त कने तारतम्य करए लगला मुदा बुझल रहबे करैन जे बिनु चाह पीने थोड़ेक देरीसँ भाँग अपन रंग अनैए मुदा चाह पीने से नहि होइए, लगले रंग आबि जाइए।

सुखदेवक हाथमे चाहक कप देखि विलासदेव बजला-

“बौआ, चाह रखि एकबेर आरो आँगन जा आ पानक सभ समचा आनि ऐठाम रखि दहक, भऽ गेलह तोहर छुट्टी। पछाइत हम दुनू भयार

गप-सप्प करैत रहब।"

पानक सभ समान सुखदेव आनि पिताक आगूमे रखि अपन भाँगक ओरियानमे चलि गेल। तैबीच दू-दू घोंट चाह दुनू गोरे पीब लेलैन। भाँगक रंग कनी-कनी दुनूक मनमे मुड़ियारी दिअ लगल रहैन। जइसँ दुनूक मन थोड़ेक फुहराम सेहो हुअ लगलैन। तेसर घोंट चाह पीब विलासदेव बजला-

"भयार, की जुग-जमाना छल आ अखन की भऽ गेल। होइए जे एहेन जिनगीसँ मरबे नीक..!"

निशाकान्त कचहरिया लोक। माने कोट-कचहरीक आबा-जाहीसँ जहिना बजै-भुकैक ढंग बदैल गेल छैन तहिना बोली-वाणीक शिकारी सेहो बनियेँ गेल छैथ। मुदा से विलासदेव नहि छैथ। कोट-कचहरीसँ कहियो भेँट नहि भेल छैन, भेँटो केना होइतैन, ने कहियो एकोटा केसमे मुद्दई बनि ठाढ़ भेला आ ने मुद्दालह बनला। मुदा निशाकान्त अपन भैयारीक विवादमे कोट-कचहरी जाइत-अबैत पक्का खेलाड़ बनि गेल छैथ। माछ फँसबैक घुमौआ जाल जकाँ भाषाक घुमौआ जाल फेकैत निशाकान्त बजला-

"भयार, कहलो गेल अछि ने जे 'वंश बढ़ै तँ बक्खो हुअए।"

जिज्ञासा करैत विलासदेव बजला-

"से की भयार?"

विलासदेवक जिज्ञासा देखि निशाकान्त बुझि गेला जे जाल सुतरल। जहिना वेपारी सभ अपन पूजी लगा पहिने गहिंकीक मन मोहैए, माने नमुना देखा-देखा कऽ पटियबैए, तहिना निशाकान्त अपन समांग सबहक निन्दा करैत बजला-

"भयार, जहिना बेसी समांग बढ़लासँ परिवारमे अगराही लगैए, जेना हमरा परिवारमे लागल तेना तँ भगवान अहाँकेँ नहि केलैन। केतेक सुन्दर परिवार अहाँक अछि। बेटा आई.ए.एस. कऽ लेलैन। आब की चाही। 'बढ़हि पुत्र पिताक धर्मे..।' अहीं सन-सन धरमात्माक परिवारमे ने राधारमण सन बेटाक जन्म होइए।"

ओना, राधारमणपर विलासदेवक मन भीतरसँ जरल छेलैन्हे मुदा आगूमे चाह-पानक आकर्षण अपना दिस खींच नेने छेलैन। ताबे तक दुनू

गोरे आधासँ बेसी चाहो पीब नेने छला। जइसँ भाँगक लहकी, सेहो मनमे लहकए लगल छेलैन। परिवारक विचार विलासदेवक मनसँ हटि चाह दिस आबि गेल छेलैन। बजला-

“भयार, अपना सभ की चाह पीबै छी, लोककेँ पीबैत देखै छिऐ तँ मनकेँ बुझबै छी। एकबेर सासुर गेल रही। मैझला सार मलेटरीमे रहैए ओ गाम आएल छल। ओ जे चाह पीयौलक ओहन चाह ने जीवनमे कहियो पीने छेलौं आ ने भरिसक कहियो पीब।”

विलासदेवक बात सुनि निशाकान्त बजला-

“भयार, ठीके अहाँ कहै छी। ऐठाम, अपना सबहक गाम-घरमे जे चाहपत्ती अबैए ओ कोनो चाहपत्ती छी, जहिना धानमे खखरी होइए तहिना चाहक खखरी छी। एकबेर असाम गेल रही। ओइठाम बाधक-बाध चाहक खेती देखलिऐ। अपना सब जकाँ कि ओकरा सबहक बाध अछि। पहाड़ी इलाका छै। बड़का-बड़का पहाड़ो अछि आ खेतो-पथार कि अपना सभ जकाँ चौरस अछि। ओम्हर ऊपर-निच्चाँ, ले-ऊँच खेत सभ छै, जइमे चाहक खेती होइए।”

निशाकान्तक बात सुनि विलासदेव जिज्ञासा करैत बजला-

“सुनै छी, ओम्हर–आसाम–मे अपना सभसँ बेसी बरखो होइए?”

विलासदेवक विचारमे रंग भरैत निशाकान्त बजला-

“से कि कोनो चोराएल बात सुनने छी। अपना सबहक के कहए जे दुनियाँमे सभसँ बेसी बरखा ओइठाम होइए।”

‘बरखा’ सुनि विलासदेव बजला-

“तखन तँ अपना सभसँ नमहर-नमहर धारो-धूर हएत आ पनियाह फसलो माने पनिगर जजातो अपना सभसँ बेसी होइत हएत?”

निशाकान्त बजला-

“ब्रह्मपुत्र धारक जे नाओं सुनै छिऐ ओ असामेमे ने अछि। ओही धारककातमे एकटा पहाड़ छै जइ पहाड़पर कामरूप कामाख्याक मन्दिर अछि। ओही इलाकामे ने देशक आन इलाकाक लोककेँ गदहा-हरिन, गाए-

माल बना खेतमे चरबैए।”

तैबीच दुनू गोरे चाह पीब पानो खा नेने छला। भाँगक खुमारी दुनू गोरेकेँ चढ़ि गेल छेलैन। विलासदेव बजला-

“केहेन धार अछि ब्रह्मपुत्र?”

निशाकान्त बजला-

“केहेन धार अछि ब्रह्मपुत्र..! कहै-सुनै जोकर अछि। मोटा-मोटी यएह बुझू जे अपना सभ जैठाम रहै छी, एकरा गंगा-ब्रह्मपुत्रक मैदान कहल जाइ छै। ओहन मैदान जइमे गंगा सन पवित्र आ ब्रह्माक सन्तान सन लोक बसैए। तखने बुझि लियौ जे केहेन धार अछि। जेकरा हिमालय पहाड़ कहै छिऐ, तेकर उत्तर होइत पहाड़सँ उतरल अछि। पहाड़क काते-कात पूब मुहेँ तिब्बत होइत बहैत आगू जा दच्छिन मुहेँ भेल अछि। वएह धार ब्रह्मपुत्र छी। देखबै तँ भ्यौन-डेरौन बुझि पड़त। तेहेन भयंकर धार अछि..!”

विलासदेव बजला-

“छोड़ू धार-धूरक गप। जेतए छै से अपन जानत। ओम्हर पानो लोक खाइए आकि एक नम्बर चाहेटा पीबैए?”

निशाकान्त बजला-

“जेते पान ओ सभ खाइए तेते अपना ऐठामक लोक थोड़े खाएत। अपना ऐठाम तँ लोक गीत गबैकाल पान खाइए आ बाँकी समय दाँत टुटै दुआरे नहियेँ खाइए। बाधक-बाध सुपारी गाछ देखबै। ओम्हरेसँ अपना सभ दिस सुपारी अबैए। जेकरा असामी सुपारी कहै छिऐ।”

निशाकान्तक बात सुनैत-सुनैत विलासदेवक मन घुमिकऽ परिवारपर चलि एलैन। परिवारपर अबिते बजला-

“भयार, अहाँ कहलौं जे हमर समांग, सभ बक्खोओसँ बदत्तर अछि तइसँ की नीक हमर बेटा–राधारमण–अछि।”

विलासदेवक बात सुनि निशाकान्त सोचलैन जे अस्सल बात आब उठल। तँए किछु आरो अपन परिवारक निन्दा किए ने करी जइसँ

विलासोदेव अपन करबे करता। जखन अपन परिवारक निन्दा केनाइ शुरू करब तखन ओइ बीचमे टेँढ़-सोझ करैत चलब जइसँ गोटी नीक जकाँ बैसत...। निशाकान्त बजला-

“से की भयार?”

एक तँ विलासदेवक मन राधारमणपर जरले छेलैन तैपर भाँगक निशा सेहो नीक जकाँ चढ़ि गेलैन। बमछैत बजला-

“भयार, बेटा-बेटी केतबो पढ़ि-लिखि लिअए मुदा जँ ओ माता-पिताक विचारमे नहि रहल तखन ओकर पढ़बक कोन मोल रहल।”

विलासदेवक विचारमे बीह फाड़ैत निशाकान्त बजला-

“भयार, नहि बुझलौं अहाँक विचार। बेटा-बेटीकेँ माए-बापक विचारमे रहब, कोनो कि नव विचार छी। सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि आ आगूओ सभ दिन होइत रहत। शास्त्र-पुराण कि कोनो झूठ कहने अछि।”

निशाकान्तक विचारसँ विलासदेवक मन जेना आरो कड़ुआ गेलैन तहिना बजला-

“भयार, की कहब! राधारमण ओही दिन चित्तसँ उतैर गेल जइ दिन अपना मने विवाह कऽ लेलक। अहीं कहूँ जे जैठाम बीस लाख रुपैआक कारोबार छल, माने बीस लाख रुपैआ दहेजमे दऽ रहल छल। ओ परिवारकेँ घाटा लगौलक कि नहि। भैयारीमे लोकक नेत भाइये देखि ने घटै छै।”

ओना, निशाकान्तकेँ बुझल छेलैन जे विलासदेव आ राधारमणक बीच वैचारिक मतभेद छैन, मुदा तइ सभसँ अनबुझ बनि निशाकान्त गोटी चालैत बजला-

“नीक जकाँ नहि बुझलौं भयार?”

विलासदेव बजला-

“राधारमण जखन आई.ए.एस.क परीछा पासो ने केने छल, तइसँ पहिलुके बात छी। ओकर विवाह करैक विचार भेल। बुझले अछि जे तीनू

भाँइक भैयारीमे ओ सभसँ जेठ अछि। अपना जीबैत जँ तीनू बेटाक विवाह-दान नइ कऽ लेब, आ अपने कोनो राजा-दैब भऽ गेल तखन तँ अनेरे ने मुइला पछातियो एकटा कलंक कपारपर चढ़ले रहत जे फल्लाँ अपना धिया-पुताक बिआहो-दान ने करा सकल। अनके भरोसे जनमौने अछि।”

सह दैत निशाकान्त बजला-

“ई की कोनो अहींटा-क संग होइत। सभकेँ एहेन कलंक लगिते छै। समाजक मुँहकेँ कियो रोकि देत।”

निशाकान्तक बात सुनि विलासदेवकेँ बुझि पड़लैन जे भयार अपन विचारानुकूल विचार दऽ रहल छैथ। तँए आरो सभ बातकेँ किए ने बिकछा-बिकछा विचार लऽ ली...। विलासदेव बजला-

“भयार, की कहब! बेटाक किरदानीसँ समाज हमरापर हँसि रहल अछि मुदा अकलहूथ बेटा-ले धैनसन..!”

विलासदेव शब्दक गहींर पन्ना ताकि जहिना चौरीमे (माने गहींरगर खेतमे, जइमे पानि बसैत होइ आ ओइमे अनेरूआ केशौर फड़ैत होइ, भलेँ ओकर ऊपरका खोंइचा देखैमे कारी लगैत हुअए मुदा ललौन सेहो होइए) केशौर उखाड़ि खाइत तहिना निशाकान्त अपन पन्ना उखाड़ि बजैक मन बनौलैन मुदा तहीकाल सुनयना चाह नेने विलासदेव लग अबै छेली कि हिरणीक आँखि जकाँ निशाकान्तक आँखि चमैक उठलैन। सुनयनाकेँ देखि निशाकान्त बजला-

“भयार, घरवाली देलैन तँ भगवान हमरा देलैन। जहिना सुनै छिऐ ने जे जखन समुद्र मथन भेल, जइमे विष-अमृत दुनू निकलल। परोसनिहार वारीक केहेन जे किम्हरो लपक-लप अमृत परैस देलक आ जखन सठि गेलै तखन लपक-लप विष परसलक। सहए भेलैन हमरो घरवालीकेँ बनबैकाल विधाताकेँ। गणेशजी जकाँ जखन नमहर पेट आ नमहर माथ देलखिन तखन ओही आकारक ने आँखियो दितथिन, तेहने घरवाली हमरो कपारमे लिख देलैन।”

ओना, विलासदेव भाँगक निशामे उधिया लगल छला तँए

निशाकान्तक बात नीक लगै छेलैन मुदा सुनयनाक मन कडुआ उठलैन। कडुआ ई उठलैन जे ऐठाम हम दुनू परानी माने पति-पत्नी छी मुदा निशाकान्त तँ से नहि अछि। सृष्टिक जे रचना-प्रक्रिया अछि एहेन बात बजैक की प्रयोजन। बढ़ियाँ बात जे दुनूकेँ दोस्ती छैन, अपना जगहपर छैन, केना धिया-पुतामे लोकक आम-लताम चोरा कऽ तोड़ै छला, तइसँ हमरा कोन मतलब। मतलबक बात तँ ई अछि जे बुढ़हाकेँ बेटापर तामस-पीड़ा चढ़ल छैन, तेकरा समरस करैत दुनूक बीच समभाव पैदा करैक ने छैन। सुनयना बिना किछु बजने, दुनू कप चाह रखि चोटे आँगन दिस घुमि गेली।

सुनयना आँगन पहुँचलो ने छेली कि सुखदेव आएल। सुखदेवकेँ देखिते विलासदेव बजला-

"भयार, गाहीक-गाही बेटा भगवान भलेँ नहि दैथ मुदा जँ एकोटा बेटा श्रवण कुमार सन भऽ जाए तँ बुझी जे दस हजार बेटाबला राजा सगरसँ नीक। बेटा-बेटीक जन्म माए-बाप दइए मुदा माता-पिताक मृत्युक भार तँ बेटे-बेटीक सिर पर रहैए। एक सीमानपर हमरा खुट्टा गाड़ि देलैन। हम तँ ओतबे दिनक ने जवाबदेह भेलिऐ, जाबे आँखि तकै छी। से जँ बाँहि पुरैबला बेटा भऽ जाए तँ वएह ने नर्को-स्वर्गक दुआरि लग तक पहुँचा सकैए। ई नहि ने जे मुहमे ऊकसँ आगि लगा उतरी तोड़ि फेक दिअए तइसँ ओ श्रद्धाक पात्र भेल।"

अपन सुतरैत शतरंजक गोटी देखि निशाकान्त बजला-

"भयार, कोनो हम फुसि बजै छी सेहो बात नहि अछि। दुनियाँ जनैए जे जहिना अहाँक पिताकेँ पचास बीघा जमीन छेलैन तहिना हमरो पिताकेँ रहैन। दुनू गोरेकेँ गामक मालिक लोक बुझै छेलैन, बेर-कुबेर, दू-सेर आ दू-टाकासँ ठाढ़ो होइ छेलखिन। मुदा देखिते छी जे तेहेन करांगकुल भाए सभ भेल जे अखन तीन बीघापर आबि अँटकल छी। मुदा पिताक अमलदारी-समैयक खानदानी मलिकाना दोस्ती तँ दुनू गोरेक बीच अछिए।"

निशाकान्तक विचारकेँ विलासदेव अपन विचारमे पुरबैत बजला-

“भयार, राधारमण गामसँ अपन परिवार लऽ कऽ दुनियाँ निकलल तँ निकलल। गामक सम्पैत तँ हमर भेल। जाबे हम जीबै छी ताबे तक जहिना माए-बापक जिनगीमे सुख भोगलौं तेहने सुख ने बेटो-बेटी तहिना पुरबए, सएह ने चाहियै। भलेँ नै कमाइ-खटाइए तँ की हेतइ। माए-बापक सेवा तँ करैए। अखन जे जमीन हम बेचब, तइमे एक हिस्सा माने तिहाइ जमीन तँ राधारमणेक जेतइ। तइ ले ऐ दुनू भाँइ–सुखदेव आ वामदेव–क की बिगड़त।” मुँह चटपटबैत विलासदेव आगू बजला-

“भयार, आइ जे सुखदेव भाँग पीयौलक एहेन जँ सबदिन पियाबए तखन ने।”

तैबीच सुखदेव बाजल-

“चाचाजी, मलिकाना दोस्ती की कहलिऐ?”

अपन चालक चालबाजी पकैड़ चलाक जकाँ चलाकीक डारिपर सँ निशाकान्त सुखदेव दिस तकैत बजला-

“बौआ, जहिना तूँ भयारक बेटा छुहुन तहिना हमरो भयार-भातिजे ने भेलह। बेटा-भातीजमे कोनो अन्तर होइए। जहिना लोक अपन बेटाकेँ बुद्धिपरक विचार दैत बुधियार बनबए चाहैए तहिना ने हमहूँ चाहब। तहूमे तँ जे आइ भाँग पियौलह से तेहेन पियौलह जे मन शिवजी-महादेवक दरबारक दरबारीक रूप पकड़ा देने अछि, तैठाम हमरा अपनो तँ अपनत्वक भार माथपर आबिये गेल किने?”

निशाकान्तक अलंकारी भाषाक अर्थ सुखदेव नहि बुझि पौलक मुदा शब्दक तुक-तकिया सुनि ताक-तकैत तकनहार तँ भइये गेल। बाजल-

“चाचाजी, जहिना अंगदकेँ–माने रामायनिक बालिक बेटा–केँ, सुग्रीव सन चाचा भेटलैन जइसँ रामक दर्शनक संग सुग्रीवक साम्राज्य स्वीकारि लेलैन तइसँ अहाँ भिन्न हमरा बुझै छी। तहूमे ज्ञान-रूप धारमे नहानक बेर। ओना, लोकक बीच ईहो चलैन अछि जे कुघाट-सँ-कुघाटक केहनो कुघटिया किए ने हुअए मुदा मुँहक ज्ञान तँ दैवी ज्ञान छीहे किने तँए ओकरा ग्रहण करैमे राहु-केतुक कोनो दोष नहि।”

ओना, सुखदेवक विचार सुनि निशाकान्त खुशियाएल मुस्की मारि-मारि तरे-तर मुसुक मुस्की मारै छला। जेकरा सुकदेव अपन विचारक बड़हपन बुझि रहल छल, मुदा निशाकान्त मने-मन भिन्नाक छिन्ना सेहो देखि रहल छला। बजला-

"बाउ सुकदेव, मलिकाना दोस्ती भेल, जेना हमरा-तोरा परिवारक बीच अछि।"

निशाकान्त अपन ओ बंशी पाथए चाहि रहल छला जइ बंशीमे दुनू दिशा घाव बनल रहैत। चाहे उनटा लागे आकि सुनटा लागै, ताकि पुनटा करब असान हएत। पुनटा भेल पुण्यपूर्ण।

तैबीच सुखदेव बाजल-

"चाचाजी, तइसँ की भिन्न हमरा बुझि रहल छी। हम तँ जहिना पिताकेँ बुझै छिऐन तहिना अहूँकेँ ने बुझै छी।"

सुखदेवक विचार सुनि निशाकान्त मने-मन चपचपेला। चपचपेला ई जे जहिना भारी वजनबला रंगा (रांग) केँ पानि जकाँ आगिपर पघिला कौड़ीक *(समुद्री कौड़ी, जइसँ पचीसियो खेल आ तांत्रिक सभ सेहो चित्ती-कौड़ी भाँजि साँपकेँ पकड़ैए आ बाल-बोध खेलबो करैए।)* मुहमे देलापर ठंढ़ाइते भरिया जाइए तहिना भरियाइत निशाकान्त बाजए लगला-

"बाउ..!'

तहीकाल वामदेव सेहो पहुँचल। वामदेवकेँ देखिते निशाकान्त वाउए 'वाउए'पर अपन विचारकेँ मनमे मोड़ि अँटका लेलैन। मन मानि गेल छेलैन जे एक तीरसँ दू शिकार किए ने पकड़ब। भाय महाभारतक लड़ाइमे धनुषसँ पहिने एकतीर निकलै छल आ जेना-जेना आगू बढ़ैत जाइत छल तेना-तेना संख्यामे वृद्धि होइत-होइत दस-दस हजार भऽ जाइ छल, तैठाम अपने भलेँ अर्जुन कि भीष्मपितामह नइ छी, मुदा एकटा मनुक्ख तँ छीहे। तखन दुइयोटा शिकार नइ पकैड़ सकब। भलेँ करूणा रोग महामारीए किए ने छी मुदा व्याकरणक तँ गणेशजी जकाँ करूणाक जानकार अछिए, तँए एकलैंगिक बनि बिमारीकेँ अधा-अधी तँ अपने कऽ नेने अछि तैठाम जँ अधेक पाछू सौंसे दुनियाँ-बेहाल छी तेकर हाल की अछि, सेहो ने सभ

सुनत। मुस्की दैत निशाकान्त बजला-

“बौआ, कमलपुर गाममे अपने दुनू गोरेक परिवार सभसँ धनिको आ सभसँ इज्जतदारो पिताक अमलदारीमे रहल। ओही बराबरीक दोस्ती दुनू परिवारमे अछि। जहिना तोहर बाबा आ हमर बाबू एकठाम बैस खेबो-पीबो करैथ आ सभ तरहक काज-उदममे हमरो परिवारक सभ अबै छेला आ हमरो ऐठाम जाइ छेला, पनरह-पनरह दिन रहै छेला। मुदा आइ तँ ओ जुग नहि रहल, नवका-नवका लोको भेल आ लोकक संग सम्पैतियो भेल आ तैसंग नव-नव विचारो तँ भेबे कएल अछि। जहिना तोहर पिताकेँ माने भयारकेँ अपने परिवारक फिरिसानीसँ पलखैत नहि होइ छैन तहिना हमरो भइये गेल अछि। तँए कनी आबा-जाही कमि गेल अछि।”

निशाकान्तक विचारमे विलासदेव अप्पन बड़हपन देखि रहल छला, तँए सुनन्तू बेटा लग बजन्तू बनि बजला-

“भयार, की कहूँ। बिनु कमेने-खटेने जेहेन पितृभक्त बेटा होइए तइमे छदामो भरि कमी दुनू बेटामे–सुखदेव आ वामदेव–नहि अछि। ओना, मनमे कोनो एहेन भरमाबैबला भ्रमरक बास भऽ गेल होइ, से तँ हनुमान जकाँ कियो छाती फारि नहियेँ देखए देत, से तँ सम्भवो नहियेँ अछि। भाय, छाती तँ छाती छी, कखनो अपन छत्ती बनि छत्रवास बना बास करैए तँ कखनो छातीमे मुक्का मारि बेटो-मृत्युक संतोख सेहो करते अछि। मुदा किछु अछि तैयो तँ दुनू बेटा तँ हमरे ने कहौत।”

ओना, विलासदेव अपन जिनगीक नापसँ बाजल छला, किए तँ एकटा कचहरिया संगीक विचार मनमे जेना बैस गेल छैन तहिना बेर-बेर बजै छैथ जे कोट-कचहरीक खेल जहिना जिनगी भरि एक्के शब्दमे अटकौने रहैए तहिना ने परिवारोमे होइए। दस-बीस बर्खक जिनगी तँ लोक टिटहीक टाँहियोसँ निमाहि सकैए। जेहेन जे करैए से तेहेन पबैए। से कि कोनो हमरेटा बुझल अछि आकि सभकेँ बुझल छै। आब कियो अक्लबहर बनए आकि अकलथूक। से तँ ओकर ने काज भेल...।

विलासदेवक बात सुनि निशाकान्तक मन तरसा जकाँ धीरे-धीरे तरसए लगलैन, मुदा दुनू भाँइक अगवानी देखि निशाकान्त अपन तरसकेँ

तरसेमे समेटि मनकेँ मारि चुपचाप, उजरा बौगुला जकाँ लटकलहाक पाछू दौड़ैत रहैए तहिना निशाकान्त सेहो अपने जिनगीक समरूप अपन भयारोकेँ बनबए चाहि रहल छला। किए तँ जहिना अपने निशाकान्त तीनू भाँइक भैयारीमे गामक पनचैतीसँ लऽ कऽ कोट-कचहरीक मर्दन करैत पचास बीघाक फाँट सत्तरह बीघा होइए तैठाम बनरबाँटमे पड़ि तीन-तीन बीघापर तीनू भाँइ ठाढ़ छैथ। भाय, धनेक उमकी ने धनीकक धनकेँ ढाहैए। तँए कि मानो-मरजादा तइ लागल ढहि जाइए? से तँ नइ ढहैए, ओ तँ जुआनी मंत्रक सूत्र छी जे जेहेन पकड़ैए से तेहेन पबैए।

निशाकान्त बजला-

"भयार, बापक हम बड़ दुलारू बेटा छेलिऐन। ढेरबा तक माने जखन दुरागमन भऽ गेल तहिया तक, जहिना माइयो तहिना पितोजी सभदिन बकलेले-ढहलेल कहैत रहला आ तैसंग किछु-किछु सिखैबतो छेला। मुदा आइ जँ अपन पान-सात बर्खक कोचिंगक बेटा-पोताकेँ किछु अढ़ेबो करबै आकि सिखेबो करबै से अहाँक बोलो-बाइन बुझत तखन ने। ओइ अबोधक कोन दोख अछि। दोख अछि ओकर माए-बापक ने जे बच्चाक जिनगीक हिसाबसँ अपन जिनगीक रस्ता नहि बना सकला।"

जहिना अलबौक विलासदेव तहिना दुनू बेटा, तैठाम निशाकान्त सन उपदेशक। जे अपने परिवारकेँ ढाहि अपन पैत्रिक सम्पैत–खेत-पथार–केँ पचहत्तैर प्रतिशत दान जकाँ गमा चुकल छैथ, जीवनमे ऐसँ बेसी भइये की सकैए। पचीसो प्रतिशत तँ अपनो जीवन-ले लोककेँ चाहबे करी। निशाकान्तक मनमे ईहो उठैत रहैन जे निसभेरो राति, माने अन्हारक घनघोरो समयमे तँ शुक्ल पक्षक इजोरियाक चान जकाँ ओहनो समयमे ने चान्दनी राति बना चानिपर चमैक अपन परिचय दैते अछि। तेतबे किए, घनघोर अन्हारमे सेहो ज्ञानचक्षुसँ प्रकाशपूँज प्रकाशमान होइते अछि।

अपन टुटैत जिनगी आ जिनगीक विचारधारा ग्राहकक ग्रास बनियेँ गेल छैन, मुदा जहिना साँपक मुँहमे पड़ल बेंग, जेकर आधासँ बेसी भाग किए ने मृत्युक अन्तक सीमा पार कऽ देने होइ, मुदा जँ मुँह उघार रहत माने साँपक मुहसँ बाहर रहत, तहूकाल जँ कोनो फनिगाकेँ उड़ैत देखत तँ लपकबे करत। एहने अवस्थामे पड़ल विलासदेवक जिनगी बनि गेल छैन।

जिनगी सोल्हन्नी रोगग्रस्त भऽ गेल छैन। शारीरिक रोग जे होनि मुदा मानसिक रोगसँ मरनासन्न भऽ गेल छैथ। मुदा तैयो...। मौखिक परीक्षा जकाँ निशाकान्त बजला-

"बौआ, भोरका पान जकाँ मुँहक पान रसविहीन भऽ सिठिया गेल अछि तँए पहिने एक गिलास पानि पीयाबह, पछाइत पानो खुअबिहह। नइ तँ एक भाँइ गिलास-लोटामे पानि आनह, जइसँ भयारो पीब लेता आ एक भाँइ पान लगाबह। पानक सभ समान लगमे छहे।"

जहिना दुनियाँमे कियो पहिने अपन ज्ञान दान बेटाकेँ करए चाहैए तहिना ने अनका अढ़बैसँ माने काज अढ़बैसँ पहिने बेटाकेँ अपन बुझि अढ़ैबतो अछि। ओना, दुनू बेटाक–सुखदेवो आ वामदेवो–क मन दुनू भयारक बात-विचार सुनि दहला-भँसिया रहल छेलैहे। तैबीच सुखदेव ओम्हर पानि आनए आँगन गेल आ इम्हर विलासदेव फुसफुसा कऽ बजला-

"भयार, ऐ अबन्ड बेटाकेँ माने वामदेवकेँ, सदिकाल सिखबै छिऐ जे बौआ माए-बापक उद्धार जेठके बेटासँ होइ छै आकि छोटके बेटासँ। राधारमणक जे हाल अछि से देखबे करै छहक, तखन तँ तोंही ने बँचलह। बीचक जँ राजा सगर जकाँ दसो हजार बेटा रहत तेकर कोनो मानि अछि। एते तक कि जिनगी भरि बाप-माइक देहपर थूको फेकत तेकरो मानि नहियेँ अछि।"

पिताक बात सुनि वामदेवक नजैर उठल। जे निशाकान्त परेखि लेलैन। अपन नजैरमे निशाकान्त नजरपन भरैत, माने नजैरिक पानि भरैत बजला-

"भयार, सासुरमे जे मोहरमाला देने अछि, तेकर जानकारी समाजो आ परिवारोकेँ अखने दऽ दियौ जे वामदेवे मुँहमे आगियो देत आ श्राद्धो-कर्मक भार ओकरे दइ छिऐ। तँए अपनबला मोहरमाला वामदेवक भेल।"

पानि पीब पान खा दुनू भयार–विलासदेव आ निशाकान्त–पुन: परिवारक गप-सप्प शुरू केलैन। अखुनका एस्टाएल नहि, विग्रहक टाइल मारैत निशाकान्त बजला- "भयार, गाममे अहाँ-जोकर कएटा बाप भेल

अछि जे अपन बेटाकेँ आई.ए.एस. बनौलक!”

अपना जनैत निशाकान्त टाइल मारि बाजल छला मुदा तीनू बापूत–विलासदेवक संग आ दुनू भाँइ सुखदवो आ वामदेव–क मनमे राधारमणक प्रति जे धारण धऽ नेने छल, ओ आरो धराह बनि गेल। जइसँ विपरीत भावक जन्म तीनूक मनमे जगि गेल। अखन तक निशाकान्त अपन परिवारक तीनू समांगक जिनगीक कथा तेना रत्ती-बत्ती सुना चुकल छला जइसँ रामायणिक राम-लक्ष्मणक भैयारीक सम्बन्ध नहि बनि सकल, बनबो केना करैत एक राम पिताक दंश झेलनिहार, दोसर दहेजक दंश झेलनिहार भेला। तैठाम सीताराम केना राधारमण बनि सकैए। राधारमण-ले तँ किछु आराधए पड़ै छै किने।

विचारक द्वन्द्व तीनू बापूतक मनकेँ तेना ने घुड़िया-पुड़िया रहल छल जे तीनूक बकारे हरण भऽ गेल छल। पगलाएल राम जहिना चिड़ै-चुनमुनीक संग गाछो-बिरीछकेँ सीताक परिचय पुछए लागल रहैथ। जे ‘हे खग, हे मृग मधुकर श्रेणी, तुम देखे सीता मृगनयनी?’ तहिना शान्त वातावरण देखि निशाकान्त दोसर टाइल मारैत बजला-

“भयार, आब अहाँक भाग्य जगि गेल। ‘बढ़हि पुत्र पिताक धर्मे’ अहाँक सोल्होअना धरम राधारमणमे चलि गेल जइसँ ओकर भाग उग्र भऽ जगि गेल आ दुनू भाँइ–सुखदेव-वामदेव–क भाग्य सेहो ओकरे मे माने राधारमणमेमे चलि गेल, फलाफल दुनू भाँइ बिनु पानि चढ़ल लोहा जकाँ कहियौ आकि कुम्हारक आवाक अध-पक्कू वर्तन जकाँ कहियौ, कँचकुहक कँचकुहे रहि गेल।”

‘कँचकुह’ सुनि वामदेव बाँहिक शर्ट समटैत बाजल-

“भयार काका, अहाँ दुनू भयार जँ पीठपर ठाढ़ रहब माने पीठपोहू बनल रहब तँ एक भैयारीकेँ के कहए जे सत्तरहटा भैयारीकेँ सीखा सकै छी।”

ओना, निशाकान्त मने-मन बुझैत जे टीनक गरमी केतेकाल। कम-सँ-कम पहिने भानसो करैजोग बरतन बनह तखन अपनाकेँ खान-द्रव कहाएब। छी कागज जकाँ आ अपनाकेँ गमै छी जे सोन-चानी जकाँ हमहूँ

स्वर्ण द्रव्ये छी। मुदा निशाकान्तक अकास चढ़ल मन एकाएक धरतीपर अतरलैन। उतैरते मनमे एलैन जे केकरो कहने टीन द्रव्य नहि भऽ सकैए सेहो तँ नहियेँ अछि। समूह रूपमे टीनोमे भानस होइते अछि। कनी ओकरा आगिपर चढ़ा, जखन ओ आगिये जकाँ लाल भऽ जाए तखन हाथक आँगुरसँ छुबि कऽ देखियौ जे आन द्रव्य, भलेँ ओ सोने किए ने होइ, ओइसँ कम शक्ति टीनोमे छै। उपदेशक जकाँ निशाकान्त सुखदेवो आ वामदेवोक उपदेशी बनि भयारकेँ कहलैन-

“भयार, दुनियाँ जे बुझह, मुदा अपनो तँ इमान-धरम अछिए, चाहे अपन बेटा-बेटी हुअए आकि दुनियाँक, मुदा अपन जे मानवीय कर्तव्य अछि, तेकरो जँ उठा कातमे फेक देब, सेहो तँ नीक नहियेँ भेल।”

अपन भारक भारपन विलासदेवकेँ सेहो बुझि पड़लैन। जइसँ मनमे एकटा स्वर्ण-रूपा विचार अनायास जगि गेलैन। बजला-

“भयार, गणेशजी सन गुरू आ अष्टावक्र सन ज्ञानी कियो किए ने होथि मुदा वेद विहीत विचार जे ‘पिता पहिल गुरू छैथ’ तेकरा कियो झुठिया देत?”

नहलापर दहला फेकैत निशाकान्त बजला-

“भयार, ताशक गेम-गेम खेलमे भलेँ नहलापर दहला फेक दहला दियौ मुदा ‘ट्वेन्टी एट’मे नहले दहलाकेँ नमबैए। खाएर समय पेब अहिना टिटही अकासमे टिटियाइए तइसँ लोककेँ कोन मतलब। मतलब तँ एतबे ने अछि जे अपन परिवारक नमहर इतिहास अछि, जहियासँ मनुक्ख घर बना परिवारक संग रहए लगला तहियाक परिवार छी।”

निशाकान्तक विचारमे विलासदेवकेँ इतिहासक कोन पन्ना भेट गेलैन से तँ विलासदेवे बुझता, मुदा मनक चपचपीमे चपचपाइत मुस्की दैत बजला-

“भयार, सभ दिन दुनू भाँइकेँ कहै छिऐ जे ‘बौआ, हजारो धर्मस्थान आकि हजारो सरोवरक घाट पर किए ने नहाएल होइ, मुदा बेटा-बेटी लेल माए-बापक सेवा सभसँ पैघ धर्मक काज छी। पिताजी जखन जीबै छेला, भरि दिनमे तीनबेर मद्यपान सेहो करै छेला। समयसँ पहिने मुस्ताइज भऽ

हुनका मद्यपान करबैत रहिऐन। ओ त्रिकालदर्शी छेला। जखन मन उदार भऽ जाइ छेलैन तखन कहै छेला- 'बौआ विलास, जहिना तूँ सेवा करै छह तहिना तोरो पचास बीघा जमीन अरैज देने छिअ। मरैबेर मड़ुओ भरि मनमे सोग-पीड़ा ने अपने रहत आ ने तोहर रहत। जँ कियो कहनिहार कहत जे अहाँक परिवार देशक भार बनल अछि। से ओकरे कहने भऽ जेतइ। जहिना अपन देश छी तहिना ने अपन दिनो-दुनियाँ अछि, जइ पाछू लागि अपन जीवन धारण केने छी।"

दुनू भाइ–सुखदेवो आ वामदेवो–क मन तेहेन मिथि-मालिनिक मथानीमे मथा गेल जे जहिना दुनियाँक हजारो बाटमे हजारो सुख-दुख नचैत अपन छर्त्त पकैड़ लइए तहिना छर्त्त पकड़ैत सुखदेव बाजल-

"भयार चाचा, अहाँक सोझामे कहै छी जे जहिना सभ अपन माए-बापक माने माता-पिताक सेवा दुनियाँमे कऽ रहल अछि तइसँ की हम कम छी। जहिना दुनियाँमे देखै छी तहिना करै छी, तइ ले जँ पिताजी मने-मन तकलीफ सहता से किए सहता। हुनको ने बुझए पड़तैन जे जखन आब मोबाइलेसँ पढ़ौनी सेहो शुरू भऽ गेल अछि, तखन स्कूल जेते खुजल तेकरो हिसाब नइ होइ सेहो केहेन हएत।"

ओना, धारक धारामे जहिना खत्ता-खुत्तीक सड़ल-जमल जमौठ पानि किए ने मिलैत होइ मुदा धाराक प्रवाहमे ओकरोमे एहेन गतिक संचार तँ भइये जाइ छै जइसँ ओकरोमे शुद्धता आबिये जाइ छै। अही अनुकूल सुखदेव बाजल। किए तँ जीवनक एक परिस्थिति ओहन अछि जे अभावक जिनगीमे लोक नहि पढ़ि पबैए। मुदा जे परिवार आर्थिक दृष्टिएँ सम्पन्न अछि, जइ परिवारमे आई.ए.एस. भऽ सकैए, तैठाम सहोदरे दोसर-तेसर भाए श्रमचोर केना बनि गेल अछि। जे सुखदेव अपनो ने बुझैए। जहिना ग्रहन लगलापर वा अकासमे सुर्ज-चान-तारा वा पानिक वादलक घटमान देख, देखनिहार ऊपरे-घाड़े ने देखैत रहि जाइए। ओ थोड़े बुझैए जे सुर्ज केना कतियाएल देखि पड़ैए आ कि आने ग्रह-नक्षत्र किए कतियाएल। ओ तँ वएह देखि सकैए जेकरा हृदयमे ज्योतिषक ज्योति प्रज्वलित होइन। कहैकाल तँ सभकेँ सभ कहै छिऐ 'श्रवण कुमार जे माए-बापक सेवा केलैन ओ इतिहास-पुराणक अद्वितीय घटना छी।' मुदा श्रवण कुमारक

जीवनधारा आ माता-पिताक जीवनधारा की छेलैन, केहेन छेलैन आ केते प्रवाहित छेलैन सेहो ने सबहक समक्षक प्रश्न भेल। खाएर जे भेल ओ त्रेता जुगक घटनामे चलि गेला। आब कि गुरुद्वारमे बौगुला जकाँ धियान करैक बेवहार रहल, आब तँ मोबाइलसँ ज्ञानक संचरण हुअ लगल अछि।

निशाकान्त मने-मन विलासदेवोक आ दुनू भाँइ–सुखदेवो आ वामदेवो–क नब्ज नीक जकाँ पकैड़ नेने छला। झूठ केना सच बनैए आ सच केना झूठ बनैए, अही सीमापर अपनाकेँ ठाढ़ करैत निशाकान्त बजला-

“भयार, ई देहे व्याधिक घर छी।”

बजैक क्रममे निशाकान्त वैचारिक विषय तँ रखि देलैन, मुदा अपन मिसियो भरि टिप्पणी नहि देलैन जे अही व्याधिसँ ने मनुक्ख व्याधाक रूप पकैड़ व्याधिसँ निवृति भऽ सकैए। आकि जिनगी बनौने छी चाहक दोकानदारक आ अकासमे उड़ैत इंजन केना लसैक गेल? दिन-राति जँ से चिन्ता करत तखन ओ ई केना बुझत जे समाजमे माने गाममे, पचास रुपैआ आमदनीक परिवार अपन भेल तँए हमरा दुनू दिस देखए पड़त। एक दिस आमदनीक बढ़ोतरी केना हएत तँ दोसर दिस अपन परिवारकेँ अपना आमदनीपर असथिर करैक सेहो अछि। जँ से नहि हएत तँ परिवार पाओल जाएत किने।

गप-सप्पकेँ अन्तिम सीमा दिस बढ़बैत निशाकान्त बजला-

“भयार, हम जहिना अपना बेटा-बेटीकेँ बुझै छी तहिना अहूँक धिया-पुताकेँ बुझै छी। भलेँ दुनू भाँइ–सुखदेवो आ वामदेवो–मानए वा नहि मानए, मुदा अपनो तँ किछु कर्तव्यकेँ निमाहैत बजलौं। आब अबेर भऽ गेल। पता लगल जे राधारमण जा रहल अछि, कहुना भेल तँ बेटे-भातिज ने भेल, घरसँ जखन निकैल दुनियाँ दिस बढ़त तँ कम-सँ-कम एतबो असीरवाद देब जरूरी अछिए किने जे कहितिऐ, बौआ गाम-घरक चिन्ता मिसियो भरि नहि करिहह। हम सभ अपन बुझि लेब।”

राधारमणक प्रति निशाकान्तक प्रतिक्रियाक आकलन तीनू बापूत विलासदेव एक-दोसर दिस देखि-देखि करए लगला। मध्यम वर्गक

परिवारक मनुक्खकेँ सामाजिक-आर्थिक दुनू दृष्टिएँ तेना वैचारिक ढाँचामे ढालल गेल जे ओ श्रमहीनक संग भोगी-विलासी सेहो बनि गेल। जइसँ परिवारक ढाँचामे व्यवधान उपस्थित भेल आ धीरे-धीरे मृत्युक कगारपर पहुँच गेल।

एक तँ कचहरिया लोक निशाकान्त, तहूमे गामक सभ जनैत जे निशाकान्त सन इरखादार दोसर गाममे कियो ने छैथ, अपन चौदह बीघा खेत बेचि कोटे-कचहरीक ज्ञान हाँसिल केने छैथ, तैसंग एहेन सेहो छैथ जे सहोदरे भाइक संग सभ किछु केलैन।

सामंजस करैत निशाकान्त बजला-

“भयार, एकटा राजा एकटा जोगीकेँ अपन दुनू बेटाक सेवा करैक भार देलैन। जोगीकेँ विचारैमे धोखा भेलैन, एकटाकेँ अपने जकाँ जोगी बनौलैन, जे अपना घरमे रहत। दोसरकेँ राजसी जीवनसँ मण्डित केलैन। जखन दुनू जुआन भेल तखन जोगी दुनूकेँ राजाक सामने उपस्थित केलैन। हलैस कऽ राजा जोगीकेँ अपन हिस्सामे लऽ लेलैन। अपसोच करैत जोगी घर घुमला।”



शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020

तेसर पड़ाव

भुवनेश्वर एला राधारमणक आइ पनरह दिन छी। जहियासँ राधारमण कमलपुरसँ निकलला तहियासँ अखन धरि गाम बिसैर गेल छला। जे सोभाविको अछिए। किए तँ नव-नव जगहक संग नव-नव काजोक बेवस्था छेलैन्हे।

जखन राधारमण घरसँ निकैल टेम्पुपर अपनाकेँ सवार केलैन तखनेसँ मनक विचार वर्तमान बास करए लगलैन, तँए घरक सभ किछु बिसैर अपन जीवन-यात्रा प्रारम्भ केलैन। ओना, नव राज्यक नव जगह भुवनेश्वर छीहे, मुदा ओहनो नव जगह भुवनेश्वर नहियेँ अछि जेकरा कमलपुरक लोक नहि जनैत होइथ। किए तँ छअ मासे बेंतक छड़ी नेने गाम-गामक लोक जगरनथिया गीत गबैत पीढ़ी-दर-पीढ़ी जगरनाथ जाइत-अबैत रहला अछि। तइमे कमलपुर छुटल रहल सेहो बात नहियेँ अछि। तँए भुवनेश्वर अपरिचित जगह कमलपुर-ले नहियेँ अछि। मुदा राधारमण-ले से नहि छैन, तेकरो केना नकारल जा सकैए। गप-सप्पक क्रममे कमलपुरबला एते जनिते छैथ जे भुवनेश्वर उड़ीसा राज्यक जिलो मुख्यालय छी आ राजधानियोँ छीहे। तही जिलामे जगरनाथपुरी सेहो अछि आ समुद्रक कातमे सुर्ज मन्दिर–कोनार्क– सेहो अछिए। तैसंग कबीरदासक खन्ती समुद्रक कातमे सेहो गाड़ल छैन। जगरनाथो बाबा तेहने छैथ जे सभ दिन नव अन्नक प्रसादो ग्रहण करिते छैथ।

भुवनेश्वर पहुँच राधारमण अपन विधिवत जीवन धारण केलैन, जइसँ सरकारी सभ सुविधा भेटबे केलैन, तँए कोनो असुविधा नहियेँ भेलैन। मुदा सभ बेवस्था करैमे राधारमणकेँ एक पख लगिये गेलैन। आइ पनरहम दिन राधारमणकेँ गाम मोन पड़लैन।

भाय, जीबैतमे लोक माए-बापकेँ किए ने बिसैर जाइ, मुदा कोनो चोट लगला कि अवघात भेलापर वा आफद-असमानी एलापर लोक सभ

किछु बिसैर जाइए, एते तक कि रक्षक भगवानकेँ सेहो बिसैर जाइए, मुदा 'माए-गइ-माए', 'बाप-रौ-बाप' मुहसँ फुटबे करैए।

गाम दिस विचार बढ़िते राधारमण पत्नीपर नजैर खिरौलैन। पत्नीक नव रूप नव चेहरामे देखि पड़लैन। अपन बैसारीक महत्-केँ देखैत, पत्नी जैठाम बच्चा-ले दूध औंट रहल छेली, तइ लगमे पहुँचला। सुवासिनीक, दू सालक बच्चा सुचिता ले, दिन भरिक दूध तैयार होइते मन (विचार करैक) सभ छान-बान तोड़ि विचरण करैत अपन जन्मसँ आइ धरिक जीवनमे दौड़ए लगलैन। मुदा जहिना ओइ दिन माने पिताक मृत्यु दिन, सुवासिनी एतबे बुझने छेली जे माता-पिताक मृत्युमे बेटा-बेटी केना कानैए; तहिना कानि धीरे-धीरे बिसरए लगली। ओना, आइ सुवासिनी ओइ घटनाकेँ जीवनक एकटा घाट बुझि जीवन-बाट बनबए चाहि रहली अछि, तँए विचारक अपन धुन मनक विचारकेँ मथि रहल छेलैन...। तैबीच पत्नीकेँ अपन विचारी बुझि राधारमण बजला-

"गामसँ बहरा गेलौं मुदा गामक किछु ने केलौं..! समाजो अड़ियाति कऽ विदा केलैन मुदा एतबो उपराग कियो ने देलैन जे गाममे अहाँक कएल किछु ने अछि। जे ता-जिनगी मन रहैत जाधैर जिनगी रहैत। सेहो ने भेल। आइ मनक बात माने मनमंत्र कहए चाहि रहल छी से सुनब?"

जहिना अकसरहाँ लोककेँ ठोरपर बरी पकले रहै छै तहिना सुवासिनीक ठोरपर पकले रहैन। बजली-

"अहाँक बात हम कहिया नइ सुनलौं जे एना शंकालु भेल बजै छी..?"

ओना, जहिया सुवासिनी आई.ए.क छात्रा छल तहियेसँ राधारमण चिन्हलैन। सुवासिनीक पितासँ, कौलेजक शिक्षक (प्रोफेसर) आ छात्रक बीच जे सम्बन्ध होइए, बस तेतबे राधारमणक सम्बन्ध छेलैन। राधारमणक मनमे एकाएक उठि गेलैन जे गोविन्द बाबूक टुटैत परिवार देखि विचार जगल आकि हुनक मृत्यु? तँए मिरगा जकाँ मन नाचै छेलैन। ओना, नाचबो दू रंगक होइए। पहिल होइए सुर-तान मिला नाचब आ दोसर होइए अनधुन नाचब। मुदा राधारमणक मनक नाच दुनूमे सँ कोनो नहि छेलैन। किए तँ

अखन तक माने गोविन्द बाबू ऐठाम जाइ तक, राधारमणक मनमे कोनो एहेन विचार नहि छेलैन जे केहेन परिवार छैन आ कोन स्थितिमे पहुँचत। आ ने यएह छेलैन जे अपनोमे कोनो तरहक बल (सबल) अछि जे किछु मदैत कऽ सकबैन। अन्होनी जकाँ घटना छल जे एकाएक परिस्थितिक सूत्र राधारमणकेँ अराधक बना देलकैन।

आराधना (संकल्प) सेहो दू रंगक दू परिस्थितिमे कएल जाइए। एक परिस्थिति भेल जे शान्तचित्तसँ कोनो संकल्प (अराधना) करब आ दोसर होइए अशान्त परिस्थितिमे संकल्प (अराधव) करब। राधारमणक दोसर श्रेणीक छेलैन।

पत्नीक मुहसँ माने सुवासिनीक मुहसँ खसल 'शंकालु' शब्द सुनि राधारमण बजला-

"कोनो शंकाक निवारने कहिया केलौं जे शंकालु नहि रहब?"

ओना, विचारक दौड़मे, जे जीवनक संग दौड़ैए, तइ दृष्टिएँ राधारमण आंशिक परिपक्व भइये गेल छैथ जे सुवासिनी नहि छैथ। तेकर कारणो दुनूक अपन-अपन छैन्हे। विद्याध्ययनक क्रममे ध्रुव जकाँ राधारमण अपने मनकेँ संकल्पित कऽ नेने छला जे प्रशासनिक पद तँ गरथाहक पढ़ब छी मुदा एम.ए. करब तँ थाहल अछिए, तँए कोनो कौलेजे वा हाइये स्कूलक शिक्षक बनब तँ गरथाहमे नहियेँ अछि। जखने कोनो काजक फल आ ओइ काजक प्रक्रियाक बोध केकरो भऽ जाइ छै तखने ओकरो अपन बल जगिते छै जइसँ संकल्पक अनुकूल परिस्थित सेहो निरमित होइते अछि, जेकर उपयोग भेलासँ सफलताक सीढ़ी सेहो भेटते अछि। मुदा से सुवासिनीक जीवनमे घटित नहि भेल छेलैन। ओना, परिवारमे ओहन घटना घटित भेले छेलैन जइसँ परिवार मेटा जाइए। कहैकाल समाजमे हजारो समाजसेवी आ हजारो धर्मात्मासँ गाम भरले रहैए, मुदा परिवारो आ बेकतियो केना मेटा रहल अछि, से देखनिहार कियो ने...। जे बात–विचार–राधारमणक मनमे नाचि रहल छेलैन, तँए अनुभवी आ अनअनुभवीक बीचक दूरी मनमे बनले छेलैन। तँए शंकालु हएब सोभाविक भइये जाइए, मुदा सुवासिनीक मनमे सामान्य पति-पत्नीक जे जीवन अछि से छेलैन। जैठाम पतियो बुझै छैथ जे कमजोरसँ

कहलापर माने कोनो आदेश देलापर, जँ नहि करती माने पत्नी नहि निमाहती तँ गरमा कऽ माने जोरसँ कहलापर निमाहबे करती, तहिना पत्नियोँ बुझिते छैथ जे जखन दुनू गोरेकेँ जीवन भरि संगे-संग रहैक अछि, तैबीच जँ कोनो तीत-कसाइन होइए ओकरा सहि लेबा चाही। लोक तँ कोनो संकल्पक (व्रतक) पाछू भरि-भरि दिन सहि लइए, तहूमे अपन मिथिला तँ सहनमा देश छीहे जे हरिवासय सन पाबैन, जइमे तीन दिन सहल जाइए, सेहो लोक करिते अछि।

ओना, सुवासिनीक विचारकेँ राधारमण सेहो मने-मन मापि रहल छला जे अखन धरिक जे हिनकर जीवन रहलैन, तही अनुकूल ने विचारक सभ प्रक्रिया निरमित भेल हेतैन...।

अपन चिन्तन-मननमे राधारमण ओझराए लगला। राधारमणक मनमे उठलैन जे विचारक ओझरी तँ अमती काँट जकाँ झोंझगरो होइए आ खट-मधुर फलो दइयेबला होइए। तैठाम तँ तेहने ने बनि कऽ रहने पार-घाट लगि सकैए, नहि तँ धारक कातमे असगरे बैसल रहब।

अपन आ पत्नीक विचारक दूरी राधारमणकेँ तेना झोंझिया देलकैन जे किछु करबो-ले आ किछु सीखबो-ले बाध्य कऽ देलकैन। ओना, राधारमण एक रस्तासँ चोटी (आई.ए.एस.) पर पहुँच गेल छैथ मुदा जिनगीक दोसर-तेसर हजारो बाट ओहन अछिए जेकरा चोटी धरि पहुँचबैक सामर्थ तँ छैन, मुदा से बुझल-गमल नहि छेलैन। ओना, राधारमण विज्ञानक विद्यार्थी कहियो ने रहला, बस ओतबे रहला जेते हाइ स्कूल तक सामान्य ज्ञानक विज्ञान अछि। मुदा तेतेक तँ पढ़ल छैन्हे। तइसँ एते मनमे गरिये गेल छैन जे कला (आर्ट) आ विज्ञानमे अन्तर बेवहारसँ अछि। जँ कोनो बात वा विचार बेवहारिक रूपमे देखल जाए तँ ओइमे ओते अनुपात अन्धविश्वासक जगह विश्वास लइते अछि...।

एकाएक राधारमणक मन मनुक्खक जीवन लग पहुँच गेलैन। जीवन लग पहुँचते अपन कार्यालय मन्दिर जकाँ देखि पड़लैन। केते लोकक जीवन ओइ मन्दिरसँ माने कार्यालयसँ संचालित भऽ रहल अछि? मन आगू घुसैक ओइ सीमा लग पहुँच गेलैन जइ सीमापर कार्यालयक कार्यकर्त्ता ठाढ़ छल। जिनका माध्यमसँ कार्यालय चलि रहल अछि।

सबहक अपन-अपन कार्यालय, सबहक अपन-अपन काज...। तैठाम अपनो तँ असगरे छी? हँ, एकटा ओगरवाहक रूपमे प्यून अछि। जे काजोमे आ अपन जीवनोमे सहयोग करिते अछि। जखन बारह बजेक दुपहरियामे रौदक तापसँ तपित भऽ मन घुमए लगैए आ काज करैसँ अनिच्छा होइए, तखन ओकरे माध्यमसँ माने प्यूनेक माध्यमसँ ने एकटा दबाइयक गोली मंगा खाइते छी...।

जेना कोनो डकैतीक सुराक भेटने पुलिसक मन खुशी होइए तहिना राधारमणकेँ सेहो खुशी भेलैन। खुशी भेलैन माने राधारमणकेँ मनमे एलैन जे जइ कार्यालयमे छी तइमे सभसँ ऊपर भेलौं, जे एक छोर भेल, मुदा एकर दोसर छोर तँ वएह ने हएत जे ओकर विपरीत अछि। माने जहिना सभसँ ऊपर आई.ए.एस. अफसर भेला, तहिना सभसँ निच्चाँ चपरासी भेल। दरमाहा तँ बीचमे केतेको रंगक अछि, माने स्तरक हिसाबसँ रंग-रंगक। जे अन्तिम सीमा चपरासी लग पहुँच सभसँ कम भऽ जाइए..।

अपन प्यून मनमे अबिते राधारमण सुवासिनीकेँ कहलैन- "आइ पएरे घुमैक मन होइए, से संगे चलब?"

ओना, बिनु विचार केनहि सुवासिनी लगले-मुँह कहि देलकैन-

"किए ने चलब..!"

बजला पछाइत सुवासिनीक मन पाछू हटकए लगलैन। हटकैक कारण भेलैन जे पुरुखकेँ की छै, एकटा लूँगी, एकटा गंजी वा कुरता पहीरि केतौ चलि जेता, मुदा अपने केना जाएब।

राधारमण सुवासिनीक मनक अत्स-वित्सपर धियान नहियेँ देब नीक बुझलैन। उठि कऽ ठाढ़ होइत बजला-

"अहूँ चलू आ सुचिताकेँ सेहो नेने चलियौ। पएरे-पएरे दस डेग तँ ओहो चलिते अछि।"

जाबे सुवासिनी विदा होइक नियार-भास केली तैबीच राधारमणक मन अपन प्यून–हिम्मतलाल–पर पहुँच गेलैन।

हिम्मतलाल आदिवासी परिवारक अछि। जहियेसँ कार्यालय खुजल तहियेसँ हिम्मतलालक परिवार ओइ कार्यालयसँ जुड़ल रहल अछि।

हिम्मतलालक पिता बिसवासलाल नोकरी शुरू केलैन, जिनकर असामयिक निधनपर अनुशंसाक आधारपर हिम्मतलालक बहाली भेल छल। जहिया पितेक गारजनीमे हिम्मतलाल छल तहिये तीनटा धिया-पूता भऽ गेल छेलै, पछाइत दूटा आरो भेलै, कुल मिला कऽ, अखुनका जे परिवार-नियोजनक चार्ट अछि तइसँ ओभर ड्राफ्ट बनियेँ गेल अछि। जइसँ माए लगा आठ गोरेक परिवार छै।

राधारमणक डेरासँ हिम्मतलालक घरक दूरी करीब डेढ़ किलो-मीटर अछि। आगू-आगू राधारमण, बीचमे सुचिता आ पाछू-पाछू सुवासिनी विदा भेली। हिम्मतलालक घर लग पहुँच राधारमण एक गोरेकेँ पुछलैन- “हिम्मतलालक घर कोन छिऐन?”

तइ बिच्चेमे हिम्मतलाल घासक बोझ माथपर नेने खेतसँ घरपर पहुँचल। राधारमणकेँ देखि बाजल- “साहैब, यएह अपन घर भेल।” कहि घासक बोझ रखि हिम्मतलाल हाँइ-हाँइ कऽ दरबज्जा बहारए लगल। दरबज्जासँ बाहर राधारमण तीनू गोरे–अपने, पत्नी आ बेटी–ठाढ़ रहला। दरबज्जा बहारि, कुरसी सेरिया हिम्मतलाल राधारमणक बाँहि पकैड़ कऽ आनि कुर्सीपर बैसौलकैन। सुवासिनी सेहो बैसली मुदा सुचिता हिम्मतलालक धिया-पुताक संग ठाढ़ भऽ गेल। आठो गोरे माने हिम्मतलालक परिवारक सभ कियो दरबज्जापर पहुँचल छल। हिम्मतलाल पत्नियोँ आ बच्चोकेँ कहला-

“साहैबकेँ प्रणाम करियौन। अपन माए-बाप सभ किछु यएह छैथ।”

हिम्मतलालक पत्नी जहिना राधारमणकेँ पएर छुबि गोड़ लगलकैन तहिना सुवासिनीकेँ सेहो गोड़ लगलकैन। ओना, रूक्मिणीक एकछाहा कारी चेहरा देखि सुवासिनीक मन थोड़ेक भटकलैन, मुदा बजली किछु ने। तैबीच राधारमण कुरसीपर सँ सुभद्राकेँ–हिम्मतलाल माएकेँ–सेहो गोड़ लगैले उठला। जे बात हिम्मतोलाल बुझि गेल आ सुभद्रा सेहो बुझि गेली। आगू बढ़ैत सुभद्रा सेहो घुमिकऽ राधारमणक पएर छुबए चाहली मुदा बाँहि पकैड़ राधारमण बजला- “जहिना अहाँ हिम्मतलालक माए छिऐ तहिना ने हमरो भेलौं। हमर फर्ज बनैए जे हम पएर छुबी।”

ओना, विचारक क्रममे राधारमणकेँ अपन क्रम छेलैन मुदा सुवासिनीक क्रम तइसँ भिन्न छेलैन। राधारमणक विचारक्रम मनुक्खक सीमापर ठाढ़ छेलैन, जखन कि सुवासिनीक विचारमे जाति आ रंग-भेद थोड़ेक दूरी बनौने छेलैन। जइसँ सुवासिनीक मन कछमछाए लगलैन जे कखन ऐठामसँ उठि विदा भऽ जाइ। मुदा राधारमणक मनमे जहिना अपन ससुर माने पत्नीक पिताक परिवार दुर्घटनावस बिलटैक कगारपर पहुँच गेल छैलैन तहिना हिम्मतलालक परिवार सेहो पिताक (बिसवासलालक) अकालमृत्युसँ भेल छल। जइ कार्यालयमे बिसवासलाल काज करैत रहैथ, दू मंजिलाक सीढ़ीपर सँ खसने मृत्यु भेल छेलैन। सात गोरेक परिवारमे छअ गोरे बेसहारा भऽ गेल छेलैन। जखन कि सुवासिनीक परिवारमे, पिताक मृत्युक समय मात्र तीन गोरे–सुवासिनी, भाए- मनोज आ माए– छेली। राधारमणक मनमे दुनू परिवारक बात एकसंग नाचि रहल छेलैन। मनमे उठलैन- दुनू परिवार केना-केना आजुक सीमापर पहुँचल अछि, तइ विचारकेँ सबहक सोझ राखी, जइसँ एक-दोसर परिवारक सुख-दुख देखा-देखीसँ सीखा-सीखी करत। भाय, परिवार तँ परिवार छी, तहूमे मनुक्खक परिवार, जेकरा माल-जाल जकाँ छान-पगहा नहि लगल छै।

सुवासिनीक मनोभावकेँ राधारमण आँकि नेने छला। मुदा शंका ई उठि गेल छेलैन जे ‘बरे किदैन तँ जैतुक के लेत’ माने ई जे जइ सुवासिनीकेँ हिम्मतलालक परिवारक रंगे-रूप देखि मन भटैक गेल अछि से ओइ परिवारक सुख-दुखकेँ अपन सुख-दुख बुझि अङ्गेज केना सकैए? आ जँ से नहि भेल तँ ‘केतए एलौं तँ केतौ ने’ सएह हएत...।

तैबीच हिम्मतलाल तीनटा प्लेटमे जलखै अनलक। राधारमण दुनू परानीक प्लेट एकरंग सजल छल आ सुचिताक दोसर रंग। दुनू परानी राधारमणक प्लेट जहिना स्वादक हिसाबे मीठ-नमकीनसँ सजल तहिना सुचिताक प्लेट मीठ-मधुरक हिसाबसँ सजल छल। तइ बिच्चेमे हिम्मतलालक पत्नी सासु-ले माने हिम्मतलाल माए ले, सेहो आ पाँचो धिया-पुता-ले सेहो बड़का थारीए-मे आनि रखि देली। यएह तँ दुनियाँक खेल छी, जहिना हिम्मतलालक पूरा परिवार दुनू परानी राधारमणमे

देवत्वपन देखि रहल छेलैन तहिना राधारमण हिम्मतलालक परिवारमे की मजमा अछि, तेकरा तजबीज कऽ रहल छला। एक दिस वैधव्य माए अपन पोता-पोतीक संग आ दोसर दिस राधारमण अपन परिवारक संग...। मुदा सुवासिनीक मन उखड़ल-उखड़ल सन छेलैन।

अपन रणभूमिक रणकौशलकेँ राधारमण असफल होइक प्रक्रियामे देखि रहल छैथ। माने ई जे जिनका (पत्नीकेँ) जिनगीक भेद बुझबैत एलौं सहए तेहेन उखड़ल-उखड़ल सन भऽ गेली जे बुझि केना पौती? मनक विचारवाण छुटिते राधारमणक मनमे नव चेत एलैन। नवचेत ई एलैन जे पहिने सुवासिनियेक परिवारक वृतान्त उठौलासँ ओ एकाग्र हेती आ अपन प्रतिक्रिया बुझैले हिम्मतलालक परिवार दिस नजैर उठौती। जखने से भेल तखने हिम्मतोलालक परिवार सेहो अपन जीवनक तुलना करैत प्रतिक्रिया देबे करती। बीचमे दुनू गोरे भेलौं, माने अपने आ हिम्मतलाल, हमहूँ सभ अपन-अपन पक्ष रखैत सामंजसक सीमापर पहुँचब।

राधारमण नमकीन खा रहल छला आ सुवासिनी नमकीनक कड़ू कम करैले मिठाइ खा रहल छेली। दुनूक विपरीत दिशा देखि हिम्मतलाल बाजल-

“साहैब, हमरा सबहक परिवार तँ सहजे सबदिनसँ गरीब रहल आ अखनो अछि। अहाँ सन राजाकेँ केना दुआरपर सुआगत कऽ सकै छी, मुदा मिथिलाक धरणीधरक पुण्य कर्म रहलैन जे चाहे विदुरक साग हुअए आकि शबरीक बैर, दुनू बरबरि रहल अछि। तँए मनमे नइ बहुत तँ रतियो भरि खुशी तँ भइये रहल अछि।”

ओना, हिम्मतलालक हाथक छुअल प्लेटक भोज्य विन्याससँ राधारमणक मन तृप्ति भऽ चुकल छेलैन जइसँ मनोभावमे थोड़ेक दलदली जरूर आबि गेल छेलैन। जलखै केलाक पछाइत हिम्मतलाल घासक बोझमे सँ एकटा सुखल खढ़ निकालि नहेसँ खरिका बना दुनू गोरेक हाथमे दैत बाजल-

“चाह पीब लिअ पछाइत दिन-दुनियाँक गपो-सप्प हेतै आ रातुक रहैक बेवस्था सेहो हेतइ।”

रौतुका रहैक नाओं सुनि सुवासिनीक मनमे झड़कवाहि उठलैन मुदा मिठाएल मुँह रहने शब्दे बदैल मुहसँ खसलैन-

"जहिना मिथिलाक धरणीधरक चर्च केलौं तहिना चाहक पछाइत पान सेहो रहल अछि।"

ओना, जहियासँ राधारमण कार्यालय पकड़लैन तहियासँ कार्यालयक सभ किछु देख-सुनि-गुनि नेने छला जे हिम्मतलालकेँ गुनले छल; किए तँ साल भरिसँ ओइ ऑफिसमे कार्यरत अछि। ओना, दुनियाँक खेलो विचित्र अछिए जे कियो दुनियाँकेँ देख-सुनि-बुझि छोड़ैए तँ कियो बिनु देखनहि छोड़ि दइए। राधारमण अपन कार्यालयकेँ जइ रूपेँ गुनलैन तइसँ विपरीत रूपेँ हिम्मतलाल देख-सुनि कऽ अँकने छल। मुदा अपन मन कहै जे ऐ कार्यालयमे हमर ओतबे भेल जेते उपयोग करै छी, एकटा स्टुल कार्यालयक मुँहक दरबज्जापर लगल अछि, तैपर बैसै छी। बस अपन तेतबे भेल।

कार्यालयक सभ वस्तुकेँ गुनन-मनन केलाक पछाइत राधारमण जखन गेटपर बैसल हिम्मतलालक गुनन-मनन करए लगला तखन मनमे जगलैन जे जहिना एकटा खसैत परिवारकेँ सोंगर बनि, कहुना ठाढ़ केलौं, ओकर औझुका रूप की अछि तेकर साक्षी पत्नी छैथ। तहिना कार्यालयक जे चपरासी अछि जेकर वेतन कार्यालयमे सभसँ कम अछि तेकर साक्षी तँ हिम्मतलाले अछि...। मुदा परिवारक तँ ठेकान नहि अछि जे दुनूमे तीन अछि कि तेरह। यएह जिज्ञासा राधारमणक मनकेँ उत्प्रेरित केलकैन जइसँ एकाएक छुट्टी दिनक कार्यक्रम बना हिम्मतलालक घरपर एला। भाय, केकरो ऐठाम, बिना दिन-ठेकान बनौने जखन जाइ छिऐ तखन अपना मनमे ईहो अबधारि लिअ पड़त किने जे गेला पछाइत माने ओइठाम पहुँचला पछाइत जँ धरवारी अपन दुआर-दरबज्जा झाड़ए-बहारए लगैथ तँ बगैल कऽ कातमे ठाढ़ भऽ जाइ। ई नहि जे अपने ठाढ़ छी आ घरवारी ओरियान कऽ रहला अछि तँए अपमान भेल। दरबज्जाक बेवस्था बनत, जखन ओइठाम बैस परिवारक धाराक आदान-प्रदान हएत। भाय, दुनियाँ छी किने, रंग-रंगक नाच-तमाशा, रंग-रंगक मंचपर ठाढ़ भऽ तमसगीर अपन तमासा देखैबतो अछि आ आगूओ देखेबे करत।

सुवासिनीक ‘पान’ सुनि दिअर जकाँ हिम्मतलाल अनठा देलक। अनठबैक कारण भेलै जे जइ मिथिलांचलमे चाह पीआक बेसी अछि तइ मिथिलामे चाहक उपज (उत्पादन) नइ हुअए तखन अनका भरोसे केते दिन चलब? अपन उड़िया चाह पत्तीक चाह बना रूक्मिणी दुनू परानी राधारमणक हाथमे कप पकड़बैत बजली-

“मेम सहाएब, उड़िया चाह छी।”

ओना, पानसँ पहिने चाहक पूर्ति भेने सुवासिनीक मनमे नवचेत भेलैन। नवचेत ई भेलैन जे मिथिलांचल, जे अंग्रेजक चाह बगने छल आ पान हथियौने रहल, तैठाम पानक अपन उपजवारी सेहो ने छल। हिम्मतलालक पत्नीक मुहसँ सुनल ‘मेम सहाएब’ अंगरेजीक प्रभाव छी, जे बदैल आइ मैडम भऽ गेल।

पान भेला पछाइत हिम्मतलाल, दुनू गोरेक बीच माने राधारमण आ सुवासिनीक बीच बैसल। हिम्मतलालक पाछू पत्नियोँ आ माइयो आबि बैसली। ओना, भीतरे-भीतर जहिना राधारमण हिम्मतलालकेँ देखि रहल छला तहिना हिम्मतलाल सेहो अपना नजरिये राधारमण दुनू परानीकेँ देखैत रहैन। दुनू परिवारक सम्मलित रूप देखि राधारमण बजला-

“हिम्मतलाल, परिवारमे के सभ छैथ?”

हिम्मतलाल बाजल-

“सर, जहिना अहाँकेँ पनरहे दिन ऑफिस-प्रवेशक भेल अछि तहिना हमहूँ कोनो पुरान नहि छी, पैछले सालसँ हमहूँ छी। जहिया नोकरी भेल तहियो आठ गोरेक परिवार छल आ अखनो अछि।”

हिम्मतलालक बात सुनि सुवासिनी बजली-

“बच्चा कएटा अछि?”

हिम्मतलाल-

“पाँचटा अछि। तीनटा बेटा आ दूटा बेटी। तैसंग पत्नियोँ अछि आ माइयो अछि।”

हिम्मतलालक परिवारसँ सटैत सुवासिनीकेँ देखि राधारमणकेँ

अनुकूल परिस्थिति बुझि पड़लैन। जइ अनुकूलताकेँ जीवनोपयोगी बनबैत राधारमण बजला-

"हिम्मतलाल, नोकरी केना भेल?"

ओना, राधारमणकेँ पछुआरसँ पता चलि गेल छेलैन जे हिम्मतलालक बहाली, पिताक मृत्युक पछाइत अनुशंसापर भेल अछि।

हिम्मतलाल बाजल-

"सर, जहियासँ कार्यालय बनल तहियेसँ पिताजी नोकरी करैत छेला। करीब बीस-पचीस बर्ख नोकरीकेँ भेल रहैन। कार्यालयेक दू-मंजिलाक सीढ़ीपर सँ खसने मृत्यु भेलैन, पछाइत हमरा नोकरी भेल।"

अपन बेवहारिक अनुभवकेँ सबहक सोझमे अनैक खियालसँ राधारमण बजला-

"अनुशंसाक बहालीमे बड़ लक्कड़-पेंच लगैए। से ने ते भेल?"

ओना, सुवासिनी सेहो सुनबो करै छेली आ मने-मन अपन माएपर नजैर रखि सोचियो रहल छेली। मुदा मुहसँ किछु बाजि नहि रहल छेली। हिम्मतलाल बाजल-

"सर, देखै छिऐ जे घर अदहेपर लसैक गेल छल। पिताक मृत्युक पछाइत जे नगद भेटल ओइसँ घर बनेबाक विचार केलौं। पजेबा तँ कीन लेलौं, मुदा नोकरीक दौड़-बरहा आ घूस-पेंचमे तेते चलि गेल जे घर बनाएब पहाड़ जकाँ भऽ गेल।"

राधारमण बजला-

"मायरामकेँ ते पेंशन भेटैत हएत?"

हिम्मतलाल-

"हँ सर, ओही पाइसँ तीनटा कोठरी आ दरबज्जा कहुनाकऽ ठाढ़ केलौं हेन। रहै जोकर भऽ गेल, आगू बुझल जेतइ।"

कैरम बोर्डक अन्य गोटी जकाँ सुवासिनीक मनमे सेहो अपन परिवारक बेथा-कथा सुनबैक विचार आफन तोड़ए लगलैन। आफनो केना ने तोड़ितैन, सुखकेँ ने लोक चोराकऽ रखए चाहैए मुदा दुख तँ से नहि छी।

ओ तँ सतैत मनकेँ दुखबैत रहैए जे दोसरकेँ देखले-सुनला आ कहले-सुनलासँ कमैए। ओना सुवासिनीक हाव-भावसँ राधारमण बुझि गेला जे हुनका मनमे (पत्नीक मनमे) अपन परिवारक घटना सेहो आफन तोड़ि रहल छनि तँए अपन आ हिम्मतलालक विचारक प्रवाह जे अछि ओकरा हिम्मतलाल आ सुवासिनीक माइक मुँहमिलान किए ने कऽ दिऐन जइसँ परिवारक एकरूपताक बोध हेतैन। मनुक्ख कोनौं परिवार वा केहनो परिवारमे किए ने हुअए, अपन ओकातिक अनुकूल परिवारक रहन-सहन किए ने होउ, मुदा जीवन तँ जीवन छी। चाहे ओ मनुक्खक अपन जीवन माने असगरूआक, होउ आकि पारिवारिक होउ, ओकर तँ अपन बुनियाद छै। जेकरा पुरबैक वस्तु वा अन्य भावकेँ लोक बुनियादी जरूरत बुझैए, से तँ सभकेँ छइहे। रौद-वसातक प्रकोप होउ आकि पानि-पाथरक प्रकोप होउ, मानवीय होउ आकि दैवीय होउ, ओ तँ सभकेँ छइहे...। क्रियाशील राधारमण सुवासिनी आ रूक्मिणीक मुँह-मिलानी करैत बजला-

"हिम्मत, ऐठाम तोहर माइयो छथुन, जिनका पंच मानि लहुन, एम्हर तोहर पत्नी भेलखुन आ ओम्हर कार्यालयक हिसाबसँ भौजी आ उमेरक हिसाबसँ भावो सुवासिनी भेलखुन, बीचमे हम भलेँ जे होइ मुदा भेलौं तँ तोरा आगूमे बाले-बोध किने, तँए बजै छी, तोहर भौजियो हमरा सड़केपर भेटल छेली।"

ओना, राधारमण ताना मारि बाजल छला, मुदा सुवासिनीकेँ तेकर मिसियो भरि कुवाथ नहि भेलैन। बिहुसैत बजली-

"बौआ, माने हिम्मतलाल! केना अहाँ दिअरो भेलौं आ भैंसुरो भेलौ?"

अपन जड़ियाएल मोटरीक भार उतारि हिम्मतलाल बाजल-

"जखन पितातुल्य भाय सहाएब बैसले छैथ तखन हमर बाजब उचित नइ हएत। उचित एतबे हएत जे जिनगीक बतीसम बर्खमे नोकरी शुरू केलौं।"

हिम्मतलालकेँ महिला जगतसँ फराक होइत देखि राधारमणक मनमे उठलैन जे नाँहकमे हम फँसि जाएब। जखन तुलसी बाबा हारि मानि

कहलैन जे 'सबै नचाबै राम गोसाइ', तैठाम अपने कोन खेतक मुड़ै छी..! अपन परिवारपर नजैर तड़ैप कऽ पहुँच गेलैन। पहुँचते मनमे उठलैन जे केते सुन्दर परिवार हिम्मतलालक अछि। भार-मुक्त माए छैन, दुनू परानी हिम्मलाल परिवारक पाछू चौबीसो घन्टा लागल रहैए, तैठाम अप्पन परिवार की अछि! दिन-राति पिताजी अधला छोड़ि नीक नहियेँ कहैत हेता। मुदा से कि अपनेटा बुझने हएत। मुदा ऐठाम तँ सभसँ श्रेष्ठ हमहीं छी। जँ अपन परिवार जकाँ वा अपना जकाँ हिम्मतलालकेँ मानै छी, तखन तँ परिवारो ने अपने जकाँ भेल। दू परिवारक ने समागम भेल अछि। मनमे अबिते राधारमणक मनक विचार फुलाइत निकललैन-

"अपना मनक मौजी आ बहुकेँ कहलौं भौजी।"

बजैक क्रममे राधारमण पत्नी दिस इशारा केने छला मुदा हिम्मतोलाल तँ कार्यालयक चपरासी सेहो छीहे। भलेँ ओकर विचारक मानि कार्यालयमे नहि होउ, मुदा कोनौं प्रश्नकेँ जँ हलसँ बुझौल जाए तँ ओ उचित नहि बुझि सकै, सेहो केना नइ कहल जाएत। बिजलोका जकाँ बिचमानि भऽ हिम्मतलाल लोकैत बाजल-

"से केना यौ भाय सहाएब?"

ओना, राधारमण केता दिन ऐ पाँतीक प्रयोग कऽ चुकल छला, तँए मनकथा सेहो एक दिन गाड़ीमे, माने ट्रेनमे बैसले-बैसल गढ़ि लेलैन। सएह बजला-

"हिम्मत भाय![2] हम सब, माने मिथिलामे रहनिहार ऐ सूत्रकेँ मानै छी जे अपनासँ जे ऊपर जीवित छैथ, ओ एक सीमा भेला आ अपन आगू बढ़ैत पीढ़ी जे अछि, ओ भेल दोसर सीमा, मुदा अखन तँ जगरनाथ बाबाक धरतीपर छी, तँए दोसरो परिवारकेँ तँ ओहन स्थान अछिए। तेहने स्थानक दू परानी गाड़ीमे स्लीपर बोगीमे रहैथ। निच्चाँ-ऊपर यात्री चारूकात भरल छल। सभ अपन-अपन परिवारक संग हँसैत बजैत रस्ता काटि रहल छल। मुदा ओ बेचारे माने दुनू परानी, ऐ लोक लाजकेँ मानि जे पति-पत्नीक बीचक प्रेम अपन छी, तँए लोकक बीच प्रदर्शित हएब जरूरी

---

[2] भाय शब्दक प्रयोग दुनू दिस होइए

नहि, ओ तँ एकनिष्ट प्रेम छी। तँए दुनू परानीक बीच हँसी-मजाकक कोनो एहेन वातावरणे नहि बनि रहल छल।”

मुस्की दैत हिम्मतलाल बाजल- “भाय सहाएब, तखन तँ ओइ बेचाराकेँ औनैनी-पाद (औनाइक दिशा) निकलए लगल हेतइ।”

जहिना समदृष्टिकेँ आनन्द भवन मानल गेल अछि तहिना अपन दृष्टिकेँ एकनिष्ट करैत समेकित होइत राधारमण पत्नी दिस ताकि बजला-

“जेहने परिवार हिम्मतलालक अछि तेहने ने अहूँक नैहरक परिवार अछि। हिम्मतलाल माएकेँ परिवारसँ मुक्त बनौने अछि जखन कि अहूँकेँ माए छैथ किने?”

ओना, हिम्मतलालक अनुशंसाक नोकरी सुनि मने-मन सुवासिनी सहैम गेल छेली जे राधारमणेक कएल काज माएकेँ अनुशंसापर नोकरी दिआएब भेलैन। तैसंग राधारमण हमरा सन बिलटैत परिवारकेँ थामि जीवनक धारमे परिवारकेँ ठाढ़ कऽ देलैन, एहेन पुरुखकेँ केहेन पुरुख कहल जाए, से आइ धरि मनमे कहाँ उठल..। सुवासिनीक मनक भेल गति साँप-छुछुनैर जकाँ बनि गेलैन। मूस बुझि जँ खाएत तँ परान गमाएत, नहि जँ दाँतसँ पकैड़ छोड़ि देत तँ आन्हर हएत..! जखन आँखिये नइ रहत तखन देखत की। आँखिये ने दुनियोकेँ देखैए आ दुनियोकेँ आँखिये देखबैए। जखने मनुक्ख दुनियेँ जकाँ अपनो दुनियाँ (माने भेल, एक बाहरी दुनियाँ, दोसर भीतरी दुनियाँ) केँ देखए लगत, तखने ने बाहरी दुनियाँक भीतरी दुनियाँ देखए लगत। तहिना जखन कियो भीतरी दुनियाँकेँ देखि लइए तखन बाहरी दुनियाँकेँ सेहो ने देखए चाहैए। भलेँ दुनू दुनियाँक दू रूप किए ने होउ। दू रूपमे भेल एकटा जहिना सत् अछि तहिना दोसर असत्य सेहो अछिए। भलेँ दुनूक रंग-रूप देखैमे एकरंगाहे अछि। ओना, मने-मन सुवासिनी अपनाकेँ भोथियाएल यात्री जकाँ बुझि पड़ि रहल छेली, मुदा जखन पतिक संग छी तखन भोथियाएब केना भेल। अपने विचारक धारमे सुवासिनी कखनो उगै छेली तँ कखनो डुमै सेहो छेली। जहिना तत्वज्ञानी पुरुख तात्विक भेलाक पूर्वक अपन अतात्विक दिशा देखि मने-मन हँसबो करै छैथ आ पश्चातापो करै छैथ जे एते समय माने जीवनक एतेक समय पानिमे दहा-भँसिया गेल, तहिना सुवासिनीक मन सेहो मानि

लेलकैन। एकाएक मनमे जिज्ञासा जगलैन जे किए ने हिम्मतलालक जिनगीकेँ लगसँ अधिक-सँ-अधिक जनैक परियास करी। समतुल्य बनि सुवासिनी बजली-

“जहियासँ सासुर बास भेल तहियासँ नैहर बिसैर गेलौं। अहाँ केते पढ़ल छी हिम्मत?”

‘पढ़ब’ सुनि हिम्मतलालक मन चढ़ि उठल। बाजल-

“मेम सहाएब, जहिना अपने बी.ए. पास छी, तहिना घरोवाली बी.ए. पास अछि।”

‘बी.ए. पास’ सुनि सुवासिनी बजली-

“तखन दुनू परानी नोकरीए किए ने करै छी?”

हिम्मतलाल बाजल-

“अहाँक जे प्रश्न अछि तेकर उत्तर दइमे बेसी समय लगत। तँए जँ हम उत्तर दिअ लगी आ बिच्चेमे भाय साहैब कहए लगैथ जे बिलम्ब भऽ रहल अछि, चलू। तखन तँ अधमरु साँप जकाँ ने मनक विचार कछ-मछाए लगत। तँए पहिने भाय साहैबसँ पुछि लियौन।”

ओना, राधारमणक मनक अभ्यन्तरमे रहैन जे हिम्मतलालक विचार जीवनक पूर्व अवस्थाक एकधुरीक विचार हएत, जे पढ़ल-लिखल रहनौं सुवासिनी नहि बुझि पेब रहली अछि तँए जीवनक जे सत्य अछि तइसँ परिचित भऽ जेती। मुदा एक्के दिनमे केते परिचय कएल जा सकैए। दुनू परिवारक बीच सम्बन्ध केना नीक-सँ-नीकतर बनैत चलत, से भेल मूल विचार। अखन सम्बन्ध स्थापितक प्रथम दिन छी। हिम्मतलालकेँ रोकैत राधारमण बजला-

“हिम्मत, गप-सप्प करैक जँ बेसी मन (जिज्ञासा) होइत हुअ ते निचेनसँ आगूओ होइत रहत। तइ ले कोनो अगुताइ अछि। आइ पहिल दिन छी एतबे राखह।”

ओना, सुवासिनीक मन कनी चोटेलैन मुदा आगू निचेनसँ गप-सप्प होइत रहत, सुनि शान्ते रहलैन। विचारकेँ बदलैत सुवासिनी बजली-

“बाल-बच्चा सभकेँ पढ़बै छी किने?”

हिम्मतलाल बाजल- “की पढ़ाएब मेम सहाएब, सोझे इस्कूल धरौने छी। जैठाम पढ़ाइ होइए तैठाम जाइक ओकाइत नहि अछि आ जैठाम अछि, तैठाम पढ़ाइ नइ अछि। तखन तँ लोक जे दुसत जे बेटा-बेटीकेँ इस्कूल देखौने छह कि नहि, तइ खानापूरी करै दुआरे महल्लेक इस्कूलमे पढ़बै छिऐ।”

हिम्मतलालक बात सुनि सुवासिनीक मनमे मिसियो भरि हलचल नहि उठलैन। तेकर कारण भेलैन जे सामान्य पढ़ाइक रूप-रेखा जे अछि, बात तही अनुकूल बुझि पड़लैन। मुदा राधारमण हिम्मतलालक श्रमशक्तिकेँ जानि चुकल छला तँए बुझि पड़लैन, हिम्मतलाल अपन शक्तिकेँ छिपबैत बाजल अछि। फेर अपने मन गोहरियबैत विचार देलकैन जे जखन चेले बहीर-मतसून रहत तखन जँ गुरु अपन जान छोड़ा आन्हर बनल नहि रहैथ सेहो तँ नीक नहियेँ हएत।

हिम्मतलालक विचारकेँ पोस्ट-मार्टम (चीर-फार) करैत राधारमण बजला-

“हिम्मत भाय, किए ने मेम सहाएबकेँ खोलि कऽ कहि दइ छुहुन जे पाँचोमे कएटा स्कूल जाइए आ के कोन किलासमे पढ़ैए?”

राधारमणक विचार सुनि हिम्मतलाल मने-मन तुष्ट भेल जे अगर माए-बाप धिया-पुता-ले किछु समय निर्धारित कऽ पढ़ाएत, पढ़ाएबक अर्थ जीवनक पढ़ाइसँ अछि। तँ ओइ परिवारमे बिलम्मसँ उच्छृंखलता औत। नहियोँ आबि सकैए। मुदा से निर्भर करैए परिवेशपर। राधारमण बजला-

“जहिना अखन दुनू परिवारक सभ एकठाम बैस जीवन गाथा गाँथि रहल छी तहिना आगूओ गथैत रहब। अखन चलैक बेर भऽ गेल तँए चलै छी।”

राधारमणक विचार सुनि हिम्मतलाल ‘हँ-हूँ’ किछु ने बाजल। मुदा आँखिक इशारासँ जेना पत्नीकेँ किछु कहि देलक। बैसकसँ उठि रूक्मिणी आँगन आबि अभ्यागतक सुआगतक पाछू लागि गेली। तैबीच हिम्मतलाल

बच्चा सभकेँ पढ़बैक अपन बात बाजए लगल-

“भरि दिन तँ घरसँ कार्यालयक कार्य तकमे व्यस्त रहै छी, मुदा राति तँ अपन हाथक ने भेल तइमे प्रतिदिन दू घन्टा पाँचो बच्चाकेँ पढ़बैमे लगबै छी। ओना, छोटका तँ अखन बड़ छोट अछि मुदा ओहो एकाध-घन्टा लगमे बैसल रहैए।”

हिम्मतलालक बात सुनि सुवासिनीक मनमे सुचिताका प्रति जेना नव आकर्षणक संचार भेलैन। मनमे विचार घोराए लगलैन जे स्कूलमे किछु सीमित विषयक पढ़ाइ होइए, मुदा जिनगी तँ असीमित अछि। ओइ असीमितकेँ परिवारे ने सिखा-पढ़ा सीमित बना सकैए। भेल तँ यएह ने जे अखन तक जे सामाजिक धारामे परिवारक प्रवाह अछि ओइ प्रवाहकेँ, माने पैछला पीढ़ीसँ ऐगला पीढ़ी तक धारनुमा प्रवाहित होइक दायरा बना लेब। जइमे परिवारक संग-संग बेकतियोक जीवन प्रवाहित होइत रहत। जँ से नहि हएत तँ अनेरे परिवारमे विषमता बढ़ैत रहत। माने ई भेल जे जेहेन परिवारक आँट-पेट–आँट-पेटक माने सभ साधनसँ सम्पन्न–रहत तइ हिसाबसँ चलने समता बनल रहैए, मुदा जँ तइ हिसाबकेँ छोड़ि बहवाड़ि बाट पकड़ने विषमताक सम्भावनेटा नहि अनिवार्यता सेहो भइये जाइए।

सुवासिनीकेँ अपन परिवारक बुद्ध जगलैन। बुद्ध ई जगलैन जे जेना आन-आन पत्नीक जीवन अछि जे सोल्होअना पतिपर आश्रितो रहै छैथ आ हुकुमदारिनी (माने आदेश पालक) बनि सेहो जीवन बितबै छैथ, तइसँ तँ ई नीक ने भेल जे जखन पढ़ि-लिखि एक सीढ़ीपर पहुँच गेल छी, तैठाम तक बालो-बच्चाकेँ पढ़ाइये सकै छी। जखन ओकरा पढ़ाएब शुरू करब तखन ने गुरुत्वक बोध हएत...। ओना, विचारक दौड़मे सभ बुझै छी जे माता-पिता बेटा-बेटीक माते-पिता टा नहि, प्रथम गुरु सेहो छैथ। जखने माता-पिता गुरु सेहो बनि जेता तखने ने बाल-बच्चाक यादगार सेहो बनि जेता। ऐठाम एकटा प्रश्न अछि जे पिता आ गुरुमे किछु अन्तरो अछि वा एकरंगाहे भेल? अन्तर अछि! अन्तर ई अछि जे जैठाम माता-पिता पालकक रूपमे छैथ तैठाम गुरु प्रेरक भेला। खाएर जे भेला, मुदा माता-पिता बाल-बच्चाक गुरुआइ नहि कऽ सकै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। कइये सकै छैथ। केनिहार करितो छैथ।

घड़ी देखि राधारमण एकाएक उठि कऽ ठाढ़ होइत बजला-

"हिम्मत, आब चलब।"

तैबीच रूक्मिणी डालीमे तीनू गोटा-ले माने राधारमण, सुवासिनी आ सुचिता ले, देहक वस्त्र नेने पहुँच राधारमणक आगूमे रखि देली। ओना, सुवासिनी साड़ीक रंग-रूप देखए लगली, मुदा राधारमणक मनमे भादवक अन्हारक मेघौन जकाँ लटकए लगलैन। जहिना भादवमे एक दिस अकाससँ पानि झहरैए तँ दोसर दिस बिजलोका सन शक्तिवान प्रकाश (इजोत) सेहो चमैकते अछि आ तेसर दिस अन्हारो तँ ई कहिते अछि जे यएह तँ भादवक अन्हारक खेल छी, जइमे सबहक जीवन सेहो समाहित अछिए। राधारमण बजला-

"हिम्मत भाय, हम तोरा दोसर नहि बुझै छिअ, तैठाम एकर–माने वस्त्रक–कोन जरूरत अछि..!"

अपन परिवारक परम्पराकेँ सुनबैत हिम्मतलाल बाजल-

"भाय साहैब, सभ परिवारकेँ अपन-अपन किछु धरोहर होइ छै, सएह छी।"

हिम्मतलालक बात सुनि राधारमण अवाक भऽ गेला। अपना दिस तकैत विचारलैन जे हम किछु छी तैयो हिम्मतलालसँ आगू छी, तैठाम जँ एहेन सम्बन्ध ओ स्थापित करए चाहि रहल अछि तँ हमरो आगू बढ़ि सम्बन्धकेँ सुदृढ़ करक चाही। जेते कीमतक वस्त्र अछि तेते तँ अपनो देबा चाही। रस्तो अछिए। जखने धिया-पुता सभ गोड़ लागए लगत तखने ओकरा हाथमे पाइ दैत कहबै- 'बौआ, मिठाइ खइहह।' मुदा एक तँ दरमाहा जोकर काज नहि पूरल अछि, माने अधेमास भेल अछि, तइसँ वेतन नहि भेटल अछि। दोसर, अखन धरि जे परिवार चलि रहल अछि ओ दोसरे ओरियानसँ चलि रहल अछि। अपने तँ टहलैक खियालसँ चलल छेलौं, तँए हाथमे तँ किछु अछि नहि। अपन रस्ता की हएत? लगले राधारमणकेँ मिथिलानीक दृश्य मोन पड़लैन। मोन पड़िते गहना-जेबर-नगदपर धियान गेलैन। अखन तक सुवासिनी माइक देल धरोहर परिवारमे

लगौली कहाँ अछि। आँखिक इशारासँ पत्नीकेँ पुछलैन। शिकारी सुवासिनी बुझि गेली। आने स्त्रीगण जकाँ सुवासिनी सेहो अपन नगद-नारायण सेहो संगहि अनने छेली।

जहिना हिम्मतलाल-परिवारक नव वस्त्र सभकियो माने तीनू बेकती राधारमण ग्रहण केलैन तहिना वस्त्रक मूल्यक सवाइ लगा बच्चा सबहक हाथमे दैत सुवासिनी हिम्मतलालक घरसँ विदा लेलैन।

रस्तामे, सुवासिनी कखनो अपन साड़ीक दाम लगबैत तँ कखनो बच्चा–सुचिता–क शर्ट-पेंटक, मुदा जखन मन (दाममे) ओझरा जानि तखन राधारमण दिस ताकए लगैत। राधारमण अपन अन्तिम विदाइ माने जइ दिन गामसँ नोकरी दिस विदा भेला, दिन जे सीतानाथ आ गीतानाथसँ गप-सप्प करैक विचार केने छला से मोन पड़लैन। विचारि लेलैन जे डेरापर गेला पछाइत दुनूसँ गप करब।



शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020

चारिम पड़ाव

तेसर साँझ। राधारमण अपन कोठरीमे बैस अपना जीवन दिस देखि रहल छला। आजुक जे क्रिया-कलाप रहल माने हिम्मतलाल ऐठामक जे सम्बन्ध रहल ओ जीवनक एक अभिनव अमूल्य उपलब्धि रहल। ऐ उपलब्धिकेँ केना जीवित रखैत प्रगाढ़ बनाएब, ई तँ अपने केने हएत। दुनियाँमे सात अरबसँ बेसी लोक अछि, सभ मनुक्खकेँ हाथ-पएर, मुँह-आँखिक संग बुधि, विचार-विवेक अछि मुदा सभ किछु एक रहितो एक-दोसरसँ अपरिचित केना अछि..?

राधारमणक मनमे विराट प्रश्न उठि कऽ ठाढ़ तँ भऽ गेलैन मुदा जवाब किछु भेटिये ने रहल छेलैन। तैबीच खेलैत-खेलैत सुचिता लगमे एलैन। सुचिताकेँ देखिते राधारमण बजला-

"बुच्ची, हिम्मत चाचा ऐठाम की सभ देखलहक?"

पतिक बोली अकानि सुवासिनी सेहो राधारमण लग पहुँच बजली-

"धोखा-धोखीमे चाह बनाएबे बिसैर गेलौं। भानसक बेर भऽ गेल। की चाह बना कऽ नेने आएब?"

चाहक इच्छा जेते राधारमणकेँ प्रभावित नहि केलकैन तइसँ बेसी प्रभावित केलकैन सुवासिनीक अपन भूलक कबूल। स्त्रीगणक बीच कोनो काज नहि करैक बहन्ना जे घर केने अछि, ओ सुवासिनीमे सेहो छेलैन्हे, मुदा सुवासिनीक अखनुक रूप तइसँ भिन्न बुझि पड़लैन। किए तँ कोनो काज नइ केलाक पछाइत जखन सुवासिनीकेँ राधारमण नइ करैक कारण पुछै छेलखिन तँ सुवासिनी अपन गलती कबूल नहि करैत बहन्नाक बीच बहन्ना ताधैर ठाढ़ करैत रहै छेली जाधैर खगल काज देखि राधारमण बिगैड़ कऽ नहि बजैथ। से आइ अपना मुहेँ अपन भूलक कबूल करैत सुवासिनीकेँ देखि राधारमणक मनमे प्रीतक एक नव रीति उदित भेलैन। बजला- "ओना, हिम्मतलाल ऐठाम तेते खा नेने छेलौं आ तैपर सँ चाहो

पीलौं से मन गदगरले अछि। अखन चाह पीबैक मन नइ होइए।"

हिम्मतलालक चर्च सुनिते सुवासिनी बजली-

"जहिना हिम्मतलालक सोभाव छै तहिना घरोवाली आ माइयोक छै। बाल-बच्चा तँ सहजे पशुधन जकाँ दूधमुहेँ अछि।"

ओना, सुवासिनीक बात सुनि राधारमणक मनक विचार गहराए लगलैन, मुदा तइ गहराइकेँ उत्थर बनबैत बजला-

"एकटा चीज गौर केलिऐ?"

सुवासिनी-

"की?"

राधारमण-

"अपना सभ जकाँ हजार चिन्तामे हिम्मतलालक परिवार नइ अछि।"

पतिक बात सुनि सुवासिनी ठमकली। मोन पड़लैन, जेतेकाल हम सभ दरबज्जापर छेलौं तेतेकाल हिम्मतलाल सबतूर अपना-अपनीकेँ आदर-सत्कारमे लगल छल। आन कोनो काजक भूत सवार नइ छेलै...।

पत्नीकेँ ठकमकाएल देखि राधारमण पुन: बजला-

"हिम्मतलालक परिवार एकाकी अछि। अपन जेतेटा जीवन छै तइमे सभ तूर जुटल रहैए जइसँ ने बाहरी कोनो दबाव पड़ै छै आ ने अपन समटल जिनगीमे केतौ कोनो बाधा उपस्थित होइ छै। परिवारक सभ अपन-अपन जिम्माक काज बुझैए आ तइ हिसाबे अपनाकेँ लगौने रहैए।"

पतिक बात सुनि जहिना कपड़ामे लागल कोनो दागकेँ पानिमे लोक साफ करैए तहिना सुवासिनी सेहो मने-मन अपन विचारकेँ धुअ लगली। मुदा परिवारमे जे जीवन स्तर बनि जाइए ओहो तँ साधारण रोग नहियेँ छी जे लगले धुआ जाएत। ओना, मनुक्ख अद्भुत जीव छी। असीम शक्ति मनुक्खक भीतर छिपल अछि। जँ ओ अपन छिपल शक्तिकेँ जगा अपनाकेँ जागरितक प्रणपन करैत दृढ़ संकल्पक संग समर्पित भऽ जाए, तँ जीवनक कोनौं संकट असानीसँ अपने दूर भऽ सकैत अछि। मुदा से निर्भर

करैए ओकर जीवनक दिशापर।

सुवासिनीक मन जेना विचारसँ भरि रहल छेलैन जइसँ रंग-रंगक विचारमे मन औनाए लगलैन। बजली-

"अखन भानसक बेर भऽ गेल अछि, जाए दिअ।"

व्यंग्यवाण छोड़ैत राधारमण बजला-

"हम कोनो कि अहाँकेँ पकड़ने छी। पकड़ैबलाकेँ चिन्हबे-देखबे ने करै छी आ जे नइ पकड़ने अछि तेकरा कहै छिऐ..!"

ओना, पतिक विचार सुवासिनी नीक जकाँ नहि बुझि पेली मुदा हिम्मतलाल-ऐठामक आदरपूर्ण बेवहार मनमे नाचिये रहल छेलैन। आह्लादित होइत बजली-

"सुर्जमे सात रंग अछि, सबहक चमक-दमक एक-दोसरसँ सटलो आ हटलो तँ अछिए।"

सुवासिनीक विचारक प्रवाहमे तेज गतिये प्रवाहित होइत राधारमण बजला-

"हँ, से तँ अछिए।"

सुवासिनीक विचारक धार दोसर दिस मोड़ा गेलैन। आगू बढ़िते सुवासिनी बजली- हमरो माए ओहिना अछि जहिना हिम्मतलालक माए अछि। पिताजीक एवजपर जहिना हमरा माएकेँ नोकरी भेल तहिना हिम्मतलालकेँ सेहो भेल, मुदा दुनू परानीक लगन जे परिवारक प्रति अछि ओ अद्वितीय अछि। कहाँ अपन परिवार ओहन अछि..?

लगले सुवासिनीक नजैर आगू बढ़ि पतिपर आबि अँटैक गेलैन। अपन घरक काज माने पिताक एवजमे माइक नोकरीमे राधारमणकेँ विवाहसँ पूर्व ओहिना ने भेल हेतैन जेना हिम्मतलालकेँ भेल। हमहूँ कौलेजमे पढ़ै छेलौं, कहाँ किछु बुझि पेलौं। जहिना हिम्मतलालक मन पजेबाक घर बनबैपर छल, जइ हिसाबसँ रुपैआ भेटल छेलै, पिताक क्षतिपूर्तिसँ घरक अदहो काज नहि भेलै आ पाइ चल गेल खर्च-बर्चमे, तहिना तँ राधारमणकेँ सेहो भेल हेतैन, भऽ सकैए केतौ-केतौ नहियोँ भेल

होइन। कोन तरहक सम्बन्ध दुनू गोरेक परिवारमे छल। कनी-मनी पिताजीक पढ़ौल छेलैन, से सम्बन्ध छेलैन, तहूमे राधारमण तँ अपन पढ़ैक फीस तँ दइते छल, जइ बदलामे पढ़लैन। आखिर कोन एहेन शक्तिक आकर्षण छल जे राधारमणकेँ एते आकर्षित केलकैन? समाजक जे परिवेश नारी जगतक प्रति बनि गेल अछि ओ दर्दनीय अछिए, मुदा निवरबाक जे दिशा अछि वएह भकुआएल-मन्हुआएल अछि जइसँ दर्द-पीड़ा घटैक जगह बढ़िये जाइए। समाजोक आ पितोक पढ़ल-लिखल बेटी तँ अपनो छी, अपनो परिवारक भार उठबैक दम अपनामे कहाँ अछि। कहियो मनमे उठल जे समाजमे विधवाक फँसरी अखनो किए जीवित अछि, जँ अपने भऽ जाए तँ समाजक अंग नहि कलंक बनि जीवित रहैक अछि। कहाँ अखन तक मनमे उठल जे अपन दुखक रातिसँ नमहर केना सुखक दिनकेँ बढ़ाबी माने श्रमहीनतासँ श्रमशीलता दिस केना बढ़ी..? एकाएक सिनेहासिक्त भऽ सुवासिनी लजहँसी हँसि बजली-

“की खाइक इच्छा होइए?”

गहिंराएल मन राधारमणक छेलैन, तँए सुवासिनीक विचारपर पलोभरि ले नहि एलैन। जेकरा बक-बकी बुझि राधारमण बजला-

“जोगीकेँ कुत्ता बलाए। अनेरे...।”

पतिक विचारकेँ महत्वहीन बनबैत सुवासिनी बजली-

“बीरबलक, अकबरक दरबारसँ पहिलुका जीवन की अछि?”

जान छोड़बैक परियास करैत राधारमण बजला-

“खा-पीकऽ जखन निचेन हएब तखन जेते मन हुअए से सभटा जीवन अकबर-बीरवलक सुना देब।”

पत्नीक बरहबटिया गीत सुनि राधारमणक मन अकैछ गेलैन। मनमे उठलैन कुत्ता भागे तँ भागे नहि तँ अपने भागि। पेशाबक बहन्ना बनबैत राधारमण पेशाब-घर दिस बढ़ि गेला। पेशाब करैमे तेना देरी लगा देलैन जे सुवासिनीकेँ बुझि पड़लैन जे भरिसक पैखाना चल गेला। ओना, देरी लगौने पैछला विचार सेहो राधारमणक अगुआइत आगू आबि गेलैन।

सीतोनाथ आ गीतोनाथसँ आइ गप-सप्प करबे करब।

सुवासिनी आ राधारमणक बीच गप-सप्पक शुरूआत होइते सुचिता असगरे खेलाइले भनसा घर दिस बढ़ि गेल। जे सुवासिनीकेँ पहुँचते (भनसाघर) सुचिताकेँ पिताक पुछल बात माने 'हिम्मत चाचा ऐठाम की सभ देखलक' मोन पड़लै। मोन पड़िते सुचिता निछोहे दौड़ैत कोठरीमे, जइ कोठरीमे राधारमण छला, पहुँच बाजल-

"बाबूजी, हिम्मतलाल चाचा ऐठाम फेर जाएब। रेखासँ हमरा बहिना लगि गेल।"

दू-अढ़ाइ बर्खक बेटीक बात सुनि राधारमणक मन ओहिना लड़गुजा गेलैन जेना कठोर-सँ-कठोर पातबला वृक्षक मुड़ी परक पात लड़-गुजाएल रहैए। जइसँ मनमे उपकलैन जे सुचिताकेँ आरो किए ने नव जीवनक प्रभात वेलामे बहलाबी। किए तँ चेतन हुअ कि बूढ़, चेतनावस्था वा वृद्धावस्थामे सीखल बहुत बात लोक बिसैर जाइ छैथ मुदा जन्मक पछाइत माने जीवनक शुरू होइक अवस्थामे जे 'अ-आ' सीखलैन से कि मृत्युसँ पहिने कियो बिसरै छैथ, भलेँ किछु गोरे एहनो तँ होइते छैथ जिनका मुइला पछातिक जे स्वर्ग-नर्कक लोक अछि तइमे ठीकेदारक अनुशंसापर जँ कहीं मास्टरी भेलैन तँ ऐ लोकसँ ओइ लोक तक सेहो नहियेँ बिसरै छैथ। सुचिताक मनकेँ बहलबैत राधारमण बजला-

"रेखासँ जखन बहिना लागि गेल तखन तँ बहिनाबला गीतो सीखने हएब?"

'बहिनाबला गीत' सुनि सुचिताक मनमे एकटा नव शब्दक जागरण भेल। जागरण होइते सुचिताक मन लपैक कऽ ओइ शब्दकेँ पकैड़ बाजल-

"बाबूजी, बहिनेकेँ ने बहिना कहैए?"

सुचिताक मन बहलबैत-बहलबैत राधारमण अपने बहलाए लगला। बहलाइत राधारमण सुचिताकेँ कहलखिन-

"बुच्ची, मम्मी तँ कहनहि हेथुन किने, सएह हमहूँ कहै छिअ।"

मम्मीक बात सुनि सी.बी.आई. जकाँ सुचिता पिताक बात सुनि चोटे मम्मी लग माने सुवासिनी लग पहुँच बाजल- "मम्मी, बहिना केकरा

कहैए?”

बेवहारमे जे चलैन अछि तइ अनुकूल सुवासिनी सुचिताकेँ कहलखिन-

“बुच्ची, जहिना बालकमे दोस्ती होइए तहिना बालिकामे बहिना होइए।”

अपन विचारकेँ सत्यापित करैक खियालसँ पिता लग आबि सुचिता बाजल-

“बाबूजी, बालक-बालिका की भेल?”

ओना, राधारमणक मन बहिन-बहिनासँ उठैत भवजुआरमे अनेको शब्दकेँ पकैड़ विचार करए लगलैन जे ‘बहीन’ की भेल? ‘भाए’ की भेल? ‘भैयारी’ की भेल? ‘दोस्ती’ की भेल? ‘भजार’ की भेल आ ‘भजारी’ की भेल? ‘मीत’ की भेल? आ ‘मित्रपण’ की भेल? ‘संगी’ की भेल आ ‘संगपन’ की भेल? मुदा तइ बिच्चेमे पुन: बाल-बोधक प्रश्न ‘बालक’ की भेल आ ‘बालिका’ की भेल? राधारमणक मनमे आबि गेलैन। बजला-

“बुच्ची, अखन बच्चा छह, अखन अ-ओ-आ ने सीखलह हेन, तइमे बालक-बालिकाक लिंग-भेद व्याकरणक बात केना बुझबहक। हिम्मतलाल चाचा ऐठाम जे बहिना भेटलह उ की सभ कहलकह?”

माइक मुँहक सुनल बालक-बालिका शब्द मनसँ तत्काल क्षीण भऽ गेलै आ बहिनाक विचार मनमे प्रवल भऽ गेलइ। पल्लवित होइत सुचिता बाजल- “बाबूजी! बहिना कहलक अहिना आएल-जाएल करब।”

अपन गोटी फेकैत राधारमण बजला-

“बुच्ची, आएब-जाएब की भेल?”

जहिना राधारमण गोटी फेकलैन तहिना सुतरबो केलैन। सुतरलैन ई जे राधारमणक मनमे गड़ि चुकल छैन जे आइ ओ सीतोनाथ आ गीतोनाथसँ गप-सप्प करबे करता मुदा समय तेना राँइ-बाँइ भऽ छिड़िया रहल छैन जे अपन काज गरपर चढ़िये ने रहल छेलैन। से चढ़लैन, चढ़लैन ई जे सुचिता आएब-जाएबक माने बुझैले माए लग बढ़ल। सुचिताकेँ आगू

बढ़िते पाछूसँ राधारमण बजला-

“बुच्ची, भानसो देखि लेब। सबेरे सुतैक इच्छा अछि।”

‘सबेरे सुतैक इच्छा अछि’ भनसाधरसँ सुवासिनी सेहो सुनली। सुनिते एकाएक मनमे झड़क उठलैन। झड़क उठैक कारण भेलैन जे अपने मुहेँ माने पति, बजल छला जे खेला-पीला पछाइत अकबरोक आ दाराशिकोहोक कथाक वृतान्त सुनाएब। से खाइयोसँ पहिने सुतैयेक विचार कऽ रहला अछि। ओना, सुतबाक नामपर राधारमण ओहन चिन्तनक गहराइमे जाए चाहै छला जैठामक अवस्था नीनभेर सुतल मनुक्ख जकाँ होइत अछि, जइमे दुनियाँक सभ किछु हेरा जाइए आ बँचि जाइए स्वप्न स्वरूप चेतन।

झड़कसँ झड़कैत सुवासिनीक मनमे उठलैन जे जहिना खाइसँ पहिने, पति सुतैक ओरियान करए चाहि रहला अछि तहिना ने अपनो चाह अछि। तेँ किए ने तेहेन चाह पीआ दिऐन जे सुतले-सुतल सुतब मरि जेतैन। माने भानसेमे तेते देरी कऽ देब जे नियारल नीन अपने सुखा कऽ सुखि जेतैन। मुदा लगले जेना विवेक जगलैन, विवेक जगिते सुवासिनीक मनमे उठलैन जे भानसमे देरी करब नारीक नारीपनक कमजोरी भेल, जइ कमजोरीसँ लोक ई निर्णय नहि कऽ पबै छैथ जे समाजमे किनका मुहेँ केहेन कान कानल जाए। मुदा से तँ होइत अछि नहि, सभ तरहक मृत्युकेँ एक मानि एक्के कान सबहक मुइला पछाइत कानल जाइए वा शोक प्रकट कएल जाइए। जइसँ विवेक धोखामे पड़िये जाइए। विवेकक धोखा तँ तखन ने निधोख हएत जखन गाम-समाजक लोकक नीक जकाँ चीन-पहचीन हएत। नीक जकाँ चीन-पहचीनक माने भेल जे हर मनुक्खक चित्रांकनक चरित्रांकन नीक जकाँ भऽ जाए। जखन मनुक्खक चरित्रांकन भऽ जाएत तखने ने आँकि सकब जे चोरक घर चोइर भेल आकि इमानदारक घर। आकि चोइर केनिहारक गलती एक्के रंग भेल। मुदा दुनूक दूरी तँ सोझे-सोझी बनल अछि। जँ कियो चोर अछि ओ कहियो केकरो घरमे चोइर केने रहल आ कियो इमानदार अछि जे चोइर करबकेँ कोन बात जे चोरीक नामपर थूक फेकैए, ओहन लोकक घरमे जँ चोइर होइए तँ हमरा केतए केहेन वेदना हएत जइसँ अपन संवेदना व्यक्त करब।

विचारमे ओझराएल सुवासिनीक मनमे उठलैन जे जखन दुइये परानीक बीचक बात अछि तखन अनेरे किए ऐ खिड़की देने आकि ओइ खिड़की देने मुड़ियारी देब जे सुतल छैथ कि सुतैक क्रममे छैथ कि बाल-बोधकेँ अपना लग अबैसँ टाट लगबै छैथ आकि मनमे की छैन से पुछिये किए ने लेबैन। यएह सोचि सुवासिनी पतिक कोठरीमे पहुँचली।

कोठरीमे सुवासिनीकेँ देखिते राधारमणक मनमे उठलैन जे भेल फेर पाकल जौ मे पाथर खसत। ठीके लोक कहै छै जे खगल घरमे बेसी खगलेक बास होइ छै। जेकरा हाथमे पाइ नहि रहै छै तेकर हाथ तरहत्थीसँ ससैर आँगुरमे जोड़ा जाइ छै जइसँ सैयोक कोन बात जे हजारो भूर फुटिते अछि आ फुटलो तँ अछिए। राधारमणक मन असथिर होइते रहैन कि पत्नीकेँ कोठरीमे देख, दुनू हाथ जोड़ि बजला-

“किम्हर-किम्हर, श्रीमतीजीक आगमन भेलैन अछि?”

अखन तक माने हिम्मतलाल ऐठाम जाइसँ पूर्व तक जे सुवासिनीक सुभाव छेलैन जे जहिना आन-आन स्त्रीगणकेँ ठोरेपर बरी पकैए तहिना पकै छेलैन मुदा आब तइमे कमी एलैन। नव विचारक दौड़मे एतेक चेतन क्रिया प्रवल भइये गेल छेलैन जे किए ने जखन दुनू परानियेँक बीचक कोनो समस्या छी तँ ओकरा दुनू गोरे मिलि समाधान कऽ ली। तइ ले मुँह फुलबैक कोन खगता छै। किए ने दुनू परानी पौरुकी जकाँ मेद-मेदीनक लोलक-बोलमे एकरूपता आनि ली। अचताइत-पछाइत सुवासिनीक मन थीर भेलैन। थीर होइते बजली-

“मनमे केहन थकान बुझि पड़ैए जे खाइसँ पहिने सुतैक विचार कए रहल छी?”

अपन पेटक विचारकेँ छिपबैत राधारमण विचारमे विचार जोड़ैत बजला-

“दिनेसँ मन भरियाएल जकाँ बुझि पड़ैए तँए सोचै छी जे भरियाएल मनकेँ आराम देब बेसी नीक हएत।”

पतिक बात सुनि सुवासिनीकेँ सेहो गर सुतरलैन। गर सुतैरते

बजली- “जखन दिनेसँ मन भरियाएल छल तखन एते दौड़-बड़हाक कोन खगता, दोसरे-तेसरे दिन हिम्मतलाल ऐठाम जइतौं।”

जहिना कठघरामे झुट्ठा फँसि जाइए तखन जहिना ओकर गति होइ छै तहिना राधारमणोकेँ भेलैन। मुदा पानिक गैंची माछ जकाँ, जेकरा आन माछसँ जीबैक बेसी लूरि छै, पानिसँ थालमे घोंसियाइत राधारमण बजला-

“जखन हिम्मतलाल ऐठाम जेबाक मन बना लेलौं तखन नइ जाएब नीक होएत?”

बदलल जीवनक पद्धतिसँ सुवासिनीक विचार पद्धति सेहो बदलए लगल छेलैन जइ कारणेँ मुहसँ फुटलैन- “जहिना हिम्मतलाल ऐठाम जेबाक मन बनल तहिना ने दोसरो-ले मन बनबए पड़त।”

जइ विचारपर सँ राधारमणक मन हटि चुकल छेलैन सएह बात सुवासिनी रखि देलखिन जइसँ राधारमण समुचित ढंगसँ विचार नहि कऽ सकला, तँए बजा गेलैन- “उचिते ने बनाएब।”

मोन पाड़ि सुवासिनी बजली- “हमरो ने कहने छेलौं जे खेला-पीला पछाइत ओछाइनपर बीरबलो-अकबर आ अकबरो-दाराशिकोहक कथा वृतान्त कहब।”

अपनाकेँ फँसैत देखि राधारमण गौंची माछक गैंचिआह चालि पकैड़ बजला-

“अहाँ कि बुझै छिऐ जे हम बिसैर गेलौं। मुदा ई तँ दुनू गोरेक बीचक छी, जखन दुनू गोरे निचेन हएब तखन ठठैत-हँसैत कहैत-सुनैत रहब। तइ ले एते धड़फड़ी कोन अछि। एतबो ने बुझै छिऐ जे इतिहासक बात छी केना बीरबल कुत्तेकेँ सवारी बना जारैन उघै छल आ वएह कुत्ता अखन एन.एच.पर गाड़ी-सवारीक तर पड़ि मरैए। तँए एकबेर किताब उनटा देखि लेब तखन जे कहब-सुनब हएत से आ अखन जे धड़फड़ाएलमे किछु कहि देब से, अहीं कहू जे एक्केरंग हएत?”

पतिक विचारमे सुवासिनी तेना बोहिया गेली जे बजैक होशे ने रहलैन। बेहोशेमे बजली- “हँ, से एक रंग केना हएत।”

नहलापर दहला फेकैत राधारमण बजला- “कोन रंग-केहेन होइए

से धड़फड़ेने बुझबै। अहींकेँ एते औगताइ किए अछि। आइये कि कोनो मरि जाएब। जखन जीबैक अछि तँ निचेनसँ किए ने जीब। जाउ, अहूँ भानस करू आ हमहूँ कनी देह-हाथ मोड़ि लइ छी।”

बदलल सोभाव सुवासिनीक, तँए मनमे विचार जगि गेलैन, किछु छैथ तँ पति छैथ, ओ केना झूठ बजता। घरमे जँ हमहीं हजार बेर बाजी जे ई काज नहि भेल, अहाँ झुट्ठे बजलौं, तखन दुनियाँ की कहतैन। अपनो बुधिक मशीन ओते भङ्गठले अछि जे पतिकेँ तँ पति मानै छिऐन मुदा हुनका जीवनकेँ पनिपतसँ बेसी नहि बुझै छिऐन। विचार मगन भऽ सुवासिनी बिना किछु बजने राधारमण लगसँ निकैल गेली। नमहर साँस छोड़ैत राधारमण गुण-गुणा कऽ बजला-

“जान छुटल।”

भीतरक हवा निकैलते राधारमणक मनमे उठलैन। सीतेनाथ आकि गीतेनाथसँ सम्पर्क कऽ किए ने ओकरे समयानुसार समय बनाबी। काजक समय अनुकूले बनलासँ ने काज नीक जकाँ होइए। जैठाम सम्बन्ध गढ़ैक प्रश्न अछि तैठाम तँ ई बुझए पड़त जे मनुक्खकेँ माल-जाल जकाँ छान-बान्ह नइ लगैए मुदा वौधिक भेने बुइधिक छान-बान्ह नहि लगैए सेहो बात नहियेँ अछि। ओकरा छाने-बान्हटा नहि जाल-महजाल सेहो कहि सकै छिऐ।

राधारमण सीतानाथकेँ फोनसँ सम्पर्क कए बजला-

“बौआ सीतानाथ..?”

सीतानाथ बाजल-

“हँ भैया, राधारमण।”

सीतानाथक मुँहक ‘भैया’ सुनि राधारमणक शरीर पसीज गेलैन। भाय दोस्तियारेमे दुनू गोरे बरबरि भेलौं, तँए दुनू एक्केरंग बुधियार भेलौं। मुदा ‘बौआ’ आ ‘भैया’ तँ से नहि छी। राधारमण बजला-

“बौआ, की कहबह! जहियासँ ऐठाम एलौं तहियासँ बुझह जे मरैयोक छुट्टी नहि भेटल। मुदा काल्हि तक सभ सम्हारैत आइ निचेन भेलौं। नीक हएत जे आगूक गप करैसँ पहिने गीतोनाथकेँ बजा, चाहे

ओहीठाम जा तीनू गोरे संगे गप करितह।”

सीतानाथ बाजल-

“तइमे कनी देरी हएत।”

अपन निसचिन्ती देखबैत राधारमण बजला-

“बौआ, तोरे समये हमरो समय भेल। तोहीं कहह जे कखन गप-सप्प हएत?”

सीतानाथ बाजल-

“भैया, घड़ी दिस सेहो देखै छिऐ, अहाँ शहर-बजारमे रहै छी तँए अबेर कऽ खाइ छी, हमसभ गमैया लोक नअ बजेसँ पहिने खा लइ छी। खाइते काल पौने नअ बजेबला समाचारो सुनै छी।”

सीतानाथक मुँहक सुनल व्यस्तता माने खेबो करै छी आ रेडियोसँ समाचारो सुनै छी, सुनि राधारमण मने-मन मुस्कुरेला। मुदा बाल-बोधक बोल बुझि बजला-

“बौआ, जहियासँ गामसँ निकललौं तहियासँ बुझह जे निचेने-निचेन रहै छी। बीचमे काज बढ़ि गेने थोड़े व्यस्तता बढ़ल मुदा आब असथिर भऽ गेलौं। तँए जखुनका समय बनेबह हम तैयार छिअ।”

सीतानाथ बाजल-

“अखन हम सभ खाइ-पीबै छी, पछाइत अहाँ सभ, माने समय भेने खाएब-पीअब, तँए तेकर पछातिक समय भेल जखन सुतैक ओछाइनपर रहब।”

सीतानाथ मुँहक ‘सुतैक ओछाइनपर रहब, संयोगसँ सुवासिनी सेहो सुनि गेली, किए तँ तइकाल भानसक कोठरीसँ निकैल ओसारपर आएल छेली। ‘सुतैक ओछाइन’ सुनि सुवासिनीक मनमे अनेको प्रश्न एक संग उठि गेलैन। उठबो केना ने करितैन, चरित्रोक तँ अपन घाट-बाट छै। एकचलिया लेल जहिना सुगम घाट अछि तहिना बहुचलिया ले दुर्गम घाट सेहो बनियेँ जाइए। किए तँ बहुचलिया लोक हुअ आकि बहुचलिया विचार, जखने बहुचलिया हएत तखने चौक-चौराहा बेसी भेने बाटो-घाट

दुर्गम भइये जाइए। सुवासिनीक चरित्रक विचारानुसार जे परिवर्तित भऽ रहल छेलैन तइसँ अनेको विचार मनमे उठि गेलैन। ओना, अपनो विचार माने पतिक संग निचेनसँ गप करब छेलैन, मुदा केकरोसँ सुतबकालक समय बना रहला अछि ओ केहेन जिज्ञासु छैथ जे सुतब छोड़ि विचार-विमर्श करए चाहि रहला अछि। विचारक जिज्ञासा तेते उत्कण्ठा सुवासिनीकेँ बढ़ा देलकैन जे अपन भनसा घर बिसैर पतिक कोठरीमे पहुँच बजली-

"किनकासँ सुतली रातिक समय बनेलिऐन अछि?"

पत्नीक विचारकेँ जहिना बकरी चरौनिहार बेदरा साँझू पहरकेँ बकरीकेँ बहटारि घरपर आनैए तहिना राधारमण पत्नीकेँ बहटारैत बजला-

"की कहब, गाम-घर मोन पड़ि गेल तँए गौंआँ-घरूआसँ किछु गप-सप्प करए चाहलौं, सएह सुतली रातिक समय बनेलौं हेन?"

पतिक विचारक प्रवाहमे सुवासिनी भँसिया गेली। भँसियाइत बजली-

"हमर गाम-घर तँ उपैटिये गेल..!"

पत्नीक विचार सुनि राधारमणकेँ हँसी लगि गेलैन जइसँ तेना हँसा गेलैन जे हँसिते बजला-

"गाम-घर उपैट गेल आकि अपने उपैट गेलौं, से कहाँ कहलिऐ?"

निरुत्तर होइत सुवासिनी, पतिक विचार बुझैले केवाड़क पट्टा लग आबि ठाढ़ भऽ अकानए लगली।

राधारमण बजला-

"जहिना सभ महिला सासुर बसला पछाइत अपन माता-पिताक गाम-घर बिसैर जाइ छैथ तहिना अहूँ बिसैर जाउ। आजुक परिवेशमे नव परिस्थिति सेहो बनल अछि, जइसँ सम्बन्धक एक नव सूत्र सेहो पनपल अछि। जँ तइ सूत्रकेँ पकैड़ पुन: बसबए चाहब तँ किए उपटल रहत।"

पतिक विचारमे, जहिना निआसमे आस झँपाएल रहैए मुदा समयक गति ओकरा चेतबैत पकड़ा दइए तहिना सुवासिनीकेँ सेहो भेलैन

मुदा पकड़ाएत केना से बुझिमे एबे ने केलैन। जइसँ मारि खाएल साँप जकाँ सुवासिनीक मन तँ उनटए-पुनटए लगलैन मुदा निरुत्तर भेने असथिर होइत चुपे रहली। राधारमण बजला-

"एकठाम बैसने-उठने, गप-सप्प भेने आ जिनगीक गतिक चर्च-बर्च केने लोकक मनमे लोक बसैए आ नइ भेने उपटैए।"

अपना जनैत राधारमण सभ बात बाजि गेला मुदा सुवासिनीक उदिग्न मनमे नीक जकाँ बैसबे ने केलैन। बजली-

"से केना हएत?"

तैबीच अपन समय राधारमणक मनमे नाचि उठलैन। नाचि ई उठलैन जे सीतानाथ कहलक अखन हम सभ खाइ-पीबै छी पछाइत अहाँ सभ खाएब, तेकर पछाइत ने ओछाइनपर जाएब। हमरा नइ कोनो काज अछि तँए गप-सप्प करैक इच्छा अछि, मुदा सीतानाथक कान तँ ठाढ़े हएत किने। गीतानाथसँ सम्पर्क केने हएत, तैबीच ईहो सोचैत हएत जे साढ़े नअ बजे, ओ सभ माने हम सभ खाएब, तेकर माने भेल जे दस बजे ओछाइनपर जाएबक समय भेल, तँए दस बजे ओछाइनपर पहुँच जाएब अछि। ईहो तँ उचित नहियेँ हएत जे दुनू गोरे-सीतानाथ आ गीतानाथ तैयार भऽ 'हेलो-हेलो' करए आ अपने खाएकेपर बैसल रही...।

राधारमणक मनमे अपन क्रियमान विचार जगलैन। जगिते विचार उठलैन जे जहिना अपने खाएब टा बीचमे अछि तहिना हुनको माने पत्नियोकेँ भानस करब सेहो तइ बिच्चेमे छैन। तैबीच जँ गप-सप्प करी से बुड़िबकी हएत। गप-सप्पकेँ समटैत राधारमण बजला-

"केना हएत से कोनो हेराएल अछि जे अहाँ देखबे ने करै छी। मोबाइल अछिए, जेते सखी-बहीनपा छैथ तिनको आ अपनो परिवारक सभकेँ हकार दऽ दियौन जे जगरनाथ बाबासँ थोड़बे हटल, बिच्चे रस्तापर हम छी, किछु दिनक पछाइत 'रथ यात्रा' माने जगरनाथ बाबाक रथयात्रा चलत, ओही देखए सभ कियो अबै जाइ जाउ। ऐठाम औती, सम्बन्धक एकटा नवसूत्र पनपत। काल्हि दिन जँ बैजनाथ बाबा ऐठाम जेबाक प्रोग्राम बनत, तँ इम्हरसँ अपना सभ चलब, ओम्हरसँ माने गामसँ ओ सभ औती,

अपनो पुजेगरीक माने पण्डाक धरमशाला छैन्हे, सभ कियो एकठाम रहबो करब आ गपो-सप्प करब।”

दस बाजिकऽ पाँच मिनटपर सीतानाथक मोबाइलसँ घन्टी राधारमणक मोबाइलमे भेलैन, उठबैत राधारमण बजला-

“बौआ, सीतानाथ, दुनू भाँइ छह किने?”

ओना, जखने राधारमण फोन रिसिभ केलैन कि दुनू गोरे माने सीतोनाथ आ गीतोनाथ एक्केबेर बाजल-

“गोड़ लगी छी भाय। आब तँ अपने ओहन भाय भऽ गेलिऐ जे अपनेक जँ बरदहस्त रहत तँ हम सभ निर्भये नहि अभय सेहो भऽ सकै छी।”

अपन-अपन बात सभ बजला मुदा सुननिहार किनको कियो ने। झोहैर शान्त होइते राधारमण बजला-

“गौंआँ तँ तीनू गोरे छी, तहूमे भैयारीक सम्बन्ध सेहो अछिए, गामक किछु दशा किए ने भऽ गेल होइ, मुदा जन्मक धरती तँ वएह छी, तइ ले..?”

‘तइ ले’ तक अबैत-अबैत राधारमणक बाक् हरण भऽ गेलैन।

गीतानाथ कौलेजमे पढ़ैत नवयुवक, तँए मनमे उत्साह जगले रहइ। तहूमे मिथिलासँ लऽ कऽ बंगालक रवीन्द्र बाबू तकक मातृभूमिक गीत सुनि आरो बेसी प्रभावित जन्मभूमिसँ रहबे करए। बाजल-

“भाय साहैब, अपने बहुत आगूक रस्ता देखि चुकल छिऐ तँए सुझेबै तँ अहीं ने।”

गीतानाथक मनमे कोनो तेहेन विचार नहि छल जे कोनो तरहक बाधा उपस्थित करैत मुदा अपनासँ आगू बढ़ल लोकक विचारमे आगू बढ़ैक प्रेरणा छिपल रहैए, मुदा उसकबैक जे जिज्ञासा अछि ओ सजग होइत जगैबते अछि। राधारमण, अपना ऊपर आएल भारकेँ टुकड़ी-टुकड़ी करैत माने खण्ड-खण्ड करैत बजला-

“बौआ, अपन जे परिवार अछि से केकरोसँ छिपल अछि। अपने

ग्लानिसँ गलल जाइ छी। अपना कि लाज नइ होइए जे जइ परिवारमे हमरा सन मेहनती अछि तइ परिवारक भैयारीक की गति अछि..!”

ओना, अधा-छिधा गीतानाथ राधारमणक विचार बुझबो केलक। मुदा केकरो (आनक) परिवारक कोनो विचारमे लगले हस्तक्षेप करबकेँ उचित नहि बुझि बाजल-

“भाय साहैब, अहाँ कोन हिसाबे बजै छी आ हम कोन हिसाबे बुझै छी से लगले केना..?”

गीतानाथक विचारकेँ राधारमणक मन मानि लेलकैन जे गीतानाथ बिल्कुल सत्य बात बाजल अछि। कोनो परिवार तीन रूपेँ ठाढ़ होइए। पहिल होइए जे पाछूसँ अबैत धारामे धड़ जोड़ि आरो तेज गतिये प्रवाहित करैए। दोसर भेल जे जही गतिये प्रवाहित होइत आबि रहल अछि ओही गतिकेँ पकैड़ आगूमुहेँ बढ़ब आ तेसर भेल जे धाराक बिल्कुल विपरीत दिशामे बढ़ैत जाएब। अपन तँ तेहने धारा परिवारक बनि गेल अछि। बाबाक अमलदारीमे परिवार श्रमशील छल, जेकर फलाफल परिवार सुभ्यस्त भेल मुदा पिताजीक अमलदारीमे एतेक ह्रास भेल अछि जइसँ आगूक पीढ़ी बिल्कुल निकम्मा-जाहिल बनि गेल अछि। अपन सोच, समझ अछि तँए ऐ बातकेँ बुझि पेब रहल छी। मुदा गीतानाथ तँ अखन बच्चा अछि, बच्चाक माने जन्मक आयुसँ नहि, अध्ययन-मननक विचारसँ, तँए नीक हएत जे ओकरे विचारमे किए ने गतिशीलतो आ भविस-रूपोक दृश्य देखबैत चली। अपने मन मानि जेतै जे की नीक की अधला अछि। एते विचार मनमे अबैत-अबैत रधारमणक विचार मोड़ लेलकैन। मोड़ ई लेलकैन जे अपन परिवारक समस्या अपन भेल, ओइ परिवारक कर्ता पुरुष अपने भेलौं। परिवारमे जे दुर्गुण प्रवेश कऽ चुकल अछि ओकरा नीक बनाएब माने सुधारब अपन दायित्व भेल। जँ अनका लग बाजब आ परिवारक लोक बुझता तँ कहबे करता जे एहने बेटा वंश उजाड़न होइए। तैसंग आन जे आनक किछु कहौ चाहता तँ अपनो परिवार सहए छैन, तैबीच अनेरे सबहक बीच रक्का-टोकी ठाढ़ हएत मुदा ओइसँ लाभ थोड़े हएत। रक्का-टोकी विवाद बढ़बैए जखन कि सोच-विचार प्रेमक समाज गढ़ैए। अपन पूर्ण पाशा बदलैत राधारमण बजला- “बौआ, तोंहू दुनू गोरे

समाजमे किछु करए चाहै छह आ अपनो मनमे जिज्ञासा छल, मुदा अपने तँ अपन गामसँ हजारो किलोमीटर दूरपर छी। जैठाम धरती अपन अधिकार मंगैए तैठाम एते दूर हटि केना किछु कऽ सकै छी।”

जहिना सीतानाथक तहिना गीतानाथक मन गदगरले छल जे राधारमण सन आइ.ए.एस. जँ पीठपर रहता तँ कतौ कोनो भय नहि अछि। दुनूक मनकेँ कोट-कचहरीक विचार माने सरकारी सहायता समाएल छेलैन। मुदा राधारमण समाजकेँ खूब नीक जकाँ तँ नहि, मुदा नीक जकाँ जरूर बुझि रहल छैथ जे समाज की छी आ केतए बोहियाल अछि। ओइ बोहिपनकेँ सुधारि धड़पन बनबैक अछि...। तैबीच दुनू बाल-बोध, माने सीतोनाथ आ गीतोनाथ अछि, तँए अपन पूर्व संस्कारकेँ जगबैत सम्मिलित रूपेँ बाजल-

“भाय साहैब, अपने सभ तरहेँ श्रेष्ठ भेलिऐ तँए अपनेक विचार बेसी नीक हेबे करत। अपने जे विचार देबइ, से शिरोधार्य अछि।”

ओना, दुनू गोरेक विचारकेँ नीक जकाँ राधारमण सुनलैन मुदा अपने-आपकेँ सेहो जानि रहल छैथ जे परिवार एते विपरीत भऽ गेल अछि जे जँ किछु बाजब तँ आनसँ पहिने अपने परिवारक लोक मुँह नोचि लेत। तखन समाजमे आन के सुनता। सभ अपन परिवार कहि टारि देता। राधारमण बजला-

“बौआ, समाजमे जखनेसँ कोनो काज करैक संकल्प मनमे लेबह, तखनेसँ ओइमे विरोध सेहो ठाढ़ हेतह। विरोधक कोनो सीमा नहि अछि, तैठाम तूँ दुइये गोरे एक भाग भऽ जेबह आ समाज दोसर भागसँ थोपड़ा देतह। पछाइत तँ कहबे करबह ने जे राधारमण फाँटिपर चढ़ा मारि खुआ देलैन। तोहीं कहह जे एहेन दोखी बनैमे अपन की गल्ती हएत?”

राधारमणक विचार सुनि सीतानाथ बाजल-

“भैया, ओंघीसँ देह भँसियाइए। अहाँ ने दिन-रातिक दरमाहा पबै छी तँ काजक भेलौं, मुदा हमसभ तँ से नहि छी, तँए हमरा सभकेँ की भेटत। जखन विचार करए सभ बैसलौं तँ किछु विचारिये कऽ ने अन्त करब।”

राधारमण बजला- “बौआ, आमक गाछी जखन आमक मासमे जेबहक आ आम जँ भरखैर पकैत रहतह, तँ देखबहक जे एकटा एम्हरसँ भट-दे खसल कि दोसर ओम्हरसँ। केम्हर दौड़ कऽ लेबह। तँए पहिने देखि लिअ पड़तह जे कियो दोसरो ने ते दौड़ रहल अछि। जखन नहि अछि तखन असथिरसँ ओहन काज करह जे जीवनकेँ उर्जवान बनबै।”

ओंघाएल सीतानाथ बाजल-

“भाय साहैब, आखिरी विचार अपन दियौ। नीनसँ कान बन्न भेल जा रहल अछि।”

राधारमण बजला-

“बौआ, तोहू दुनू गोरे अखन कौलेजेमे छह आ हमहूँ हालेमे छोड़लौं अछि। तँए पहिने ‘गामक इतिहास’ तीनू गोरे मिलि लिखह। अखन अपना सभ पढ़ै-लिखैक धारमे चलि रहल छी, तँए पहिने समाजकेँ चिन्हैक खगता अछि।”

गीतानाथ बाजल-

“भाय साहैब, नीक विचार अछि।”



शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

पाँचम पड़ाव

छअ मास बीत गेल। जहिना घोड़ो घोड़वान एक रफ्तार चलि दम मारए चाहैए तहिना राधारमण दम मारि शान्त भेला कि मोन पड़लैन अपन परिवार आ परिवारक सम्बन्ध। जे पिता कमाइक आशा तोड़ि लेलैन, हुनका मनमे की छैन..! परिवारक बीच नजैर पहुँचते राधारमणक मन छुब्ध हुअ लगलैन। केना परिवार बीच सम्बन्ध बनत? जखन मनमे एहेन विचार गड़ा गेल अछि जे जइ देशक लोक अखनो भीख मांगि जीवन-वसर करैए, ओकरा-जोकर कोनो काज नइ छै, तेकर अतिरिक्त जे काजो करैबला अछि ओकरा जँ छोट-छीन काज छइहो तँ बारह मासमे दू मास चारि मास भेटै छइ। तैसंग सभसँ विराट रूपमे ओ अछि जेकरा काजक अनुकूल मजूरी नहि भेटै छै। मुदा परिवार तँ ओहिना सबहक अछि जेना परिवार होइ छै, माने माता-पिता, पत्नी, बाल-बच्चा..! तैठाम हमरा सन-सन वेतनबला केते लोक छैथ। एते वेतनक पछातियो जँ बेइमानी रस्तासँ पाइये बनाएब तखन इमान कहिया बनाएब आ धरम केतए बँचाएब? अपन जे पहिल वेतन भेटल, तेही दिन जोड़ि लेलौं जे केते पाइ कोन काजमे खर्च करब अछि। जीवनकेँ गतिशील रखैले गतिशीलताक रस्ता धड़ए पड़ै छै, जँ से नहि धड़ब तँ समय पाछू छोड़ि देत। तइ हिसाबसँ पिताजीकेँ दू हजार रुपैआ महिना दिअ लगलयैन। तीन मास तक तँ कोनो सुनि-गुनि नहि सुनलौं। अपनो मनमे बिसवास जगि गेल जे पितोजी ऐ बातकेँ बुझि मानि लेलैन जे आइ राधारमण कमाएब शुरू केलक अछि, आइसँ पूर्व तक तँ ओकरादेही दू हजार महिना खरचे होइ छल, से जखन पूर्ति करैत परिवार चलबैत आबि रहलौं अछि, तइमे दोबर भेल। माने दू हजार खर्चक मुँह बन्न भेल आ दू हजार ऊपरसँ भेटल, तखन जे परिवार जइ गतिये चलैत किए ने होउ, मुदा चारि हजार तँ लाभकारी भेबे कएल किने। तैठाम चारिम मासमे जखन पितेजी पत्रक माध्यमसँ जवाब देलैन जे 'तोरा सन बेटासँ आशा तोड़लौं। जइ परिवारमे कहुना-कहुना पाँच हजारसँ

ऊपर चाह-पानक खर्च अछि, तैठाम जँ बेटा चाहो-पानक खर्च परिवारक नहि जुमा सकैए, तखन अनेरे ओकर कमाइ छुबे किए करब।'

पिताक पठौल पत्र मोन पड़िते राधारमणकेँ बुकौर लागि गेलैन। जखन पिताक जीवन बेटा आ बेटाक जीवन पिता नहि देख-बुझि सकता तखन दुनूक बीच सम्बन्ध सूत्र केहेन रहत। पिता-पुत्रक बीच जे विकृतता पनैप चुकल छल तइसँ राधारमण अपन जिनगीमे मोड़ आनए चाहलैन मुदा पीठेपर लिखल माइक पत्र राधारमणकेँ भेटलैन तँ मोड़मे जोड़ दैत अपन विचार बढ़ौलैन। माइक पत्रमे स्पष्ट छेलैन जे एक दिन भिनसरू पहरकेँ, करीब आठ बजे तीनू बापूत माने विलासोदेव सुखदेवो आ वामदेवो, विलासदेवकेँ तीन बेटा, जेठ राधारमण, माझिल सुखदेव आ छोट वामदेव। तीनू बापूत माने विलासोदेव, सुखदेवो आ वामदेवो भीनसुरका अहार चड़ि चुकल छला। चौक-चौराहापर सँ दुनू बेटो माने सुखदेवो आ वामदेवो पहुँच चुकल छेलैन। तीनू बापूतक बीच कचहरी लागल। दरबारक पहिल प्रश्न छल राधारमणक दू हजार रुपैआ महिना पठाएब।

भाए सन मुजरिम भाएकेँ भेटल। जैठाम धियो-पुता बजैए जे राहरिक दालि आ दियाद, माने भाए जेत्ते गलैए तेत्ते सुआदिष्ट बनैए। मुदा असल न्यायाधीश तँ पिताजी भेला। हुनके मुँहमे ने जय-पराजय दुनू अछि। जे अपने राधारमणक जीवन आ विचारसँ ओहिना हटल छला जेना पृथ्वीक दुनू ध्रूव अछि। एक दिस भोलाबाबा जकाँ भाँग-गाँजा पीब सभ मस्त तँ दोसर दिस चण्डी जकाँ लहलहाइतो छेलाए-हे। चौकपर चालि चलनिहार वामदेव रहबे करए। तहूमे छोट बेटा रहने बापक कनी बेसी दुलारू सेहो छेलाए-हे। बुझले अछि जे राज-दरबारमे एकटा बूड़िराज सेहो स्थायी सदस्य दरबारक होइते आबि रहल अछि। वामदेव बाजल-

"अहाँकेँ राधारमण भैया की बुझलैन? हम सभ नइ जनै छी जे ओहन-ओहन कुरसीपर लोककेँ बैसते सौनक बून जकाँ लछमी झहरए लगैए।"

वामदेवक मुँहक बात 'की बुझलैन' आकि अपन मनक घावक जलैन जगलैन से तँ विलासदेव जनता मुदा बेटाक प्रस्तावकेँ विलासदेव

सोल्होअना विचार करैले स्वीकारि लेलैन। बेसी बहसा-बहसी नहियेँ भेलैन किए तँ तीनू बापूतक धारा एक्के दिशामे प्रवाहित होइत रहैन। विलासदेव अपन निर्णय करैत बजला-

“जइ बेटापर आशा छल जे कमा कऽ घरकेँ चमकौत तेकरा बुते जखन चाहो-पानक खर्च नहि पुरौल हएत, तखन ओकरासँ केते आशा। वामदेव अखने चिट्ठी तैयार करह जे अहाँ अपन कमाइ अपने राखू। अहाँक कमायक आशा हम नइ करै छी।”

माइक पत्र मोन पड़िते राधारमणकेँ विचारमे छुब्धहीनता जगलैन। चिट्ठीक उपसंहार, माइक देल राधारमणकेँ मोन पड़लैन। लिखल छल-

“बौआ राधा, जखन अराध तखन ने राधा। कियो केकरो भरोसे जन्म नइ नेने अछि, जहिना सबहक दुनियाँ छी तहिना तोरो दुनियाँ छिअ, तँए अपन दुनियाँकेँ अपना नजरिये देखैत चलह।”

माइक विचारकेँ असीरवाद बुझि राधारमण अपन परखल गाम दिस विचार बढ़ौलैन। सीतानाथसँ मोबाइलपर सम्पर्क करैत बजला-

“बौआ सीतानाथ?”

सीतानाथ बाजल-

“हँ, भैया..!”

राधारमण-

“दुनू संगी संग भैयारी नीके छह किने?”

सीतानाथ-

“हँ, भैया। अपना दिसक?”

‘अपना दिसक’ सुनि राधारमण गुम्म भऽ गेला। गुम्म होइक कारण भेलैन जे तीनू गोरेक बीच, माने अपन, सीतानाथ आ गीतानाथक बीच जे सम्बन्ध अछि माने जइ काजे, तेतबेटा ने तीनूक बीच दुनियाँ अछि। अपने सरकारक जवाबदेह अफसर छी, ओ दुनियाँ अलग अछि। मुदा तीनूक बीच जे दुनियाँ बनबए चाहै छी तैठाम सीतानाथ अपने अपन काजक समाचार नहि कहि, प्रश्न उन्टा कऽ किए पुछलक। मुदा लगले राधारमणक

मन मानि लेलकैन जे सीतानाथ अखन बाल-बोध अछि, तँए एना बाजल। ओकरा सुधारि विचारकेँ अपना जगहपर आनी। सएह सोचि राधारमण बजला-

"बौआ, आइ छअ मास बीत चुकल अछि, अपनो जीवनक गाड़ी ओहिना चलि रहल अछि जहिना कोनो सवार भेल सवारीगाड़ी चलैत रहैए। अपन काजक की रफ्तार छह?"

'काजक रफ्तार' सुनि सीतानाथ बाजल-

"भाय साहैब, गीतोनाथ आबि गेल अछि। दुनू गोरे सम्मिलिते रूपेँ कहब।"

सम्मिलित रूप सुनि राधारमणक मनमे शान्तिक पड़ाव भेटलैन। शान्तिक पड़ाव ई भेल जे जखने दू मुँहक बात (माने विचार) एकरंग हएत तखने ओइमे शक्तिक संचार शुरू होइ छै। शान्तिक पड़ाव भेटिते राधारमण ऐगला सीमा निर्धारणक चर्च करैत बजला-

"बौआ, साल भरिक समय बनल छल, जे ऐगला साल औझुके दिन पोथी माने 'गामक इतिहास' समाजक बीच समारोहपूर्वक हाथमे देबैन। समारोह ऐ दुआरे जे पोथी लिखैमे जे-जे समस्या आएल ओहो समाजकेँ जना देब अछि किने। से जँ जना देबैन तखन ऐगला पीढ़ीक जे कर्ता-धर्ता हेता ओ तँ ओते परिचित भऽ गेल रहता किने जे अमुक काज करैमे की सभ समस्या अबैए। खुशीक विचार एकटा आरो भेल जे पिताजीकेँ जे दू हजार रुपैआ महिना दइ छेलिऐन, ओहो लेब छोड़ि देलैन। तँए चाहै छी जे ओइ पाइकेँ अही काजमे लगा देब। तँए पोथी छपबैक समस्याक समाधाने बुझह।"

राधारमणक विचार सुनि गीतानाथ बाजल-

"भाय साहैब, अखन हमरा एकटा काज अछि तँए निचेन नइ छी, रातिमे निचेनसँ तीनू भाँइ गप-सप्प करब। ओना, काज प्रगतिक पथपर अछिए मुदा तैबीच किछु बारीक बात एहेन अछि जेकरा वारीकीसँ देखैक अछि। अखन दोसर काजमे मन इंगेज भऽ गेल अछि।"

राधारमण बजला- "केतेकालमे फ्री भऽ जेबह?"

गीतानाथ- “भाय साहैब, ओना छी फिरिये मुदा जइ काजमे व्यस्त छी तेकर आयु समाप्त होइपर अछि। तँए ओकरासँ निपैट लेब बेसी जरूरी अछि।”

गीतानाथक बात सुनि राधारमणक मनमे खुशी संचरित भेलैन। खुशीकेँ संचरित होइते विचारक परिपक्वताक दिशा-बोध बुझि पड़लैन। राधारमण बजला-

“बौआ गीता, तोरे समैये समय मुदा जइ काजे गप-सप्प करब, ओकरा कमतर (साधारण) नहि बुझल जाए।”

गीतानाथ बाजल-

“मात्र एक घन्टाक समय दिअ। एक घन्टाक पछातिक समय भेल।”

राधारमण बजला- “बड़बढ़ियाँ। बौआ सीता, तोहर की हाल छह?”

सीतानाथ बाजल- “भाय साहैब, जखन अहाँ दुनू गोरे जोड़ा बनि जाएब तँ एकपलियाकेँ के पुछत? अहाँ दुनू गोरेक विचार हमरो मान्य अछि।”

बीचक घन्टा भरिक समय जहिना सीतानाथकेँ तहिना राधारमणकेँ अपन काजक उदेस कर्मशीलताक सीमापर ठाढ़ करैत मनकेँ मथए लगलैन। मने ने सभ किछु छी। चाहे राजा बनाबए कि भिखारी। सीतानाथक विचारमे नव जोड़ एकटा सेहो जोड़ा गेल। ओ जोड़ाएल ई जे जखने गामक इतिहास खोजि निकालब तखने ने ऐगला पीढ़ी खोजी मानि ऐगला खोजी ओहो हएत। इतिहासक पन्नामे पहिल लकीर खीचिनिहार तँ हमहीं सभ ने भेलौं। तहूमे तीन दिशाक तीनू गोरे खोजी छी। तँए, अपन-अपन दिशाक रेमन्त जकाँ ऐगला वाहन तँ भेबे केलौं किने...।

जहिना सीतानाथक मनमे खुशी पनैप रहल छल तहिना राधारमणक मनमे सेहो खुशी होइत रहैन जे पहिने तँ किछु भयंकर बुझि पड़लैन मुदा करैक क्रममे फूलोसँ हल्लुक बुझि पड़लैन...। तँए मनमे खुशी दिनो-दिन बढ़िते जा रहल छेलैन।

गीतानाथ काजमे रमल, राम वनमे जहिना विचैड़ रहल छला तहिना

सीतोनाथ आ राधारमणो राम-रमैया कृष्ण-कन्हैयाक नाच नचिये रहल छल।

घन्टा भरि केना बीत गेल, से तीनूमे कियो ने बुझलैन। गीतानाथ बाजल- “भाय साहैब, काजक तेहेन बँटवारा भेल जे जाँतक तरमे तेना दबा गेल छी जे अपनाबुते निकलल हएत कि नही।”

राधारमण मने-मन बुझै छला जे समाजक एहेन लीला अछि जे महानकेँ हान-हीन बना, हीन-हानकेँ महान बना अजगर साँप जकाँ गेरुली मारि बैसल अछि आ कियो लगमे ऐ दुआरे नहि जाएत जे आँखियेसँ सुरैक लेत। एकाएक राधारमणक मन ओइ सीमापर पहुँच गेलैन जे जिनका नजैरमे रखि इतिहास गढ़ए चाहै छी तिनकासँ छअ मास छिपा कऽ रखलौं। जे उचितो छल, किए तँ करतो ओहने छला जे अनुभवहीन छला, मुदा छबे मासक लग्नक मन काजक बुनियाद गढ़ैक शिष्य बना लेलक। तँए नीक हएत जे आइ समाजक बीच ईहो बातक खुलासा कऽ दिऐन जे हम तीनू गोरे गामक इतिहासक ओतबे अध्यायकेँ क्रियारूपमे लेलौं हेन जेते साल भरिमे कएल जा सकैए। छअ मास बीति गेल आ छअ मास बाँकी अछि, तँए सभ आमंत्रित छी, नव अध्यायो जोड़ैले आ जे अध्याय चलि रहल अछि तेकरो आगूक खोज करैले।

गीतानाथक बात सुनि राधारमण चौअनियाँ हँसी कहियौ आकि दुतियाक चानक मुस्की कहियौ तहिना बिहुसैत बजला- “बौआ गीता, तूँ अप्पन नामक माने बुझै छहक। गीता भेल महाभारतक ओहन अंश जे गीत गबैत जीवनकेँ महान जीवन बना दइए।”

राधारमणक विचार सुनि गीतानाथक मन जेना गीताक कर्मक मर्म बुझए लगल तहिना एकाएक मनमे बिजलोका जकाँ चमकल। चमकल ई जे राधारमण सन बेकतीक विचार व्यक्त भेलैन अछि। भाँट-बक्खोक विचार थोड़े छी जे आमक गाछपर महकारी फड़त आ महकारी लत्तीमे आम फड़त। आम तँ अमृत फल छी, ओ आमेक गाछमे फड़ि सकैए। विचारमे गीतानाथक मन तेतेक उदिग्न भऽ गेल जे विचारल कहियौ आकि बिनु विचारल मुहसँ निकलल- “भाय साहैब, ओना तँ काल्हि धरि यएह बुझै छेलौं जे मनुक्ख सामाजिक प्राणी छी, मुदा आइ...।”

सभ विचारकेँ समटैत राधारमण बजला- "बौआ, यज्ञ हुअ कि कृत्ति से पैघ हुअ कि छोट, जँ ओकर क्रमवद्ध, सिलसिलेवार ढंगसँ कएल जाए तँ जरूर ओ किछु ने किछु नीक फल दइते अछि। तँए नीक हएत जे जइ समाजक अंग अपना सभ छी, ओइ समाजकेँ सेहो जगबैत कहि दिऐन जे हम तीन गोरे ऐ काजे (गामक इतिहास) अपन विचारसँ आगू डेग रखलौं हेन, जेकरा आइ छबम मास बीत गेल, छअ मासक पछाइत ई पोथी सबहक हाथमे आबि जाएत, तँए बीचक जे समय अछि तेकरा सभ मिलि किए ने उपयोग करी। ओना, काज आंशिके बुझल जाए, किए तँ इतिहास ओहन विषय छी, जे सबहक संग अछि। माने सबहक अपन-अपन इतिहास अछिए। तैठाम तँ गाम गामे छी, गामा सन पहलमानो अछिए। जेकर रंग-रंगक पहल सेहो अछिए। अहाँ ने नट-बोल्टबला पेंच बुझै छिऐ मुदा पहलमानी केनिहारो सहए बुझै छैथ? ओ हार-जीतक पहल करिते छैथ आ ओहने पहल बना पहलमानियोँ करबे करै छैथ।"

समतल मैदानमे घोड़ा जहिना बेसम्हार दौड़ैए तहिना गीतोनाथ आ सीतोनाथकेँ भेल। संगठन रूपी शक्तिकेँ नमन करैत सम्मिलित स्वरे दुनू गोरे बाजल-

"भाय साहैब, अपने तँ मने-मन मनक कल्पनाकेँ सपना बना देखि नेने हएब, तँए ओ पहिने कने कहि दिअ।"

ओना, दुनू गोरेक विचार सुनि राधारमणक मन मानि लेलकैन जे विचारणीय प्रश्न तँ अछिए। मुदा ओकर अखन बुझबक अगुताइये की अछि। पछातियो बुझल जा सकैए। जखन घर बन्हैले विदा भेल छी आ आइ फड़कीक टाट बन्हैक अछि, तखन औझुका काजक ने पहिने मन बनाएब आकि मानीथम कि धड़ैन नापब। विचारकेँ रस्तापर अनैत राधारमण बजला-

"बौआ, तोहर विचार मानि लेलौं, मुदा अखन ओ महत्वपूर्ण रहितो आंशिक महत्वक अछि, तँए पछाति ले राखह। अखन पहिने समाजकेँ अपन काजक जानकारी दऽ दहुन। समाजक काज छी, तँए समाजमे सभ मुँह उठाबैथ। सभ चाहैए जे गाम-समाजक लोक चिन्हैथ, मुदा चिन्हो-पहचिन्ह कि कोनो एक्के रंगक अछि। ठको अपन ठकविद्याक परिचय

समाजकेँ देनहि रहैए। मुदा बहादुरी तँ ऐ बीचमे अछिए जे ठककेँ सभ जनितो ठकाइत रहैए।”

सीतानाथ बाजल-

“भाय सहैब, जिनगीक नक्शा-खतियानक चर्च छोड़ू। अखन की करबाक अछि तैपर विचार करू।”

अनुकूल आभास देखि राधारमण अपनाकेँ अनुकूल बनबैत बजला-

“बौआ, अखन तीनिये गोरे ने विचारो केलौं आ किछु काजो केलौं हेन। मुदा छी तँ समाजक काज, तँए समाजोकेँ किए ने भागीदार बनौल जाए।”

जोर दैत गीतानाथ बाजल-

“निसचित बनौल जाए। हुनकर खगता माने समाजक इतिहास लेखनमे समाजोक खगता अछिए।”

गीतानाथक विचारकेँ राधारमण गम्भीरतासँ लेलैन। गम्भीर होइत बजला-

“बौआ गीता, हुनकर खगता इतिहास लेखनमे अछि, एतबे नहि बुझक चाही। वएह इतिहास पुरुष छैथ जे इतिहासक सर्जकक संग सृजनहार सेहो छथिए।”

राधारमण आ गीतानाथक बीच होइत गप-सप्पकेँ सीतानाथ दुनू कान उठा-उठा सुनबो करए आ नजैरकेँ कखनो राधारमणपर तँ कखनो गीतानाथक नजैरियोपर दोड़बैत रहए। मुदा मुँह अवाक रहइ। गीतानाथ बाजल-

“भाय सहैब, सृजन संग सृजनहारक बीच जे सटान अछि तेकरा कनी फरिछा दीतिऐ।”

गीतानाथक जिज्ञासा सुनि राधारमणक जिज्ञासा सेहो बढ़लैन। बढ़ैक कारण भेलैन जे जखने लोकमे बुझैक आ करैक जिज्ञासा जागैए तखने ने समाजमे जगरपन अबैए। मुदा ई तँ जिनगी भरिक छी, तेकरा

केना एक्के दिनमे समेटि लेब। मुस्कान दैत राधारमण बजला- “बौआ गीता, सभसँ पहिने अपन बेकतीगत जीवन आ अपन दायित्वकेँ बुझक चाही। बेकतीगत जीवनक दू माने अछि, पहिल पारिवारिक दोसर अपन जीवनकेँ आगूक जीवनमे संचरित करब, जइ बनबैले नबे प्रतिशत माने पनरहअना अपन समय कियो अपनामे समर्पित किए ने करैथ, मुदा मात्र दस प्रतिशत माने एकअना जँ समाज ले सेहो समर्पित करैथ तँ बेकतीगत जीवन सेहो सामाजिक जीवनमे संचरित होइते अछि, वएह भेल अपन दायित्व।”

ओना, राधारमणक विचार जहिना सीतानाथ तहिना गीतोनाथ नीक जकाँ नहि बुझि पेलक। जइसँ मन अकछाए लगलै। मुदा कोनो काजक विषय पर गप-सप्प करैले सभ बैसल छल, तँए काजकेँ अगुअबैत सीतानाथ बाजल-

“भाय साहैब, ने अहाँ केतौ पड़ाएल जाइ छी आ ने हमहीं सभ केतौ पड़ाएल जाइ छी। तँए अखन आगू-पाछूक गप-सप्पकेँ छोड़ि अखुनका जे काज अछि तैपर विचार करू।”

अपन सीमापर सीतानाथकेँ ठाढ़ होइत देखि राधारमण टिक-टिप्पैन छोड़ि बजला- “तीनू गोरेक जे जिम्माक काज अछि, माने आंशिक इतिहासक रचना, तइमे अपन जे भार पुरलौं से सुना दइ छी।”

बिच्चेमे राधारमणकेँ रोकैत गीतानाथ बाजल-

“भाय साहैब, जहिना अहाँकेँ गामक इतिहास तकैक भार अछि तहिना ने हमरो गामक सम्पैतिक (आर्थिक) इतिहासक खोज करैक अछि आ सीतानाथकेँ सेहो गामक आएल-गेल पाहुन-परकसँ लऽ कऽ अखन तकक जेते लोक छैथ हुनको करनी-धरणी तकैक भार तँ अछिए। जहिना अहाँ अपन भार सभकेँ सुनेबैन तहिना ने छअ मासक वृतान्त हमहूँ सभ सुनेबैन तँए शॉर्ट-कटमे समयकेँ देखैत बजियौ।”

गीतानाथक विचार राधारमणकेँ नीक लगलैन। नीको केना ने लगितैन। जखने लोक एक-दोसरक बीच अपन पेटक बात बजए लगैए

तखने ने ओकर हृदयक संग आत्माक विचार सेहो दहलए लगै छइ। राधारमणकेँ सेहो तहिना भेलैन। बजला- “छअ मासक बीच सरकारक जेते कार्यालय अछि तइमे नाम-मात्र गामक लिखित शेष अछि। तइमे जेते ताकि सकलौं तेतेमे जे भेटल से सुना दइ छी। आगू जँ किछु नवो कागजात भेटत तँ ओकरा ऐगला पन्नामे जोड़ि देबइ।”

राधारमणक विचार गीतानाथ नीक जकाँ नहि बुझि पेलक। बाजल-

“से केना हएत भाय साहैब?”

राधारमण बजला- “बौआ, इतिहासोक ने इतिहास अछि। जहिना सासुकेँ सासु सेहो भेलैन आ ससुरकेँ ससुर तहिना इतिहासोक इतिहास अछि किने? मुदा तइमे एतेक अन्तर तँ अछिए जे सासुकेँ सासु आ ससुरकेँ ससुर भेल इतिहास अछि आ अपने सासु आकि ससुर बनब भविसक पेटमे अछि।”

राधारमणक विचार गीतानाथ आधासँ बेसी बुझलक मुदा सोल्होअना नइ बुझने मन कनी-कनी झुझुआइते रहलै। मुदा मुख्य विचारकेँ तर पड़ैत देखि अपन विचारकेँ मने-मन तर केलक आ बाजल-

“भूल-चूक लेनी-देनीमे जे छुट-छाट हएत ओ पछाइत मुँह-मिलानी कऽ लेब। अखन जे आवश्यक कहब अछि ओ सभकेँ कहि दियौन। किए तँ जिनगीक कोनो ठेकान अछि, जखन जिनगियेक ठेकान नहि अछि तखन जिनगीक लीलाक कोन ठेकान। मुदा जीवनो तँ जीवन छी ओही बेठेकान जीवनमे ने अपनो ठेकनगर जीवन केतौ-ने-केतौ घोंसिया कऽ रखनहि अछि।”

गीतानाथक विचार सुनि राधारमणक मन बिहुसि उठलैन, बजला-

“बौआ, तीनटा सूत्र गामक भेटल अछि। तइमे दूटा सरकारक खजानासँ भेटल अछि आ एकटा जनश्रुतिसँ माने जनमानससँ। पहिने सरकारी सूत्र सुना दइ छिअ पछाइत जनश्रुति सुनेबह।”

ओना, सीतानाथ किछु बाजि तँ नहि रहल छल मुदा गाँजा-भाँग

(माने चीलम) पीनिहार जहिना दम मारि मुँहक निशाँएल धुआँकेँ मने-मन घोंटए लगैए तहिना विचारकेँ घोंटि रहल छल। तैबीच गीतानाथ बाजल-

“भाय साहैब, शुभ-काजमे बिलम्म भेने अशुभ होइक सम्भावना बनए लगैए तँए आब..?”

राधारमण बजला-

“बौआ, अपन गामक जन्म आठमी शताब्दीमे दू गोरेकेँ गाममे बसलासँ भेल।”

आजुक परिवेशकेँ देखैत सीतानाथ बाजल-

“दुनू एक्के जाइतिक छला?”

राधारमण-

“नहि। ओइ समय दुनूक बीच जाति भेद नहि छेलैन। अपन जीबै-जोकर उपाय करब आ धारक पानि पीब, यएह दुनूक जीवन छेलैन। ओना, ओइ समय अपन गाम गामक श्रेणीमे नहि छल, किए तँ जैठाम पचीस घरसँ बेसी छल ओकर गिनती गाममे होइत रहइ। तइमे तीन-तीन साए परिवारक गाम सेहो छल।”

अचम्भित होइत गीतानाथ बाजल-

“आ दोसर?”

राधारमण बजला-

“दोसर अछि सर्वेक। जे 1890 इस्वीसँ लऽ कऽ 1902 इस्वीमे भेल। तइमे अपन गाम बनि गेल आ नक्शा खतियान तैयार भऽ गेल।”

राधारमणक विचारक प्रवाहमे गीतानाथकेँ प्रवाहित होइते मुँह फुटि पड़ल-

“वाह।”

विचारक भारकेँ कम करैत राधारमण बजला- “जनश्रुत बहुत रास अछि तँए खेसारीक खेतमे जहिना अकटा-मिसिया उजाड़ब सुतिपना अछि

तहिना अछि। तँए एकरा निचेनसँ दोसर दिन कहबह। ओना, लिखिकऽ तैयार कऽ नेने छी तँए पढ़ैक मन हुअ तँ लिहह।”

सीतानाथ बाजल-

“भाय साहैब, हल्लुक सवार घोड़ा फौद मारैए। एते दिन नइ बुझै छेलिऐ तँए गाम हल्लुक बुझि पड़ै छल, मुदा लोकक वृतान्त जखन खोजए लगलौं आ आएल-गेलकेँ तकै दिस बढ़लौं कि ठक-ठक गोपाल जकाँ भऽ गेलौं।”

सीतानाथक मुहसँ ‘ठक-ठक गोपाल’ खसिते गीतानाथ बाजल-

“भाय, सम्पैतिक खेल तँ आरो मदारियो नाचसँ बदतर अछि।”

राधारमण बुझि रहल छला। बजला-

“लागल रहह..!”



शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020

छठम पड़ाव

हिम्मतलाल ऐठामसँ एलापर राधारमणक विचार जहिना आगू-मुहेँ संचरित हुअ लगलैन तहिना सुवासिनीक सेहो भेलैन। दुनूक विचार संचरित होइक दू रंगक कारणो छेलैन। ओना, राधारमणक दृष्टिकोणमे दूरी सेहो छेलैन्हे। मुदा अखन से नहि। सुवासिनी जहिना अपन परिवार, देखि रहल छेली तहिना हिम्मतलालक सेहो देखि रहल छेली। दुनू परिवारक सभ विकारकेँ हटबैत सुवासिनी हिम्मतलालक सम्पन्न परिवार देखि लुभावनोन्मुख सेहो भेली। हेबो केना ने करितैथ..! पति विहीन हिम्मतलालक माएकेँ सेहो देखली आ अपन पिता विहीन माएकेँ सेहो देखि रहल छेली। तैसंग बाल-बच्चासँ लऽ कऽ बुढ़ धरिक जे परिवारक शान्तप्रियता होइए तेकरो हिम्मतलालक परिवारमे देखिये चुकल छेली।

इम्हर, राधारमणकेँ विचारैक अनेको कारणमे एकटा कारण ईहो छेलैन जे अपनो परिवारक इतिहास सोझहेमे अछि आ हिम्मतलालक सेहो अछिए, मुदा इतिहासक क्रम एहेन सन जे जेना दुनू परिवार दू ध्रुवसँ यात्रा करैत हुअए। यात्रा जे जेतए करैत हुअए मुदा हिम्मतलालक परिवार देखि राधारमणक मन अपन परिवारक प्रति झुझुआ जरूर रहल छेलैन। झुझुएबो केना ने करितैन..! जैठाम हिम्मलाल दुनू परानी अपनो आ अपन परिवारो ले जेना कमान रहै छैथ तहिना बच्चासँ बुढ़ धरि सेहो तीर-कमान नेने तैयार रहिते छन्हि।

भुवनेश्वर (उड़िसा) एला राधारमणकेँ छह मास बीत चुकल छेलैन। बर्खक आधा। काज करैक अपन जे कला छैन, ओ धीरे-धीरे आब एहेन बनि गेलैन अछि जे धारक महारपर चढ़ि जेना मानसरोवरसँ गंगासागर तक यात्रा करए लागल होइन। मनमे जे होइत होनि मुदा छअ मासक बीच कोनो शिकाइत किम्हरोसँ, किम्हरोसँ माने भेल जे ने जनमानसे दिससँ आ ने प्रशासने दिससँ, एकोदिन भेलैन। तँए मनमे ईहो विचार घर केनहि छैन

जे अपन जिनगीक पहिल बहाली, माने पहिल कदम छी जेकर अपन निसचित सीमा छइ। ओइ सीमाक उल्लंघन भेने ने कियो अपन अवधि (सीमा) पुरौनहि बिना एम्हरसँ ओम्हर माने हेर-फेर होइ छैथ, मुदा तइमे अपनाकेँ नहि देखि राधारमणक मनक बलमे दिनो-दिन बढ़ोतरी भेने मनोबल सेहो सकताए लगले छन्हि।

कार्यालयमे तँ दुनू गोरे, माने राधारमणो आ हिम्मतोलाल बेसीकाल संगे बितैबते छैथ, तइमे कुरसीक जे दूरी अछि ओइमे खिंचाव भेल। छअ मासक बीच परिवारक संग राधारमणो दू बेर आरो हिम्मतलाल ऐठाम पहुँच चुकल छला। तइमे एक दिन संजोग बनल आ महिले-जगतक विचार सबहक बीच उठि गेल। जइसँ दुनू गोरेक पत्नीमे माने रूक्मिणी आ सुवासिनीक बीच बजड़ा-बजड़ी शुरू भऽ गेल। हिम्मतलालक पत्नी सुवासिनीकेँ कहि देने रहैन- ‘दीदी, अपन परिवारक बात जँ कियो इमान रखि बाजैथ तँ ओ सभसँ पवित्र गंगा असनान करब भेल।’

सुवासिनी अपने विचारमे ओझरा गेल छेली। ओझरा ई गेल छेली जे जमीनपरक गंगा आ आध्यात्मिक गंगाक माने बुझबे ने करै छेली। तँए गंगा केना पवित्र रहैए आ केना ओइमे प्रदूषण बढ़ैए से बुझिये ने पेब रहल छेली।

ओना, राधारमण सेहो मने-मन ओझराएले छला। ओझराएल ई छला जे रूक्मिणी (हिम्मतलालक पत्नी) जे बजली जे ‘इमान रखि बजनिहार’, एकर माने की भेल? इमानकेँ राखि जखन बाजब तखन ओ इमानक भेल आकि इमान नइ भेल? एक मनमे होनि जे इमान सहित एकटा विचार भेल मुदा इमान रखि बाजब ई की भेल..? फेर लगले होनि जे इमानकेँ मूर्तिरूप आगूमे रखि बाजब। दुनूमे सँ कोनो भाँजेपर ने चढ़लैन। मुदा छला तँ सबहक बीचमे। जइसँ आगूक कोनो चारा नहि देखि समगम होइत बजला- “मनुक्खसँ लऽ कऽ समाजो आ देशो-दुनियाँमे जेते सजगता औत ओते ओ आगू बढ़बे करत।”

ओना, बजैक क्रममे राधारमण बाजि गेला मुदा जखन अपन बाजबपर अपने विचार करए लगला तखन मनमे उकड़ू हुअ लगलैन। उकड़ू ई हुअ लगलैन जे नीक काज केनिहार जहिना करैकाल सजग रहै

छैथ तहिना अधला काज केनिहार सेहो सजग नइ रहै छैथ सेहो केना नइ कहल जाए..? मुदा संयोग नीक रहलैन जे ने कियो हिम्मतेलाल परिवार दिससँ बाजल आ ने सुवासिनीए किछु बजली। चुपा-चुपी देखि राधारमण सुभद्राकेँ कहलखिन-

“चाची, गोटे-गोटे दिन अपनो डेरापर आउ। पत्नियो असगरे रहै छैथ आ अहूँ निचेने रहै छी। डेरो कोनो दूर नहियेँ अछि। पएरो आबिये सकै छी। तहूमे अहाँ ऐठाम जेते सजग छी तेते ओ नहियेँ छैथ, माने सुवासिनी, तँए हुनका अबै-जाइमे कनी भ्यौन लगबे करतैन। तहूमे सरकारक जिम्मामे सेहो भेलौं, तँए ओते तँ बरतए पड़त।”

राधारमणक विचारमे प्रवाहित होइत सुभद्रा बजली-

“बौआ, हम तँ जहिना हिम्मतलालकेँ बेटा बुझै छी तहिना अहूँकेँ बुझै छी। किए तँ हम किछु भेलौं तैयो तँ पाँचटा पोता-पोतीक दादी भेबे केलौं किने। दुनू परानी हिम्मतलाल सन बेटा-पुतोहु सेहो अछिए। आ अहाँ अखन नव-नौतार छी, भगवान एकेटा सन्तान देलैन अछि आरो दैथ।”

सुभद्राक पेटक बात राधारमण आँकि रहल छला। आँकि ई रहल छला जे जँ कोनो तरहक मलीनता हुनका मनमे रहितैन तँ दुनियासँ निराश भेल जकाँ दुनियाँकेँ या तँ गरियबैत बजितैथ वा दुनियाँकेँ छोड़ैत बजितैथ मुदा से तँ नहि छैन। हमरो परिवार नीक जकाँ बढ़ह से तँ मनमे छैन्हे।

जहिना छोटो-छीन पानिक प्रवाहकेँ कियो रस्ता बना प्रवाहित करैत धारा बनबैए तहिना राधारमण बजला-

“चाची, अपने किछु भेलिऐ तैयो एक जिनगी तँ टपले भेलिऐ, जिनगी चाहे जेहेन रहल हुअए मुदा जाबे ओइमे जीवनांशु नहि अछि ताबे ओ जीवित केना अछि। चाहे जीवनक जे पहलू जेहेन रहल हुअए मुदा भव पक्ष तँ ओहन अछिए जे भाव-भुवनमे अखनो ओहेन अछि जेहेन हेबा चाही।”

राधारमणक विचारकेँ कोन रूपेँ सुभद्रा बुझली से तँ ओ जानैथ मुदा मुहसँ निकललैन-

“बच्चा, अहूठाम (माने अपना ऐठाम) कि कोनो काज करै छी, भरि

दिन बच्चा सबहक संगे हेराएल रही छी। टहलै-बुलैक अपनो मन होइए। काल्हि आएब।”

जहिना सुभद्रा दोसर दिनक समय बनौलेन तहिना बेरू पहर माने तीन बजेक पछाइत एकटा पोता, जे सात बर्खक अछि आ एकटा पोती जे नअ बर्खक अछि, दुनूक संगे पएरे-पएरे सुभद्रा राधारमणक डेरा लग पहुँच रस्तापर ठाढ़ भेली। मोबाइलियोक तँ जुग आबिये गेल अछि। जखने सुभद्रा घरसँ निकलली, रूक्मिणी हिम्मतलालकेँ सूचित कऽ देलखिन। हिम्मतलाल राधारमणकेँ कहलकैन। राधारमण सुवासिनीकेँ सूचित कऽ देलखिन। जइसँ राधारमणक सरकारी निवासमे प्रवेश करैमे सुभद्राकेँ किछु ने बाधा भेलैन। ओना, राधारमणोक मनमे उठि गेलैन जे भाय दुनियाँ तँ दुनियाँ छी। कियो चाउरकेँ भाते टा बना खाइए कियो रोटियो बना नइ खाइए सेहो केना नइ कहल जाएत। भलेँ लोक कहए जे गहुमक रोटिये टा होइ छै, मुदा लोक भात बना नइ खाइए सेहो केना नइ कहल जाए। तँए ऑफिसक काज निपटा सबेर-सकाल निकैल जाएब। थाना नइ ने छिऐ जे चौबीसो घन्टा चलत।

ऑफिसक काजकेँ राधारमण हाँइ-हाँइ निपटाबए लगला। तही बीच हिम्मतलाल आबि कहलकैन-

“सर, छुट्टीक समय सेहो लगिचाइये गेल अछि, तइ बीच कनी पहिने छोड़ि दइतौं तँ अपन काजक भार दोसरकेँ सुमझा चलि जइतौं।”

ओना, राधारमणक मनमे ईहो रहैन जे अपन कार्यालयक तँ अपने मालिक छी, माने बिना केकरो कहने जा सकै छी। मुदा हिम्मतलाल तँ से नहि अछि...। राधारमण बजला-

“हिम्मत! छुट्टीक समय तँ खटियाएले सन अछि। दुनू गोरे संगे चलब।”

राधारमणक बात सुनि हिम्मतलालक मन पूर्ण सन्तुष्ट भेल। पूर्ण सन्तुष्टक माने भेल जे राधारमण असगरे जेबाक छुट्टी दऽ दितथिन तँ ओ भेल सन्तुष्ट, मुदा जखन दुनू खियालसँ भेल, माने ऑफिसो आ डेरोक खियालसँ भेल तखन पूर्ण सन्तुष्ट भेल।

चारि बजैमे मात्र आधा घन्टा शेष छल कि हिम्मतलाल ऑफिसमे ताला लगा राधारमणक संग निकैल गेल।

दुनू गोरे माने राधोरमण आ हिम्मतोलालकेँ पहुँचैसँ पहिने सुवासिनी सुभद्राकेँ कोठरीमे बैसा जहिना गप-सप्प करए लगली तहिना हिम्मतलालक नअ बर्खक बेटी- सुतीक्ष्णाक संग सुचिता सेहो गप-सप्प करए लगल। सुचितो अढ़ाइ बर्खसँ टपि पौने तीन बर्ख करीबक भाइये गेल अछि। ओना, परिवारक प्रभाव सेहो उमरपर पड़िते अछि। उमरक माने सिर्फ दिने-महिनाटा सँ नहि होइए, परिवारक वातावरणानुकूल क्रियो रूपमे आ भावरूप-विचाररूपमे सेहो होइते अछि। जइसँ एक परिवारक पाँच बर्खक बच्चा दोसर परिवारक तीन बर्खक बच्चाक बरबरि भऽ जाइए आ दोसर परिवारक बच्चा सेहो ओहिना भऽ जाइए। ओना, परिवारमे बच्चा रूपमे सुचिता असगरे छल तँए दोसरक खगता खलिते छेलइ। सुतीक्ष्णाकेँ संग नेने लगमे आबि सुचिता सुवासिनीकेँ कहलक- “मम्मी, बहिना लगा दे।”

सुचिताक मनमे एहेन विचार नहि जागल छेलै जे बहिना लोक अपनो लगा लइए, जेकर कोनो उमेरो-ठेकान निर्धारित नहियेँ अछि। तही बीच राधारमण हिम्मतलालक संग डेरा पहुँचला।

जहिना राधारमण अपन ऑफिसक वस्त्र उतारि डेराक वस्त्र पहिरलैन तहिना हिम्मतलाल सेहो अपने परिवार जकाँ अपन उतारैबला वस्त्र उतारि बैसल।

चारू गोरेक बीच राधारमण विचारलैन जे अखन दू ओहन परिवारजन बैसल छी जे दू ध्रुवसँ संचालित होइए। माने ई जे हिम्मतलाल आदिवासी परिवारसँ अबैत। जे जंगली रूपसँ किसानी रूपमे नीक जकाँ पएर रोपनौं ने अछि, ओना, हिम्मतलालक पिता सेहो सरकारी काजसँ जुड़ि गेल छला, मुदा वेतन ओहने पबै छला जे पेट आ देहक वस्त्र पुरबैत-पुरबैत सठि जाइ छेलैन। तैठाम नीक घर बना, नीक भोजनक संग नीक जीवन जीब केना सकै छला। सुभद्राक बचपनक देह आन बच्चासँ भिन्न छल माने सुन्दरो आ कटगरो, मुदा बेवसाय तँ आने गरीब बच्चा जकाँ छेलै, गाछक सुखल लकड़ी तोड़ि अपनो परिवारक खर्च पुरबैत छल आ

किछु बेचिकऽ परिवारक नोनो-तेल चलबैत रहए। जखन कि सुवासिनी, एक प्रोफेसरक बेटी रहि चुकल छैथ। कौलेज तकक शिक्षा सेहो पेब चुकल छैथ।

हिम्मतलाल चपरासीए किए ने छी, मुदा बी.ए. पास तँ अछिए। चारि गोरे जखन एकठाम बैसल छी तखन ओहने गप-सप्प ने समगम करत जइसँ चारू गोरे जुड़ल होइ। ऑफिसक चर्च करब तँ अनेरे महींसिक आगू वीण बजाएब हएत। हिम्मतलालक विचारकेँ अखन मोले कोन छै। पिताक मृत्युक अनुशंसापर सुभीतेमे सरकारी नोकरी पइर लगलै, ओ केना बुझत जे नोकरी पाछू दौड़निहारकेँ विचारक पानि उतैर उमेरो पानिमे चलि जाइ छै। मुदा नोकरी मनमे झिलहोरि खेलिते रहि जाइए। असल जीवन, माने जइ जीवनसँ किछु सीख भेटैए ओ तँ हिम्मतलालक माएमे छैन, दोसर अखन सभसँ उमरदारो छथिए तँए नीक हएत जे हुनकेसँ जीवनक बात किए ने सभकियो सुनी। ओहुना एकटा बीतल जीवनक जीवन्त वृतान्त सेहो हेबे करत, जखन कि हमरा सबहक, माने बाँकी सभ कियोक जीवन अखन भविस दिस डेग उठेबे केलक अछि।

ओना, राधारमणक मनमे दोसरो बात घुरियाइत रहैन, मुदा ओहन परिस्थित नहि देखि पेब रहल छला। ओ परिस्थित तँ समाजक बीच होइए जे एक दिस जहिना समाजमे भूपति छैथ तँ दोसर भू-विहीन। तहिना एक दिस महाजन छैथ तँ दोसर दिस रिनिया सेहो छथिए। एक दिस विद्वतजन छैथ तँ दोसर दिस अमरुख सेहो छथिए। मुदा ऐठाम तँ समाज-परिवार गौण अछि। मात्र दू परिवारक छी। तहूमे दुनू परिवारक आमदनीक स्रोत सेहो एक्के जड़िसँ अछि, भलेँ ओ कम-बेसी किए ने हुअए। ततबे नहि, जहिना अपने दिन उगैत ऑफिसकेँ सुमरि अपन दिनचर्यामे लगि जाइ छी तहिना ने हिम्मतोलाल लगि जाइत हएत। जइ बेवस्थाक बीच समाजक बोली-वाणि अछि तइसँ तँ दुनू गोरेक परिवार फुटकझाड़ भइये गेल अछि। ओही फुटकझाड़मे ने दुनू गोरेक परिवार ठाढ़ भऽ रहल अछि...।

राधारमणक मन मानि गेलैन जे एक नव सीमाक शुरूआत केने बिना, माने भेल जे चाहे रूप जे हुअए, मुदा सभ कियो मने-मन अपन जीवनक सीमा तँ बनेबे करै छैथ, भलेँ ओ जे हुअए, जेते हुअए, नइ हुअए

कि हुअए, ई दीगर भेल...। राधारमण बजला-

“चाची, अखन समाजक बीच थोड़े छी जे दस रंगक बात-विचार हएत। अखन तँ मात्र दू परिवारक लोक बैसल छी, तँए नीक हएत जे अपने दुनू परिवारक गप-सप्प किए ने करी।”

राधारमणक बात सुनि सुभद्रा चातक[3] जकाँ विभोर होइत बजली-

“बाउ राधा, कबीरोबाबा कहने छैथ जे ‘कुलबामे कोइ-कोइ ज्ञानी..।’ अहाँ सन सुपात्र पुरुखक जन्मसँ परिवारे नहि, समाजो वैतरणी पार होइए।”

जहियासँ परिवारक भार बेटा-पुतोहुपर सुभद्रा सौंपि देली तहियासँ अपन समय भक्ति-भजन दिस लगबए लगली, जइसँ गप-सप्प करैक ढंग बदलिये गेल छेलैन। सुभद्राक विचारक निरमलतासँ राधारमण विभोर भऽ गेला। जइसँ धड़हा विचार जकाँ विचार मनमे जगि गेलैन। बजला-

“चाची, जहियासँ अपन जिनगी मोन अछि तहियेसँ कनी कहियौ।”

राधारमणक बात सुनि सुभद्राक मन पसीज गेलैन। बजली-

“बाउ, बच्चेमे विवाह भेल।”

‘बच्चेमे विवाह’ सुनिते राधारमण बिच्चेमे बजला-

“केते बर्खक अवस्थामे?”

सुभद्रा-

“सात बर्खक अवस्थामे, जखन माएकेँ जारैन तोड़ि कऽ आनि दइ छेलिऐन जइसँ भानस होइ छल।”

ओना, राधारमणक मन परिवारक उत्पादित पूँजी दिस बढ़ए लगलैन, मुदा तेकरा समेटि बजला-

“बच्चेमे, माता-पिता विवाह किए केलैन। ताबे तँ आनठाम माने सासुर रहै-जोकर नहि भेल हएब?”

राधारमणक जिज्ञासाकेँ देखि सुभद्रा ओहिना विह्वल भऽ गेली

---

[3] चिड़ै

जहिना कियो इतिहासक पन्नामे अपन नाम सटल देखि होइए। बजली-

“बाउ, हमरा माए-बाप सन-सन अधिकांश परिवार समाजमे छलो आ अछियो, जकरा दैवी डांगसँ बेसी मानवीय डांगक चोट पड़ैत रहइ, तैठाम जिनगीक कोनो ठेकान छल, मुदा बाल-बच्चाकेँ चेष्टगर बनेला पछातिये ने छोड़ब नीक हएत। बेटा-बेटीक विवाह-दान सेहो ओही चेष्टगर बनबैक सीमाक भीतर ने अबैए।”

शब्दक उनट-फेर आकि विचारक उनट-फेर भेलैन से तँ राधारमण बुझता मुदा एतबे बजला- “चाची, कनी दोहरा कऽ कहियौ।”

सुभद्रा बजली-

“बाउ, बाल-बच्चाकेँ विवाह-दान करब माता-पिताक क्रियमान कर्म छी, एकरा निमाहब सभ माता-पिता अपन धर्म बुझै छैथ, जिनगीक अनिश्चितता देखि जल्दी-सँ-जल्दी ऐ काजसँ निवृति अपनाकेँ करए चाहै छैथ तँए बाल-विवाह होइत आबि रहल अछि।”

सुभद्राक बात सुनि राधारमणक मन आरो आगू बढ़ि गेलैन, मुदा से अपना मुहेँ नहि बाजि सुभद्राकेँ ऐतिहासिक पौरुष मानि, हुनके मुहसँ बजबैक खियालसँ बजला-

“आरो किछु मनमे, माने माता-पिताक मनमे छेलैन?”

ओना, सुभद्रा सेहो अपन जीवनक पाछुए उनैट देखि रहल छेली, मुदा नमहर बाटक दूरी रहने नीक जकाँ नहि देखा पड़ै छेलैन, मुदा राधारमणक बात सुनिते जेना धक-दे मोन पड़लैन तहिना धक-धकाइत बजली-

“बाउ, विचार तँ अनेको मनमे छेलैन, अनेको कि जे एतेक तँ मनमे छेलैन्हे जे अपन सखा-सन्तान अपनासँ सभ तरहेँ नीक भऽ अपन जिनगी देखए, मुदा से तँ मनक विचार मनेमे सपनौती बनि रहलैन।”

बजैत-बजैत सुभद्रा जेना जीवनक बोनमे भोतियाए लगली। मुदा लगले चेत गेली जे अपन जिनगीक बात ने बाजब, आनक तँ नीको अछि, अधलो अछि ओइपर तँ सामूहिक ढंगसँ विचार हएत। ऐठाम तँ मात्र दुइये परिवारक लोक छी, तँए परिवारक जे उपयोगी विचार अछि, तेतबे बाजब

ने वाजिब हएत। विचारक धरातलपर सुभद्रा पहुँचते बजली-

“बाउ, विवाह सिर्फ स्त्री-पुरुषक जीवनेक बान्हटा नइ छी, सामाजिक बान्ह सेहो छी। ओ छी जे विवाहक पछाइत जँ कोनो पुरुष कोनो औरतकेँ कुदृष्टिसँ देखत वा कोनो औरत पर-पुरुषक संग दुरबेवहार करत तँ ओ दुनू समाजक बीच अन्यायी भेल।”

सुभद्राक बात सुनि राधारमणक मन बौलाए लगलैन। मुदा बौलापनकेँ शान्त करैत, विचारकेँ दोसर दिस मोड़ैत बजला-

“चाची, अपन जे अखन तकक जीवन छल माने अपन हाथ-पैरक बले जे जीबै छेलौं, तैठाम भक्ति-भजनक पाछू रमि गेलौं, आ जेना माता-पिताक संग बेटा-पुतोहुक बेवहार देखै छी, तखन भक्ति-भजन रहि पौत?”

जहिना अदम साहस कऽ कियो कोनो काजमे कुदैए तहिना असीम बिसवासक संग सुभद्रा बजली-

“बाउ, जहिना सभ बेटा-बेटी माइयो-बापक सन्तान छी तहिना माइयो-बाप सबहक माए-बाप छथिए। मुदा जिनगीक जे धार बहैए तइमे अनेको धार प्रवाहित भऽ रहल अछि। तँए सगर जकाँ अनेरे किए समुद्र उपछै पाछू लागब, तइसँ नीक ने अपन जीवनक समुद्रकेँ उपछब हएत।”

सुभद्राक विचार सुनि राधारमणक विचार जेना आरो स्वच्छ पानिसँ धुआ गेलैन। धुआइते बजला-

“चाची, दुनू परानी हिम्मतलालपर केते बिसवास करै छी?”

सुभद्रा बजली- “जहिना सोल्होअना अपन बुझि हम केलिऐ, तहिना ने ओहो करत। तैबीच अन्देशा अछि जे परिवेशक अनुकूल करत कि नहि, मुदा ई निर्भर करैए जीवनक बेवहारिक पक्षपर। से दुनू परानी हिम्मतलालमे छइ। अन्देशा तँ हजारो अछि, मुदा ईहो तँ अछिए जे सभ माता-पिता बेटे-पुतोहुक आशापर जीबै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि, खेलाइते-धुपाइत मरणक अनुशरण सेहो करिते छैथ।”

राधारमण बजला- “हिम्मत, बहुत समय भऽ गेल, अहिना आबा-जाही होइत रहत तँ जीवनक अनेको गुत्थी अपने-आप सुलझैत जाएत।”

अप्पन मनक बेथा व्यक्त करैत हिम्मतलाल बाजल- “भाय साहैब, की कहब! केतादिन पत्नीक अनुचित काज देखि मन तामसे जरैत रहैए मुदा माइयक मुहसँ पत्नीक प्रशंसा सुनि अपन तामसकेँ मेटबए पड़ैए। मेटेबो केना ने करब, जे माए परिवारक श्रेष्ठ होइक नाते सभपर समान नजैर रखितैथ से तँ अपने एकभग्गू भऽ जाइ छैथ, तखन हमर बात के सुनत आ केकरा कहबै।”

हिम्मतलालक विचार सुनि राधारमणक मनमे भेलैन जे भरिसक हिम्मतलाल पुरुष-महिलाक विचारक समरूपतामे भँसिया रहल अछि तँए किए ने ओहन भासकेँ नीक सुर-तानमे व्यक्त कएल जाए। बिहुसि कऽ राधारमण बजला-

“हिम्मत, एहनो तँ सम्भव अछिए जे चाचीकेँ तोहर पत्नी अपने माए जकाँ सेवा करैत होनि, जइसँ तोहर विचारक काज पछुआ जाइत हुअ, जेकर तामस उठैत हुअ?”

एक तँ ओहुना हिम्मतलाल राधारमणकेँ अपन ओहन जेठ भाय बुझै छैन जे पिता सदृश होइ छैथ, मानिते छैन, तैपर बालि जकाँ (रामायणिक बालि जकाँ) अपन सिद्धान्तक संग अपन दिनचर्योक समिश्रण करैत बाजल होथि जइसँ निरुत्तर जकाँ सेहो भइये गेल छल, मुदा कचहरिया हवा तँ लगले छइ, तँए अपन तामसकेँ एलोपैथी दवाइ जकाँ दबैत, जिनगीक समझौता करैत हिम्मतलाल बाजल-

“भाय साहैब, कोनो कि आइये भेल हेन आकि अदौसँ होइत आबि रहल अछि जे परिवारमे कनी-मनी झिक्कम-झीक होइते अछि। ओ तँ महिनाक इजोरिया-अन्हरिया पखक दुआरे होइए, मुदा फेर सभ एक्केठाम बैस खेबो-पीबो करै छला आ हवो-गब तँ करिते आबि रहल छैथ। परिवार छी, कुम्हारक आबा जकाँ माटिक दसटा बर्तन एकठाम अछि, कनी-मनी ढनमनेबे करत। मुदा एकोटा फुटए नहि से अन्तो-अन्त धरि कुम्हार करिते अछि।”

हिम्मतलालक बात सुनि राधारमण भरमे-सरम चुपे हएब नीक बुझलैन। विचारकेँ आगू बढ़बैत राधारमण बजला- “हिम्मत, परिवारक

बीच लोक तेना सटल रहैए, माने काजसँ सटल रहैए, जे क्षण-पलक महात्म्यकेँ तँ जनैए मुदा क्षण-पलक उपयोगोक तँ अपन महात्म्य छइहे। ..हिम्मत, अहिना सभ कियो एकठाम बैस गप-सप्प करैत परिवारकेँ आगू मुहेँ बढ़बैत चलब। अखन समयो बेसी भऽ गेल, जइसँ परिवारक काजो सभ एकाएकी बढ़बे करत।”

सुभद्राक विचार राधारमणक मनकेँ तेना लीड़ी-बीड़ी कऽ देलकैन जे अपने आपमे बेसम्हार हुअ लगला। मोन पड़लैन अपन सासु आ सासुरक परिवार। ओइ परिवारकेँ ठाढ़ करैमे अपनो योगदान अछि। सुवासिनी तँ सहजे ओही परिवारक छैथ, तँए किए ने दुनू परानी ओकरो समीक्षा कइये ली। हिम्मतलालक परिवारकेँ अड़ियाइत सुवासिनी घुमली कि राधारमण टोकैत बजला-

“कने सुनू। पहिने मस्तगर चाह पिआउ, पछाइत अपन परिवारक सेहो विचार करब अछि। ऐठाम तँ दुइये गोरे छी, तँए अपने दुनू गोरे ने एकठाम बैस परिवारक आगू-पाछूक विचार करब।”

जहिना राजाक मंत्री सदिकाल राजाकेँ अपना अनुकूल रखए चाहै छैथ तहिना सुवासिनी बजली-

“अपनो मनमे उठैत रहै छल जे जखन नैहरे बिसैर गेलौं तखन परिवारजन केतए छैथ से कनी ठिकिया ली।”

चाह बनबए सुवासिनी भनसाघर गेली कि बिच्चेमे सुचिता राधारमण लग पहुँचल। सुचिताकेँ देखि राधारमण मने-मन विचार करए लगला जे अखन जइ रूपेँ बेटीक सेवो कऽ रहल छी आ मनमे अराधना सेहो करै छी जे अपनासँ बीस परिवारो आ बीस गुणो-धर्म होइ, मुदा की हएत से केना कहल जाए? तहूमे समाजक जे दहेज लेन-देनक परिवेश बनि गेल अछि तइमे तँ बेटी जाति पाइबला-हाथक खेलौना बनि गेल अछि। जेकरा छै ओ नाङ्गरो-लुल्हकेँ अकास चढ़ा दइए आ जेकरा नइ छै ओ साक्षात् सरस्वतियोकेँ रावणक खवासिनी सेहो बनाइये रहल अछि...। तही बीच सुवासिनी चाह नेने पहुँचली।

सुवासिनीक हाथमे चाहक कप देखि राधारमणक मन, जहिना

लंकासँ कुदि हनुमान सातो समुद्र टपि गेला तहिना भुवनेश्वरक नोकरीसँ अपन विद्यार्थी जीवनमे पहुँच गेलैन। मोन पड़लैन गोविन्द बाबूक विचारोत्तेजक भाषण, जे पढ़बैक क्रमक छल। सिनेमाक रील जकाँ राधारमणक मनमे जिनगीक रील क्रमानुसार चलए लगलैन। जइसँ चाह केना सठि गेलैन से बुझबे ने केलाह।

तैबीच सुवासिनियो चाह पीब सुचिताकेँ आगूमे बैसबैत अपनो गप-सप्प करैक मन बनौलैन। ओना, राधारमणक मनमे अपन पैछला जिनगीक सभ खेल दौड़-धुप कइये रहल छेलैन। जिनगीक उत्कृष्ट काज जहिना जिनगीक उत्कृष्ट खेल कहल जाइए तहिना आवश्यकसँ आवश्यक काजकेँ सेहो लोक खेलौना बना फेकबे करैए। अपना मनमे मस्त राधारमणकेँ देखि सुवासिनी बजली-

“एक तँ गनल-गुथल दू परानी छी, बच्चाक कोन हिसाब, तहूमे जँ अपने-अपने मने मगन रहब तखन एक-दोसरक बीचक विचार विचरण केना करत?”

सुवासिनीक बात सुनि राधारमण अनचोकमे सुनल बात जकाँ चौंकैत बजला-

“मन कनी नीना जकाँ गेल छल। ओना, चाहो पीबे केलौं मुदा नीक जकाँ भक्क नहि खुजल। आब नीक भऽ गेलौं।”

सुवासिनी-

“की गप-सप्प करैक बात कहने छेलौं?”

सुवासिनीक मुहसँ ‘की गप-सप्प करैक बात’ सुनि राधारमणक मन सुवासिनीक ओइ घड़ीक सुई देखए लगलैन जइ घड़ीमे सुवासिनी पितृविहीन भेल छेली। की मन भरि कानि कऽ ओइ खाधिकेँ सुवासिनी भरि सकै छेली? ऐठाम आबि राधारमणक विचार ठमकलैन। विचारमे मोड़ आनैत राधारमण बजला-

“कनी मातारामकेँ फोन लगा कुशल-छेम पुछियौन तँ। तइमे हमर नाम नहि कहबैन। जँ पुछैथ तँ कहबैन जे ओ अखन दोसर काजमे लगल छैथ। जँ ई कहबैन जे ओ नइ छैथ आ तइ बीचमे जँ उकासी-तुकासी हएत

तँ ओ पुछबे करती।”

राधारमणक बात सुवासिनी बुझि गेली। सएह करैक विचारसँ फोन लगा माएकेँ पुछली-

“माए, हम सुवासिनी बजै छी।”

माए-

“बुच्ची सुवासिनी?”

सुवासिनी-

“माए, कनै सन मने किए बजै छेँ?”

माए-

“की कहबौ बुच्ची! दैवक डाँग तेहेन लागल जे विधबा भेलौं। घर भरि रहनिहारिसँ बाहर धरि वौएनिहारि, मुदा समाजो आ बेटोक जे छिछा-बिछा देखै छी, तइसँ बुझि पड़ैए जे जाबे जीब, ताबे अहिना पहाड़तर पड़ल दबाइते रहब।”

ओना, सुवासिनीसँ कम पढ़ल-लिखल माए छथिन, मुदा जिनगीक दौड़मे एतेक समझ तँ बनियेँ गेलैन जे जिनगीक तीत-मीठ बुझए लगली। जे सुवासिनीमे अखन नहि आएल छैन। मुदा राधारमण सासुक सभ बेथा-कथा नीक जकाँ बुझि रहल छला तँए बजैसँ परहेज सेहो केनहि छला।



शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020

सातम पड़ाव

उड़ीसा राज्यक बीच राधारमणकेँ दस बर्ख भऽ गेलैन। पहिल बहाली भुवनेश्वरक पुरीमे भेल छेलैन, भुवनेश्वरसँ बालेश्वर आ पछाइत फुलवनीमे अखन पदस्थापित छैथ।

छअ बजेक समय। ओना, माघमे छअ बजे साँझ भऽ जाइए आ जेठमे दिने रहैए मुदा से नहि, अखुनका समयमे सुर्यास्त तँ भऽ गेल छल मुदा रोशनी ओहिना प्रकाशित छल जेना सूर्य उगलापर रहैए...। राधारमण अपन दुनू पएरकेँ ओसारक पीलर लगा कुरसीपर ओङ्ठ कऽ बैसल उड़ीसाक विषयमे सोचि रहल छला। मनमे रंग-बिरंगक विचार सभ उठि रहल छेलैन। उठैक कारण छेलैन जे जखन भुवनेश्वरक पुरीमे छला तखन समुद्रक संग जगरनाथ बाबाक स्थानसँ लऽ कऽ कोणार्कक सूर्यमन्दिरक संग समुद्रक कातमे गारल कबीरक खन्ती सेहो देखि चुकल छला, पछाइत वालेश्वरमे अगम-अथाह समुद्र सेहो देखि चुकल छला आ अखन फुलवनीमे बुद्धदेवक कर्मभूमि सेहो देखि रहल छैथ। तहीकाल सुवासिनी लगमे आबि दोसर कुरसीकेँ कनी सरका बैसैत बजली-

“दस बरख भऽ गेल मुदा एठुनका बोली-भाषा एठुनका लोक जकाँति धुर-झाड़ बाजि नहि होइए।”

सुवासिनीक बात सुनि राधारमणक मनमे खौंझ उठलैन मुदा खौंझकेँ दबबैत पत्नीक विचारकेँ टाड़ैक परियास करैत बजला-

“अहाँ डेरामे रहै छी, छोट आँट-पेट अछि तखन ऐठामक लोक जकाँ बजैक सिहन्ता करै छी। हम जे भरि दिन ओही समाजक बीच रहै छी से तँ नीक जकाँ बजले ने होइए, तेकर हमरा सिहन्ते ने अछि आ अहाँकेँ एहेन सिहन्ता किए होइए।”

अपना जनैत राधारमण सुवासिनीक बातकेँ बहटाड़ैक कोशिश केलैन। किए तँ मन किछु सोचै-विचारैक बनल छेलैन। मुदा सुवासिनीक

मन गप-सप्प करैक बनल छेलैन। तहूमे पति-पत्नीक बीचक बात। कोनो कि दुनूमे सँ कियो प्रतिबन्धित थोड़े छैथ जे कोनो बात बजैक आकि कोनो विचार करैक रोक रहितैन।

नहलापर दहला फेकैत सुवासिनी पुन: दोहरबैत बजली-

"अपना दुनू गोरेसँ नीक सुचिता बजैए।"

ओना, राधारमण बुझि रहल छला जे सुचिताक अखन बाल मन अछि तहूमे हाइ-स्कूलसँ निकैल कौलेजमे सेहो गेल अछि। एक तँ कौलेजक जीवन, दोसर जिनगीक चढ़न्त बेला, केकरा ने मन होइ छै जे हमहूँ बजन्ता बनी। जखन बजन्ता बनए चाहब तखने ने विषयक संग भाषाक मंजन सेहो करए पड़त। जखने से भेल तखने ने मज्जित जकाँ मज्जित भाषा सेहो हएत। तइ अनुकूल सुचिताक बोलीमे सुधार सोभाविक अछि। अपने तँ भरि दिन काजक पाछू बेहाल रहै छी एक्के बातकेँ भरि दिन सुग्गा जकाँ रटन्त धेने रहऽ पड़ैए, तैठाम भाषाक मज्जन करब साधारणक बात छी..! तखन तँ काजो ओही भाषाक माध्यमसँ करै छी तँए काज-जोकर भाषाक ज्ञान तँ अछिए। डेरामे पत्नीक संग मैथिलीमे गप-सप्प करू आकि उड़ियामे...।

विचारकेँ चौपेतैत राधारमण बजला-

"सुचिताकेँ जेते भाषाक खगता छै तेते हमरा थोड़े अछि। अहाँकेँ ते तहूसँ बेसी कम अछि, तखन अनेरे किए बोली-भाषाक विचार करै छी।"

अपना जनैत राधारमण एकाग्र भऽ किछु विचारए चाहै छला मुदा सुवासिनीक गप-सप्पक चाह हिनका चाहकेँ चलैये नहि दइ छेलैन। तैबीच सुवासिनी फेर बजली-

"हमरा ममहर लग एकटा गाम अछि महथौर, मिथिलांचलक मध्य बसल ओइ गामक भाषा उड़िया अछि।"

सुवासिनीक बात राधारमणकेँ सेहो बुझल छैलैन। उड़िया सभ सौंसे गामक सम्पैत हथिया गाममे जमीन्दार सभ छला, हुनके सबहक संग भाषा सेहो आएल, जेकर चलैन सौंसे गाममे अछि। ओना, औझुका अपेक्षा

पहिने जेतेक भाषा मजगूत छल से अखन नहि अछि। जिनको सबहक माता-पिता आ दादा-दादी बजैत रहैथ सेहो सभ आब बेसी मैथिलीए बजै छैथ। तेकर दोसरो कारण भेल, ओ भेल जेना पहिने विवाह-दान सीमित जगहमे छेलैन तेना आब नहि छैन, जइसँ भाषा सुधरबे केलैन अछि।

सुवासिनीक गप-सप्प करैक इच्छा आ अपन अनिच्छा माने गप-सप्प नहि करैक, किछु सोच-विचार करबकैँ व्यक्त नहि करैत विचारेमे मोड़ दैत, मोड़ दइक कारण, सुवासिनीकैँ विचारमे ओझराएब रहैन...।

राधारमण बजला-

“जहिना अहाँ आइ.ए.मे पढ़ैत रही तहिना ने सुचिता सेहो भऽ गेल।
”

ओना, राधारमण जीह दाबि कऽ बजला मुदा घुरछाबला सुतपुतिया भँट्टा जकाँ एकसंग अनेको विचारकैँ समेटि बाजल छला, जइसँ सुवासिनीक मन ओझरा गेलैन। ओझराइक अनेक कारण मनमे उठि गेलैन। पिताजीकैँ दुर्घटनामे मृत्यु भेल रहैन, परिवारमे एकाएक अन्हार पसैर गेल रहए...। मुदा ई बात सुवासिनीक मनमे एबे ने केलैन जे अही अन्हार-इजोतक बीच दुनियोँ चलैए आ अपनो चलै छी आ परिवारो चलैए। गामेक जे संगी सुकेशनी छल, माने लोअर प्राइमरी स्कूलसँ कौलेज धरिक संगी, सुभ्यस्त परिवार, सात लाख नगद गनि पिताजी विवाह केलखिन, हमरा के करैत? दोसर प्रश्न उठि गेलैन, माएकैँ अनुशंसापर नोकरी भऽ गेलैन, तँए ने अखनो तक परिवार ठाढ़ अछि नहि तँ आइ केतए रहितौं?

‘केतए रहितौं’ सुवासिनीक मनमे अबिते पक्षीक एक वंश रहितो फुद्दी जकाँ सुवासिनीक मन फुदैक गेलैन। बजली-

“जँए अहाँ तँए ने हमहूँ एकठाम बैस गप-सप्प करै छी, नहि तँ..!”

‘नहि तँ..!’पर सुवासिनीकैँ रूकिते दुनू हाथो आ मुहोँसँ चरियबैत राधारमण बजला-

“नहि तँ, की माने?”

एकाएक समुद्रक भवजालमे फँसिते भावुक जहिना भावना विहीन बनि जाइए तहिना सुवासिनीकैँ सेहो भेलैन।

तैबीच बिहुसैत हिम्मतलाल पहुँच बाजल-

“भाय साहैब, सम्मलिते गोड़ लगै छी।”

हिम्मतलालक गोड़ लागब सुनि राधारमण थकमकेला। थकमकाइक कारण भेलैन जे जँ अपनो असीरवाद दैत हिम्मतलालकेँ किछु कहिऐ आ पत्नियो किछु असीरवाद दिअ लगलखिन तखन असगरे हिम्मतलाल केमहर-केमहर मुँह घुमा शिरोधार्य करत, तइसँ नीक ने जे पहिने हुनके माने पत्नीएकेँ असीरवाद दिअ दिऐन। समाजोकेँ ते सएह देखै छी जे दीक्षा बँटनिहारक पथार लगले अछि। जे दिन-राति दीक्षे बाँटैए मुदा शिक्षा देनिहार केते छैथ। ओ तँ शिक्षाक स्तरमे अछिए। राधारमणकेँ से सुतरलैन नहि। अपनो परिवार आ हिम्मतोलालक परिवारक बीच जखन सुवासिनी दुनू घाट दिस तकली तखन जेते पवित्र (नीक) हिम्मतलालक परिवार देखि रहल छेली, माने विधवा माएकेँ, तेना अपन नहि देखा रहल छैन, जइसँ हिम्मतलाल लग बजैक अपन मुँह नहि देखि सुवासिनी चुपे रहब नीक बुझलैन। मनो गवाही देलकैन जे भाइये सहाएब लगा ने हमरो हिम्मतलाल गोड़ लगने छल, तोहूमे मुखौटी, जँ पएर छुबि लगने रहैत तँ एकटा बातो होइत, सेहो तँ ठरिये छल। मुहसँ बजैत हिम्मतलाल ओसारपरक एकटा कुरसीकेँ राधारमण लग सरकबैत बैसल।

हिम्मतलालकेँ बैसिते राधारमण बजला-

“बसमे, माने सवारी-गाड़ीमे अखन भीड़ केहेन चलैए?”

हिम्मतलाल बाजल-

“भीड़ की भीड़ जकाँ चलैए। विवाह-मूड़नक तेहेन लगन चलैए, जे अन्हरो-डीठरा उठि जाएत।”

हिम्मतलालक विचार सुनि राधारमण अधखिल्लू हँसी हँसि बजला-

“भने सबहक उद्धार भऽ जाएत।”

बजैक क्रममे राधारमण बाजि गेला, मुदा लगले मन रोकैत कहलकैन, ‘आजुक परिवेशमे उद्धार हएब! कोनो कि हँसी-ठठ्ठा छी। मुदा मुहसँ निकलल वाण तीर-धनुषक वाण थोड़े छी आकि बन्दूकक गोली थोड़े छी जे छुटि गेल ओ घाव करबे करत। मुँहक वाणमे एते तँ गुण

अछिए जे ओकरा तोड़लो जा सकैए, मोड़लो जा सकैए आ छोड़लो तँ जाइये सकैए..!’

मनमे विचार अबैत-अबैत राधारमणक विचारमे ढीलपन एलैन। जइसँ मन बनि गेलैन जे अपन विचारकेँ सुधारि दोहरबैत बाजी। मुदा से भेलैन नहि। नइ होइक कारण भेलैन जे अखन तकक जे जीवन राधारमणक हिम्मतलालक बीच रहलैन, ओइ रूपेँ हिम्मतलाल अपनो विचार आ राधारमणोक विचारकेँ हँसी-मजाकक रूपमे बुझलक। हिम्मतलाल बाजल-

“भाय साहैब, अन्हरो-डीठरा कि आब सस्ता रहल। विवाह बेरमे आन किछु हुअए वा नइ हुअए मुदा मोटर साइकिल चाहबे करी।”

ओना, हिम्मतलालक विचारक नहलापर दहला फेकैक मन राधारमणकेँ भेलैन। भेलैन ई जे केहेन बुड़िवान जकाँ बाजल अछि। मोटर साइकिल तीस हजारसँ ऊपरमे होइए, ओहन चढ़निहार जखन दस हजार बैंकक कर्ज स्वावलम्बनक जिनगी बना परिवार बसा सकैए, तखन गाड़ीक बदला नगदे किए ने लऽ कऽ आरो नमहर स्वावलम्बी बनि जीवन धारण करैए। मुदा अपने मन राधारमणकेँ रोकलकैन जे भाय जखन स्वतंत्र देशक सभ जन स्वतंत्र छी तखन सभ मन सेहो ने स्वतंत्र हएत, आ जखन सभ मन स्वतंत्र हएत तँ अहिना ने सभ धनो आ सभ कर्मोमे स्वतंत्र रूपेँ लगैत रहत। विचारकेँ मोड़ैत राधारमण बजला-

“हिम्मतलाल, बहुत दिनक पछाइत दुनू भाँइ एकठाम बैसलौं हेन।”

शिकारी हिम्मतलाल गैंची माछ जकाँ गैंचियाइत बाजल-

“भाय साहैब, उमरमे अहाँ किछु कम छी मुदा बिसराह हमरासँ बेसी छी।”

हिम्मतलालक बात सुनि राधारमण चौंकला। चौंकैत चारू दिस चकोना भेला जे कोन एहेन काजे आकि विचारे बिसरलौं जे हिम्मतलाल बाजल। अपने जखन भाँजपर राधारमणकेँ नहि चढ़लैन तखन मन कहलकैन जे किए ने राजा भरथरी जकाँ जोगी बनि हिम्मतेलालकेँ पुछिऐ। विचार परिपूर्ण होइते राधारमण बजला- “से की हिम्मत?”

नेयारल बात बजैमे जहिना मन फुहराम होइए तहिना हिम्मतलालक रहबे करइ। बाजल-

"भाय साहैब, दिन आ तारीख थोड़े जीवन छी, जीवन छी ओकर क्रिया। से तँ बीचमे कोनो भेबे ने कएल। तहूमे पनरहम दिन तँ भेँट भेले रहौं। अखन एकटा काज अराधि लेलौं, तही अराधक बीचमे एलौं हेन।"

'काजक अराध' सुनि राधारमण सुवासिनीकेँ कहलखिन-

"अहाँ ने गामेक रहलौं आ ने शहरेक भेलौं। पहिने चाह पियाउ, तखन ने गप-सप्प करैमे मनो लागत आ नीको हएत। भोज ने भात, हर-हर गीतसँ काज चलत।"

ओना, हिम्मतलालकेँ चाह पीबैक मन नहि छल किए तँ आठ घन्टाक यात्राक पछाइत बससँ उतैरते बसे स्टेण्डमे चाहो आ बिस्कुटो खा-पीब नेने छल, मुदा राधारमण अपन नाओं लगा पत्नीकेँ आढ़ैत देने छला, तँए बीचमे किछु बाजब माने चाह पीब कि नहि पीबकेँ उचित नहि बुझि हिम्मतलाल चुपे रहल। सुवासिनी चाह बनबए गेली। हिम्मतलालकेँ असगरे देखि राधारमण बजला-

"हिम्मत ऑफिसक की हाल-चाल अछि?"

हिम्मतलाल बाजल-

"भाय साहैब, हाल-चाल की रहत जहिना हाल-बेहाल अछि तहिना चाल सेहो कुचाल भइये गेल अछि।"

'बेहाल आ कुचाल' सुनि राधारमण चौंकला, मुदा तेकरा सम्हारि बजला-

"से की हिम्मत?"

हिम्मतलाल बाजल-

"भाय साहैब, अपना समैयक बात बिसैर जाउ, जे लोककेँ हाथक-हाथ काज होइ छल। आब काजक कागजक पन्नामे माने आवेदनमे अपन नोटक पन्ना नइ लगाएब तँ काज हएत। आब तँ सत्तैर सालसँ ऊपरे देशोकेँ आजाद भेना भेल, आबो जँ सार्वजनिक संस्थाकेँ अपन संस्था बुझि अपने

हाथे काज नहि चलाएब तखन आजादीक फल की भेटल।”

हिम्मतलालक बात सुनि राधारमण मुस्कियेबो करै छला आ मने-मन मसखरी सेहो ताकि रहल छला, किए तँ गप-सप्पमे रस भेटै छेलैन। चपरासी रहितो हिम्मतलाल अधिकारी सभ लग बजैत-बजैत निधोक बजनिहार बनियेँ गेल अछि। भलेँ अधिकारी चपरासी बुझि हिम्मतलालक बातक मोजर दिअए वा नहि दिअए। ओना, हिम्मतलालक अपन मन एते पीठ ठोकबे करै छै जे उचित बात अपना बापोकेँ कहबै। तोहूमे जहिना अपने नोकर छी तहिना ने अधिकारी लोकनि सेहो नोकरे छैथ। तखन बजैमे कोन संकोच। तही बीच सुवासिनी चाह नेने पहुँचली। तीनू गोरे माने राधारमण, हिम्मतलाल आ सुवासिनी चाह पीबिते रहैथ कि सुचिता अपन कोठरीसँ निकैल ओसारपर आबि बाजल-

“हिम्मत चाचा, सुतीक्ष्णा बहीनक की समाचार?”

पहिने माने किछु साल पूर्व, ओना अखनो सार्वजनिक शिक्षण संस्थामे साल भरिक कोर्स होइए, जइसँ साले-साल विद्यार्थी क्लास आगू होइए, तइसँ अलग सेहो पढ़ाइक तरीका बदलबे कएल अछि जइसँ सालेमे दू-तीन-चारि क्लास विद्यार्थी बढ़बे करैए। सुचिता सेहो बारहमे सालमे मैट्रिक पास करि कौलेजमे पढ़ैए। तैसंग सुभ्यस्त जीवन स्तर माने खान-पान, रहन-सहन रहने फुटि कऽ जुआन तँ नहि, मुदा अस्फुटित अवस्थामे सेहो पहुँचिये गेल छल। ग्रामीण परिवेशक संस्कार ‘लजपन’ सेहो सुचितामे दस्तक दइये देने छल, जे विचरित होइत ऐ सीमापर पहुँच गेल छल जे लजपनक वैचारिक रूप केहेन हेबा चाही। ओना, हाइये स्कूलसँ सुचितामे बजैक गुण आबि गेल छल।

हिम्मतलाल बाजल-

“बुच्ची, आठम दिन ओकर विवाह हएत। सभ किछु ठीक-ठाक भऽ गेल।”

हिम्मतलालक मुहसँ सुतीक्ष्णाक विवाह खसिते ठनका जकाँ तँ नहि मुदा सघन बर्खाक बून जकाँ जरूर सबहक मनपर झहरलैन। ओना, सबहक अपन-अपन मन तँए अपन-अपन दशा-दिशा सेहो छैन्हे।

राधारमण मात्र अपन वैवाहिक घटनाटा सँ परिचित छैथ तँए समाजक रूप-रंग नीक जकाँ नहि बुझै छला। माने सुवासिनीक संग राधारमणक विवाह केना भेल आ परिवारमे विग्रहसँ विद्रोह केना उठल, बस तेतबेसँ परिचित। तेकर कारणो स्पष्टे अछि जे राधारमणकेँ कौलेज जीवनमे परिवारक दुरबेवहार, दोबर श्रमिक बना देलकैन। बनाइये टा नहि देलकैन, फलो दैत रहलैन। जइसँ कौलेज जीवनक रिजल्टक संग एके तरपानमे आई.ए.एस. सेहो तरैप गेला। आत्मबलक संग आत्म-शक्ति सेहो दिनानुकूल मजगूत होइते गेलैन। जइसँ आन आई.ए.एस.सँ एते दूरी भइये गेल छैन जे पिताक आक्रोशकेँ राधारमण समन केलैन मुदा दोसराक छाती डोलाइमान रहिते छैन। ओना, अपन विवाहक भोगल घटनाकेँ राधारमण मनसँ उतारि बिसैर जकाँ गेले छैथ, जइसँ ने कहियो ओइ आक्रोश दिस मन बढ़लैन आ ने ओइपर किछु सोचि सकल छला। मुदा आइ हिम्मतलालक बेटीक विवाहक बात सुनि अपनो सुचिता नजैरपर चढ़लैन। तँए गुम्मे रहब नीक बुझि चुपे रहला। मुदा सुवासिनियो आ सुचितोक मनमे अनेको विचार माने अपन जीवनसँ सामाजिक जीवन धरिक, रंग-बिरंगक रूपमे उठए लगलैन।

अपन मलीन होइत विचारकेँ सुवासिनी दबैत, बजली- “कएम बरस सुतीक्ष्णाक छी?”

हिम्मतलालकेँ जीहेपर सुतीक्ष्णाक जन्म दिन छल, लगले माने सुवासिनीक प्रश्नक तुरन्ते उत्तर दैत बाजल-

“मेम सहाएब, ओना छी तँ अठारहम बर्ख मुदा सुचिता जकाँ जुआन नहि भेल अछि।”

सुभ्यस्त परिवारक खान-पानक संग रहन-सहन अनुकूल रहने सुचिताकेँ शारीरिक श्रम कम छल जइसँ शरीरक कद फौदा जुआनीक रंग जइ रूपेँ चढ़ौने छल तइ रूपेँ सुतीक्ष्णाक शरीरक कद नहि बनने ओहन रंग नहियेँ चढ़ल छल। एक तँ एकहरा देह तैपर शारीरिक श्रमक अनुकूल परिवारक स्तर–खान-पान, रहन-सहन–नहि रहने सुचिताक आगू सुतीक्ष्णा बचहन जकाँ छेलैहे। सुवासिनीक पुछैक कारण मनमे छेलैन जे बारहम-तेरहम बर्खक सुचिता जखन एहेन अछि, तखन सुतीक्ष्णाक उम्र केते

हएत। पुरना जमानाक लोक कहै छला- 'अष्टवर्षे भवेत गौरी' मुदा आब तँ से नहि रहल। अठारहम बर्खक पछाइत बेटीक विवाह करैक अधिकार माता-पिताकेँ अछि।

कौलेजमे पढ़ैत सुचिताक नजैर विवाह पद्धति दिस बढ़ए लगल जइसँ एकसंग अनेको प्रश्न सामनेमे उठि कऽ ठाढ़ हुअ लगलै। पहिल, माइक इतिहास माने विवाह सम्बन्धी बुझल, किए तँ माइये मुहेँ सुचिता सुनि चुकल छल। दोसर कौलेजमे ओहन घटना सेहो देखि चुकल छल जे बी.ए.क लड़को आ लड़कियो, पढ़ाइ छोड़ि, गाम-घर छोड़ि कोलकातामे जा कऽ काली मन्दिरमे बिआहो केलक आ एक्के कारखनामे दुनू ऑफिसक किरानीक रूपमे नोकरियो करैए आ गाममे दुनूक माता-पिताक बीच गारि-गरौबलि, मारि-पीटक संग मुकदमाबाजी सेहो चलि रहल अछि आ लड़का पक्षक जहलो यात्रा भइये गेल अछि।

सुचिताक मन धारक बहैत धारा जकाँ आगू बढ़ल। आगू बढ़िते अपन परिचित, परिचित ऐ मानेमे जे सुचिताक देहमे कोनो रोग भेने एकटा डॉक्टरनी लग जाइए जैठाम गप-सप्पक क्रममे जानकारी भेलै जे एम.बी.बी.एस. पास लड़कीक विवाह जँ एम.बी.बी.एस. पास लड़कासँ कमसँ करब समाजमे हँसरात हएत। मर्द भलेँ महान वैज्ञानिके वा महान विचारके किए ने होथि मुदा विवाह साधारणो पढ़ल-लिखल वा नहियोँ पढ़ल-लिखल कन्याक संग हँसी-खुशीसँ मनौले जाइए। अपन हँसारत बुझि ओइ एम.बी.बी.एस.क विवाह पिता जखन करए लगला तखन अपन बेटीक पढ़ाइक खर्च मनमे नाचि उठलैन। मुदा उपाय की? तीन बीघा अपन बपौती सम्पैत बेचि बेटीक विवाह केलैन। यएह छी अपन समाजक उच्च पढ़ल-लिखल परिवारक आचार-विचार। सुचिताक मनमे विद्रोहक लहैर जगल। मुदा माता-पिताकेँ सोझामे बैसल देखि मनकेँ थतमारि चुपे रहल। राधारमण बजला-

"हिम्मत, केहेन परिवारमे बेटीक विवाह कऽ रहल छह?"

हिम्मतलाल मनोनुकूल परिवारमे बेटीक विवाह ठीक केने छल जइसँ मनमे खुशी रहबे करइ। बाजल- "भाय साहैब, जहिना अपन परिवार अछि तहिना ओहो परिवार अछि।"

जातीय कुल-गोत्रक मिलान सेहो एक स्तरक भेने एकरंग मानल जाइते अछि, भलेँ ओइ बीच आर्थिक वा शैक्षणिक दूरी कोसो मील किए ने हुअए। यएह विचार राधारमणक मनमे जागि गेलैन जइसँ पुन: दोहरबैत बजला- “की अपना सन परिवार?”

राधारमणक विचारकेँ सोझ रखैत हिम्मतलाल बाजल-

“भाय साहैब, जहिना अपन बेटी बी.ए.मे पढ़ैए तहिना लड़का सेहो बी.ए. पास कऽ एम.ए.मे नाओं लिखौलक अछि।”

आगू बजैक विचार हिम्मतलालक पेटेमे छल कि बिच्चेमे राधारमण बजला-

“वाह..!”

राधारमणक ‘वाह’ सुनि हिम्मतलालक मनमे अपन काजक प्रति आरो बिसवास जगल। बिसवास जगिते बिहुसैत बाजल-

“भाय साहैब, हमरे जकाँ लड़काक पिता सेहो अनुमण्डल कार्यालयमे चपरासीक नोकरी करै छैथ, दुनू गोरेक दरमाहा सेहो एकरंगाहे अछि।”

अपना जनैत हिम्मतलाल दुनू परिवारक अधिक-सँ-अधिक समरूपता देखबए चाहै छल मुदा राधारमणक पारखी नजैर दोसर दिस मुड़ि गेल छेलैन। बजला-

“तोहर परिवार केतेटा छह आ हुनकर परिवार केतेटा छैन?”

राधारमणक भीतरिया समझ छेलैन जे बेटो-बेटी तँ परिवारक भारी समस्या छीहे। आजुक परिवेश एहेन बनिर्यें गेल अछि माने दान-दहेजक, जे इमानदार किरानी-चपरासीक कोन बात जे इमानदार अफसरो जँ चारियोटा बेटी परिवारमे देखै छैथ तँ अपन जिनगियो भरिक दरमाहासँ ऊपरे खर्च मनमे चढ़ि जाइ छैन, तैठाम जिनगी भरि अपन परिवार चलब पहाड़ोक रस्तासँ बीहड़-दुर्गम भइये जाइए। तहिना जँ जेरगर बेटा रहल माने चारि- पाँच, छह-सात तँ चाहे खेत-पथार हुअ आ कि अपन नोकरीक दरमाहाक संग पेंशन हुअए, बन्दर-बाँटमे पड़ने परिवार चलबकेँ दुभर-दुर्गम सेहो बनैबते अछि। अपन मनक उठैत विचारधाराक बेगकेँ ऋृषि-

मुनि जकाँ राधारमण अपना माथक केशक जटामे समेटि लेलैन, किए तँ अखन सोझामे हिम्मतलाल बेटी-विवाहक काजे आएल अछि। लोकक स्थिति जे रहौ मुदा परिवारक जीवनक जे ढाँचा अछि ओकरा पुरबैत चलबे ने जीवन भेल। आकि माया जकाँ पैछला पुरुखाक आ मोह जकाँ ऐगला पीढ़ीक एक्कैसम वंशक धिया-पुता केना रहत की खाए-पीअब तेकरो पुरबैक भार हमरे अछि।

जइ स्तरसँ राधारमण बाजल छला, तइसँ ऊपरेक–ऊपर माने भेल निम्न–स्तरमे हिम्मतलालक विचारधारा अछि। अपन धाराक अनुकूल हिम्मतलाल बाजल-

"भाय साहैब, अपन परिवार तँ बुझल-गमल अछि मुदा तेना भऽ कऽ हुनकर माने जिनकासँ कुटुमैती हएत, परिवार नहि बुझल अछि।"

विचारकेँ आगू बढ़बैत राधारमण बजला-

"एते काल जे गप-सप्प भेल, ओ कुशल-क्षेममे गेल। दूरक सफरसँ एलह अछि, तहूमे काजे एलह अछि, तँए थोड़ेकाल निसचिन्त होइमे लगबे करतह। विवाह काज नहि परिवारक यज्ञ छी, तँए असथिरसँ गहन विचार करैक अछि।"

राधारमणक विचार हिम्मतलाल बुझि गेल। अपन जान हल्लुक बनबै पाछू लगबैत बाजल-

"भाय साहैब, अनाड़ी-धुनारी ले एते दूरक बसक सफर जनमारा होइए। कोनो कर्म बाँकी नहि रहल। तेहेन भीर बसमे छल जे बुझि पड़ए जान निकैल जाएत।"

रातिक दस बजे। खेला-पीला पछाइत राधारमण हिम्मतलालकेँ कहलखिन-

"हिम्मत, जइ काजे एलह, एक हरफी पहिने बाजि जाह।"

कचहरिया पीच्छड़ लोक हिम्मतलाल अछिए। बाजल- "भाय साहैब, अपन बात ने एकहरफी बाजि जाएब, मुदा माइयक समाद भिन्न छैन, घरवालीक फुट अछि, सुतीक्ष्णाक अलगे अछि। तँए एकहरफी केना बाजि सकै छी।"

जहिना कोनो पोथीक विचारकेँ पोथीक शीर्षकक रूपमे राखल जाइए जइसँ पढ़निहारक कान आँखिसँ देखिये कऽ ठाढ़ भऽ जाइए तहिना सुवासिनियोक आ सुचितोक कान ठाढ़ भेल। कानो किए ने ठाढ़ होएत, जखन दुनूक बीच पारिवारिक सम्बन्ध अछि तखन परिवारक सभक सम्बन्ध ने अपन-अपन भेल।

राधारमण बजला- "चाहे 'नख-शिख' वर्णन लिखह आकि 'शिख-नख'क वर्णन लिखह, बात बरबरिये भेल, दुनू लिखिनिहार श्रेष्ठ सृष्टिकर्ता भेबे केला। जहिना तोहर विचार हुअ तहिना बाजह।"

हिम्मतलाल बाजल-

"भाय साहैब, जहिना अपना मनमे अछि तहिना माइयोक इच्छा छै, जे अपने विवाहसँ चारि दिन पहिने सभ परिवार आबि कऽ मिथिलाक जे विवाहक बेवहार अछि ओइ बेवहारे अपन बेटीक विवाह करब। से तँ अपने सभ परिवार रहने ने सम्भव भऽ सकैए।"

ओना, चारि दिनक समय आ मिथिलाक बेवहार, केना सम्भव हएत। राधारमणक मनमे नाचि उठलैन। कहू जे चूड़ाक धान पहिने ताड़ल जाइए, पछाइत भाड़ल जाइए, तखन सुखौल जाइए पछाइत ने कुटोल जाइए, से केना चारि दिनमे सम्भव अछि। अदौरी कि बर-बरी बनबैमे कम मेठैन अछि से चारि दिनमे केना हएत। तहूमे अदौरीकेँ सुखैयेमे समयक हिसाबसँ दुइयो दिन लगैए आ पाँचो दिन नइ लगैए सेहो बात नहियेँ अछि। तैसंग घर-दुआरक लिखिया-पढ़िया माने चित्रकारीसँ शुभ सन्देश लिखै धरि, सेहो अछि। तहूमे आन काज छी नहि जे एको-दुइयोटा चित्रकारीसँ काज चलि सकैए। विवाह सन यज्ञ छी। कोहबरसँ राज-सिंहासन तकक चित्रकारी करैक काज अछि। मुदा मनकेँ मिथिलाक दृश्य हटा राधारमण मन मिथिलाक दिशा दिस मोड़ैत विचार करए लगला। मिथिलाक दृश्य की? वएह ने जे जे कोनो काज, चाहे साधारण जीवनसँ जुड़ल हुअए आ उच्चकोटिक यज्ञ स्वरूप हुअए, जेते मनसँ मथन-मथि करैत करब ओते ओ नीकसँ नीकतम होइते जाइए। यएह छी मिथिलाक दर्शनक दर्पण। जेना कोनो भोज्य वस्तु अछि, ओकर उपयोग साधारणो ढंगसँ होइए आ अधिक-सँ-अधिक नीक बना सेहो नइ भऽ सकैए, ईहो बात नहियेँ अछि।

तहिना, आनो-आन जीवनसँ जुड़ल जे काज अछि तहूमे नीक हेबे करत। मुदा संजोग रहल जे हिम्मतलाल अपन विचारकेँ, सन्मुख धार जहिना अपन धाराकेँ प्रवाहित रखितो धारक अगल-बगलमे मुँह बनबैत दोसरो धाराक धार बना प्रवाहित करैत आगू बढ़ैए तहिना हिम्मतलाल अपन विचारकेँ यथास्थितिमे समेटि बाजल- "भाय साहैब, की कहब। बुढ़ियाक रंग-ढंग दोसरे छैन।"

हिम्मतलालक माइक 'रंग-ढंग दोसरे छैन' सुनि जिज्ञासा करैत राधारमण बजला-

"की दोसरे?"

हिम्मतलाल बाजल- "भाय साहैब, भोर होइते चरियाबए लगैए जे राधारमण बौआसँ भेँट भेना बहूदिन भऽ गेल। वेचारे केना रहैत हेता केना नहि से कनी बुझब। ओना, मोबाइलसँ गप-सप्प होइते छैन, मुदा तइसँ मन थोड़े भरै छैन।"

हिम्मतलालक मुहसँ माइयक बात सुनि राधारमणक मन जहिना निछोह दौड़ैत अपन माए लग पहुँचलैन तहिना सुवासिनीक मन सेहो अपना माएपर पहुँचलैन। तैसंग सुचिताक मन सेहो अपन माइयक जीवनक ओइ घटनापर पहुँचल, जखन राधारमण विवाह करैमे अपन परिवारसँ विद्रोह केलैन आ अखनो वागी बनल छथिए। देखू हे सखि दुनियाँक रीत 'एक घर कानै एक घर गीत..।' कियो अपन जिनगीक कमाइ लुटाइत देखि कनैए तँ कियो ओही लूटलकेँ भोगि हँसबो करिते अछि। समाजो तँ समाज छीहे। अट्ठारह बर्खक पछाति लड़कीक आ तइसँ ऊपरे उमेरक लड़काक विवाह करब तँ तीन-चौथाइ समाज मानि चलैनमे आनि नेने छैथ मुदा अपन स्वेच्छासँ, वयस्क भेला पछातियो, लड़का-लड़कीक विवाहमे अपन विचारक कोनो मोल अछिए नहि। गाए-महींस जकाँ खरीद-बिक्री भऽ रहल अछि आ सभ मुँह देखि रहल अछिए। तहूमे युवा वर्गक जे खास समस्या छी तइ दिस कियो तकनिहार नहि। वाह रे आजुक पढ़ल-लिखल समाजक नव पीढ़ी। विवाह परिवारक ओहन महान कृत्त छी जे वैचारिक रूपमे फूलसँ हल्लुको, फलसँ मीठो अछि आ असान जीवनो बना सकैए, से कियो देखिये ने पेब रहल अछि।

ओना, सुचिताक चेहरा देखि राधारमणक मन सेहो व्यग्र भऽ रहल छेलैन, मुदा आलमारीमे पोथी रखनिहारक मनमे एते आशा तँ बनले रहैए जे समय एलापर वा लगलापर निकालि देखि लेब। तँए राधारमण अपन विचारकेँ प्रस्फुटित होइसँ रोकने छला आ मने-मन आँकि रहल छला जे हिम्मतलाल अपन मान-मरजादा रखैत अपन बेटीक विवाह ठीक केलक अछि। मुदा तैयो मनमे एकटा विचार घुरियाइये रहल छेलैन जे अनमेल विवाहकेँ सममेल केना बनौल जाए। अनमेलक कारण अखन नहि, किए तँ जे बाधा अनमेल ठाढ़ केने अछि ओ समाजकेँ विग्रह करबेकेँ नीक बुझैए...।

राधारमणक मनमे घुरिया ईहो रहल छैन जे जखने लड़का-लड़कीक जीवनक मिलान, माने जहिना दूटा धार पाछूसँ बहैत आबि रहल अछि, ओइ दुनूक मिलान एक स्थानपर हएब अछि तैठाम दुनू प्रवाह माने पैछला जिनगीक प्रवाह आ सम्मिलित रूपमे एक दिशामे ऐगला जिनगी केना प्रवाहित हएत, एकरा बुझब तँ अछिए। मुदा अपनाकेँ बैसारक बीच, श्रेष्ठ बुझि अपन कोनो विचार बेठौर उपयोग नहि करए चाहि रहल छला। सुचिताक मुँहक रूखि देखि जहिना राधारमणक मन मथन करैत रहैन तहिना हिम्मतलालक मनमे सेहो उठि रहल छल, मुदा तेकरा दबा नहि हिम्मतलाल बाजल-

“बौआ सुचित, तोरा संगे नेने अबैले सुतीक्ष्णा कहलक अछि, से...।”

ओना, सुचिताक मन दोसर दिस माने समाजक रीति-रिवाज दिस औना रहल छेलै मुदा हिम्मतलालक बात सुनि एकाएक मनकेँ जे सुचिता मोड़ि रहल छल ओ समुचित ढंगसँ नहि मुड़ि सकलै जइसँ मुहसँ निकललै-

“चाचाजी, हमरो किछु..?”

‘हमरो किछु’ सुनि हिम्मतलाल बाजल-

“एना किए मुड़ी छोपि तम्मा जकाँ सुचित बजै छह, खुलि कऽ बाजह। अखन अपने सभ ने एकठाम बैसल छी, कियो आन थोड़े अछि जे

बजने अपने वा परिवारेक तौहीन हएत। परिवार छी, परिवारक सभ जनक विचारक समावेश परिवारमे नहि होइत रहत तँ एक ने एक दिन गुड़ घाँव जकाँ सड़ि कऽ फुटबे करत, जइसँ नोकसान हेबे करत।”

ओना, सुचिताक मन तमतमाएल रहबे करै मुदा मनकेँ केना काबू कएल जाए तेकरो अभ्यास थोड़-थाड़ भइये गेल छेलइ। ओना, काबू करैक जगह अलग-अलग अछि, विचारकेँ विचरण भाव सुधारि, अभावक पूर्ति भऽ सकैए, मुदा क्रियाक दौड़मे तँ किछु ने किछु नोकसान, माने तमतमाएल मने काज केने, ओकर क्रियागत रूप जे अछि तेकर किछु-ने-किछु अंग बनियेँ गेल रहैए।

ओना, रसे-रसे, सुचिताक मनमे जे तमतमी छल, ओ धीरे-धीरे थीर भऽ रहल छल। थीर होइक कारण भेल जे हिम्मतलालक मुहसँ ‘एक परिवार’ सुनि चुकल छल। जखन परिवार छी, परिवारमे बच्चासँ वृद्ध धरि रहै छैथ, तखन सभ कियो बैस जँ कोनो विचार परिवारक करैक रहत तैठाम प्रजातंत्र जकाँ अनुभवी आ अनाड़ीक विचारक महत थोड़े एकरंग हएत। एक गोटा नमहर जिनगी बीता दुनियाँकेँ देखियो चुकल छैथ आ भोगियो चुकल छथिए, आ दोसर माने बच्चा, कम देखने-भोगने अछि, तैठाम तँ अपने ने विचार करए पड़ैए जे कोन विचारक केहेन महत अछि। एहने विचार सुचिताक मनक तमतमीकेँ नम-नमी दिस बढ़ौलक जइसँ पिताक विचार बुझैक जिज्ञासा मनमे जगि गेलइ। नम होइत सुचिता बाजल-

“चाचाजी, अहाँ समाजमे बेटी-विदागरीक की रीति अछि?”

ओना, सुचिता अपन मैथिल रीतिकेँ नजैरमे रखि बाजल छल, किए तँ अपना ऐठामक पुरान चलैन छल विवाह आ दुरागमनक दुनू प्रक्रिया। अखनो किछु अंशमे अछिए, जे विवाह भेला पछातियो कन्या नैहरमे माने माता-पिताक ऐठाम रहै छैथ आ लड़का अपनो गाम आ सासुरोमे रहि सकैए। खाएर जे अछि, समयक हिसाबे जेते उपयोगी छल, ओते आजुक परिवेशमे नहियेँ रहल। समाजो बदलल अछि, व्यस्तता एते बढ़ि गेल अछि जे जइ विवाहक बरियाती तीन दिन रहि विवाह पद्धतिक पूर्ति करै छला, से अखन ओहन भऽ गेल अछि जे तीनदिना एकदिना भेल आ एकदिना

खाइ भरि धरिक भेल जा रहल अछि।

ओना, हिम्मतलाल ऐ बातकेँ बुझैत जे सुचिताक मन अखन साठियो हजारसँ बेसीक रफ्तारमे दौड़ैत हेतइ, हमरा-सभ जकाँ बन्होटा बरद जकाँ परिवारक कौल्हु नहियेँ भेल हेन मुदा जखन चाचा कहैए आ अपनो बी.ए. पास केनहि छी तखन तँ ओहन जवाब दिअ पड़त ने जे समतूल होइ। हिम्मतलाल बाजल- "बाउ, समाजोक जाल महजाल बनि विकराल अछि, तँए एक बेवहार चलब कठिन अछिए। ओ तँ मनुक्खक जिनगीक स्तरक हिसाबसँ बदैलते अछि मुदा किछु एहनो तँ अछिए जे रूढ़ बनि रूढ़िया रहले अछि। तँए किछु...।"

हिम्मतलालक विचार सुनि राधारमण, एतेकाल जे कनडेरिये नजैर देखियो रहल छला आ कनडेरिये काने सुनियो रहल छला तेकरा बदैल सोझ केलैन। तैबीच सुचिताक नजैर सेहो पितापर पड़ल। ओना, जखन राधारमण सोझ नजैर बना आगू तकलैन तँ पत्नी सुवासिनी, बेटी सुचिता आ मित्रवत हिम्मतलालकेँ सेहो देखलैन। तीन मुहाँनी रस्ता जकाँ लोकक बैसारक बीच राधारमण अपनाकेँ पेलैन, तँए मनमे एलैन जे किए ने विचारक ओहन प्रवाह प्रवाहित करी जे जहिना कोनो धारक बाढ़िक पानि खेत-पथार, पोखैर-इनारक पानिकेँ संग केने बाढ़िक रूपमे बनबैत आगू बढ़ैए तहिना सबहक विचारक बाढ़िमे होइ। विचार व्यक्त करैक चौरस-समतल भूमि देखि राधारमण बजला- "अखन बेसी पाछूक विचार दिस जाइ-के नहि अछि, जँ एतबो विचार सभक बीच समगम भऽ जाए, जेते गोरेक बीचक जीवनक अछि, मुदा से छुछुन बुझि पड़ैए।

'छुछुन' शब्दक माने हिम्मतलाल नीक जकाँ नहि बुझि पेलक, सुवासिनी देहक छुछुन आँगी जकाँ 'छुछुन' शब्दक माने बुझली, मुदा सुचिता राधारमणक विचरण विचारक भावक शब्द रूपमे बुझि गेल। ओना, शब्द भावसँ जहिना मनक एक कोण बिहुसल तहिना दोसर कोण विह्वल सेहो भेल। तइसँ भावुक भऽ सुचिता बाजल- "की छुछुन, पिताजी?"

सुचिताक प्रश्न सुनि जेना हिम्मतलाल अकबकाएल तेना सुवासिनी तँ नहि अकबकेली मुदा चौंकली जरूर, जे की बुझि सुचिता एहेन प्रश्न

उठौलक? ओना, राधारमण नजैर उठा-उठा हिम्मतोलालपर दैथ आ सुवासिनीयोँपर, किए तँ हिनका मनमे उठि रहल छेलैन जे जाबे कियो अपन विचार अपना मुहसँ नहि निकालत ताबे ओकर पेटक बात प्रवाहित केना हएत। मुदा तइसँ पहिलुके अवस्थामे सुवासिनियोक आ हिम्मतोलालक मन ओझराएल छल, जइसँ दुनूक मन अपन ओझरी सोझरबैमे लागल छेलइ। तँए विचरित मनकेँ मनक मोनियेँमे उगैत-डुमैत देखि राधारमणक मनमे उठलैन जे नीक हएत, वैवाहिक जीवनक महत बुझैले विवाह की छी, पहिने तइ दिस बढ़ी। बजला- “बाउ सुचित, आमक सुआद केहेन होइए, ओइमे पक्कल गुद्दा वा रसक की सुआद आ गुण अछि, डमहाएल-अधपक्कुक की अछि आ काँचक की अछि। काँचोमे खिच्चो काँच अछि आ अधखिच्चो अछि आ जुआएलो तँ अछिए। तँए नीक हएत जे जहिना तोरामे बुझैक जे जिज्ञासा छह, ओइ जिज्ञासा पाछू कोनो विचार विचरण मनमे करैए, जइ आधारपर प्रश्न उठैए तँए भाँग-बथुआ जे बुझैत हुअ से बाजह। हमरा लग नइ बजबह तँ दुनियाँक बीच केना बाजि पेबह।”

एक तँ नवसीन सुचिता, तहूमे कौलेजक संगी सबहक बीच बजन्ता सुचिता, माता-पिताक बीच सुचिता, एक परिवारसँ दोसर परिवारक बीच सुचिता, उमेरक हिसाबसँ सभसँ कम सुचिता, बाजल-

“बाबूजी, एक तँ हमर उमेरे की अछि जे केते देखलौं हेन, मुदा जएह देखलौं हेन तइमे किछु-किछु समरूपतो अछि आ किछु-किछु विसमतो तँ अछिए।”

सुचिताक विचार सुनि राधारमण पत्नी दिस देखए लगला जे परिवारमे बच्चासँ ऊपर माए आ माएसँ ऊपर ने पिता होइ छैथ, जँ से नहि हएत तँ परिवारमे खाधि बनैक सम्भावना बनियेँ जाइए। एहनो तँ सम्भव अछिए जे पिताक विचारक पछाइत माए अपन विपरीत विचार दैथ, तखन? दुनियाँक सभ कथूक दू रूप अछि एक अन्हार पक्ष अछि दोसर इजोत पक्ष। अन्हारो इजोत बनैए आ इजोतो अन्हार नइ बनैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए...। राधारमण बजला-

“बाउ सुचित, पद्धतिक हिसाबसँ विवाह अपन-अपन सुविधानुकूल

परिवेशक हिसाबे चलिये रहल अछि। तही बीच नीक-बेजाए सेहो अछिए। मुदा बेवहारिक रूपमे जे विषमताक विकरालता माने जीवनक बीच बाधाक खाधि, बनि रहल अछि, ओ तँ जेकर समस्या छिऐ, मूल कर्ता वएह भेल। तँए ओकरा ई बात बुझैक छै जे जखन हम अठारह बर्खसँ ऊपर भऽ गेलौं तखन अपन जिनगी केना चलत सेहो बुझैक अवगैत तँ अपने ने बनबए पड़त।”

पिताक विचार सुनि सुचिता चकोना होइत चारू दिस उनैट-उनैट देखैत बाजल-

“अगर, लड़की अपन जीवनक निर्णय स्वयं करै तँ पिताकेँ कोनो कलेश हेबा चाही?”

राधारमण-

“नहि! नहि हेबा चाही। मुदा अनुभवी माता-पिताक बिसवासक संग जँ सम्बन्ध बनए। ऐसँ आगू अखन नहि। किए तँ हिम्मतलाल सेहो यज्ञक दौड़मे आएल अछि अपनो ने सुतबोक अछि जे काल्हि दिनक ड्यूटी सेहो करए पड़त।”

बसक यात्राक थाकल हिम्मतलाल रहबे करए तँए कखनो भकुआएलमे ‘हूँ’ तँ बाजि दिअए मुदा सुनए नहि। मुदा सुवासिनी अपन माइक संग अपन सुचिताकेँ एकधारा धारमे देखि रहल छेली।

❑

शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020

❑❑❑

❑❑

❑

Notes